मेरी प्रिय पुस्तकें

Translated from English: Books I Have Loved.

अनुक्रम

1. सत्र-01 2
2. सत्र-02 6
3. सत्र-03 10
4. सत्र-04 17
5. सत्र-05 23
6. सत्र-06 30
7. सत्र-07 39
8. सत्र-08 45
9. सत्र-09 54
10. सत्र-10 60
11. सत्र-11 68
12. सत्र-12 74
13. सत्र-13 83
14. सत्र-14 89
15. सत्र-15 96
16. सत्र-16 103

सत्र-01

अतिथि, आतिथेय, श्वेत गुलदाउदी... यही वे क्षण हैं, श्वेत गुलाबों जैसे, उस समय कोई न बोले:

न तो अतिथि,

न ही आतिथेय...

केवल मौन।

लेकिन मौन अपने ही ढंग से बोलता है, आनंद का, शांति का, सौंदर्य का और आशीषों का अपना ही गीत गाता है; अन्यथा न तो कभी कोई 'ताओ तेह किंग' घटित होती और न ही कोई 'सरमन ऑन दि माउंट।' इन्हें मैं वास्तविक काव्य मानता हूं जब कि इन्हें किसी काव्यात्मक ढंग से संकलित नहीं किया गया है। ये अजनबी हैं। इन्हें बाहर रखा गया है। एक तरह से यह सच भी है: इनका किसी रीति, किसी नियम, किसी मापदंड से कुछ लेना-देना नहीं है; ये उन सबके पार हैं, इसलिए इन्हें एक किनारे कर दिया गया है।

फ्योदोर दोस्तोवस्की की 'ब्रदर्स कर्माजोव' के कुछ अंश शुद्ध काव्य हैं, और ऐसे ही कुछ अंश पागल आदमी फ्रेड्रिक नीत्शे की पुस्तक 'दस स्पेक जरथुस्त्रा' में भी हैं। यदि फ्रेड्रिक नीत्शे ने 'दस स्पेक जरथुस्त्रा' के अतिरिक्त और कुछ न भी लिखा होता तो भी वह मनुष्यता की गहरी और अर्थपूर्ण सेवा कर गया होता–इससे अधिक की किसी मनुष्य से आशा नहीं की जा सकती–क्योंकि जरथुस्त्र को लगभग भुला ही दिया गया था। यह नीत्शे ही था जो उसे वापस लाया, जिसने उसे फिर से जन्म दिया, पुनरुज्जीवित कर दिया। 'दस स्पेक जरथुस्त्रा' भविष्य की बाइबिल होने जा रही है।

ऐसा कहा जाता है कि जरथुस्त्र जब पैदा हुआ तो वह हंसा। एक नवजात शिशु की हंसते हुए कल्पना करना कठिन है। मुस्कुराना ठीक है, लेकिन हंसना? आश्चर्य होता है कि किस बात पर? क्योंकि हंसने के लिए कोई संदर्भ तो चाहिए। शिशु जरथुस्त्र किस बात पर हंस रहा था?–ब्रह्मांडीय मजाक पर, उस मजाक पर जो यह पूरा अस्तित्व है।

हां, अपने नोट्स में लिखो 'ब्रह्मांडीय मजाक' और उसे रेखांकित कर लो। ठीक। मैं तुम्हें रेखांकित करते हुए सुन भी सकता हूं। सुंदर। देखते हो, मेरी श्रवणशक्ति कितनी अच्छी है? जब मैं चाहूं तो किसी चित्र के रेखांकित होने की आवाज को, एक पत्ते के गिरने की आवाज को भी सुन सकता हूं। जब मैं चाहूं तो अंधकार में, गहन अंधकार में भी देख सकता हूं। लेकिन जब मैं नहीं सुनना चाहता, तो मैं न सुनने का अभिनय करता हूं, बस इसलिए कि तुम्हें अच्छा लगे कि सब ठीक-ठाक चल रहा है।

जरथुस्त्र पैदा हुआ हंसता हुआ! और वह तो केवल शुरुआत थी। वह अपने जीवन भर हंसा। उसका पूरा जीवन ही एक हास्य था। फिर भी लोग उसे भूल गए हैं। अंग्रेजों ने तो उसका नाम भी बदल दिया है, वे उसे 'जोरोस्टर' कहते हैं। कैसा भयानक! 'जरथुस्त्र' में गुलाब की पांखुरी जैसी एक सौम्यता है, और 'जोरोस्टर' ऐसे लगता है जैसे कोई बड़ी यांत्रिक दुर्घटना। जरथुस्त्र जरूर अपना नाम जोरोस्टर में बदले जाने पर हंस रहा होगा। लेकिन फ्रेड्रिक नीत्शे से पहले उसे भुला दिया गया था। ऐसा होना ही था।

मुसलमानों ने जरथुस्त्र के सभी अनुयायियों को जबरदस्ती मुसलमान बना दिया। केवल थोड़े से, बहुत थोड़े से भाग निकले और भारत आ गए–भारत के अलावा और जा भी कहां सकते थे? भारत वह स्थान था जहां हर व्यक्ति बिना पासपोर्ट, बिना वीजा के प्रवेश कर सकता था, बिना किसी झंझट के। जरथुस्त्र के केवल थोड़े से अनुयायी मुस्लिम हत्यारों से बच गए। भारत में भी ज्यादा नहीं हैं, केवल एक लाख। अब भला एक लाख लोगों

के धर्म की परवाह कौन करता है? और जो सभी के सभी भारत में नहीं केवल एक नगर मुंबई के आस-पास बसे हैं। वे खुद भी जरथुस्त्र को भूल चुके हैं। उन्होंने हिंदुओं के साथ समझौता कर लिया है जिनके साथ उन्हें रहना है। वे बचे कुएं से और गिरे खाई में–एक गहरी खाई! एक ओर कुआं, दूसरी ओर खाई। और इनके मध्य में है मार्ग–बुद्ध इसे मध्यम-मार्ग कहते हैं–ठीक मध्य में, जैसे रस्सी पर चलने वाला नट।

नीत्शे द्वारा जरथुस्त्र को वापस लाना आधुनिक दुनिया के लिए उसकी एक महान सेवा थी। और उसकी सबसे बड़ी गलती थी: एडोल्फ हिटलर। उसने दोनों ही कार्य किए। निश्चय रूप से वह एडोल्फ हिटलर के लिए जिम्मेवार नहीं है। नीत्शे के 'सुपरमैन, अतिमानव' के खयाल को गलत ढंग से समझना हिटलर की अपनी गलतफहमी थी। नीत्शे कर भी क्या सकता था? यदि कोई मुझे गलत समझ ले तो इसमें मैं क्या कर सकता हूं? गलत समझ लेना हमेशा से तुम्हारी स्वतंत्रता है। एडोल्फ हिटलर में एक औसत दर्जे का बचकानापन था, एक मंदबुद्धि बालक जैसा, सच में ही कुरूप। जरा उसका चेहरा याद करो–वे छोटी-छोटी मूंछें, घूरती हुई डरावनी आंखें, जैसे डराने की कोशिश कर रही हों, और तनावग्रस्त मस्तक। वह इतना तनावग्रस्त था कि जीवन भर वह किसी से मित्रता न कर सका। मित्रता के लिए थोड़ा विश्रामपूर्ण होना आवश्यक है।

हिटलर प्रेम नहीं कर सका, हालांकि उसने अपने तानाशाही ढंग से प्रयास किया था। दुर्भाग्य से जैसा कि सभी पति करते हैं, उसने स्त्रियों पर नियंत्रण करने का, आदेश देने का, अपनी मर्जी थोपने और अपने ढंग से चलाने का प्रयास किया–लेकिन प्रेम करने में वह असमर्थ था। प्रेम के लिए बुद्धिमत्ता जरूरी है। वह अपनी गर्लफ्रेंड को भी रात अकेले में अपने कमरे में रहने नहीं देता था। कितना भय! उसे भय था कि रात में सोते समय ... क्या पता गर्लफ्रेंड शत्रु हो, वह शत्रु की एजेंट हो सकती है। सारे जीवन वह अकेला ही सोया।

एडोल्फ हिटलर जैसा आदमी प्रेम कैसे कर सकता था? उसमें कोई सहानुभूति न थी, कोई भावना न थी, कोई हृदय न था, कोई स्त्रैण-भाव उसमें था ही नहीं। उसने अपने भीतर की स्त्री को मार डाला था, तो भला बाहर की स्त्री से वह प्रेम कैसे कर सकता था? बाहर की स्त्री को प्रेम करने के लिए तुम्हें भीतर की स्त्री को पोषित करना पड़ेगा, क्योंकि जो तुम्हारे भीतर है वही तुम्हारे कार्यों में प्रकट हो जाता है।

मैंने सुना है, हिटलर ने एक क्षुद्र कारण से अपनी एक प्रेमिका को गोली मार दी थी: उसने उसे मार डाला क्योंकि उसने उससे कह रखा था कि वह अपनी मां से मिलने नहीं जाएगी, लेकिन जब वह बाहर गया हुआ था, वह मिलने चली गई, हालांकि हिटलर के लौटने से पहले ही वह वापस आ गई थी। पहरेदारों ने उसे बताया कि वह बाहर गई थी। प्रेम को समाप्त करने के लिए इतना पर्याप्त था–और प्रेम को ही नहीं, प्रेमिका को भी! 'अगर तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करती हो, तो तुम मेरी शत्रु हो,' यह कह कर उसने प्रेमिका को गोली मार दी।

यही उसका तर्क था: जो तुम्हारी आज्ञा माने वह मित्र; जो न माने वह शत्रु। जो तुम्हारे पक्ष में है वह तुम्हारा है, और जो तुम्हारे पक्ष में नहीं है वह तुम्हारा विरोधी है। यह जरूरी नहीं है–हो सकता है कोई निष्पक्ष हो, न तुम्हारे पक्ष में न विपक्ष में। हो सकता है कोई मित्र न बनना चाहे, लेकिन इसका यह अर्थ निकालना जरूरी नहीं है कि वह शत्रु ही हो।

'दस स्पेक जरथुस्त्रा' पुस्तक मुझे प्रिय है। मुझे बहुत कम पुस्तकें प्रिय हैं; उन्हें मैं अपनी अंगुलियों पर गिन सकता हूं...

मेरी सूची में प्रथम होगी: 'दस स्पेक जरथुस्त्रा।'

दूसरी: 'ब्रदर्स कर्माजोव।'

तीसरी: 'दि बुक ऑफ मीरदाद।'

चौथी: 'जोनाथन लिविंगस्टन सीगल।'

पांचवीं पुस्तक है: लाओत्सु की 'ताओ तेह किंग।'

छठवीं: 'दि पैरेबल्स ऑफ च्वांग्त्सु।' वे बहुत प्यारे व्यक्ति थे, और यह बहुत प्यारी पुस्तक है।

सातवीं है: 'दि सरमन ऑन दि माउंट'–ध्यान रहे, केवल सरमन ऑन दि माउंट, पूरी बाइबिल नहीं। सरमन ऑन दि माउंट को छोड़ कर पूरी बाइबिल बस कचरा है।

आठवीं... मेरी गिनती ठीक है न? ठीक है। तुम मान सकते हो कि अभी मैं अपनी दीवानगी में हूं। आठवीं है: 'भगवद्गीता'–'कृष्ण के दिव्य गीत।' बीच में ही बता दूं 'क्राइस्ट' 'कृष्ण' का गलत उच्चारण है, जैसे 'जरथुस्त्र' का 'जोरोस्टर।' कृष्ण का अर्थ है चैतन्य की परम अवस्था और कृष्ण के गीत, भगवद्गीता अस्तित्व के परम शिखर को छू लेती है।

नौवीं: 'गीतांजलि।' इसका अर्थ है 'गीतों का नैवेद्य।' यह रवींद्रनाथ टैगोर की कृति है, जिसके लिए उन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

और दसवीं है दि सांग्स ऑफ मिलारेपा: 'दि वन थाउजेंड सांग्स ऑफ मिलारेपा'–'मिलारेपा के सहस्र गीत'–तिब्बती में इसे यही कहा जाता है।

कोई नहीं बोला:
न ही आतिथेय,
न ही अतिथि,
और न ही श्वेत गुलदाउदी।

आह!...कितना सुंदर...श्वेत गुलदाउदी। आह, कितना सुंदर! शब्द कितने छोटे पड़ जाते हैं। जो मुझे मिल रहा है उसे मैं कह नहीं सकता।

श्वेत गुलदाउदी–
कोई नहीं बोला:
न ही आतिथेय,
न ही अतिथि,
और न ही श्वेत गुलदाउदी।

ठीक। इसी सौंदर्य की वजह से,मेरे कान शोरगुल भी सुन नहीं सकते, मेरी आंखें आंसुओं से गीली हो रही हैं।

आंसू ही वे शब्द हैं जिनसे अज्ञात अभिव्यक्त होता है–मौन की भाषा।

आज इतना ही

सत्र-02

मैं क्षमा चाहता हूं, क्योंकि कुछ पुस्तकों का उल्लेख आज सुबह मुझे करना चाहिए था, लेकिन मैंने किया नहीं। जरथुस्त्र, मीरदाद, च्वांग्त्सु, लाओत्सु, जीसस और कृष्ण से मैं इतना अभिभूत हो गया था कि मैं कुछ ऐसी पुस्तकों को भूल ही गया जो कि कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। मुझे भरोसा नहीं आता कि खलील जिब्रान की 'दि प्रोफेट' को मैं कैसे भूल गया। अभी भी यह बात मुझे पीड़ा दे रही है। मैं निर्भार होना चाहता हूं–इसीलिए मैं कहता हूं मुझे दुख है, किंतु किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं।

कैसे मैं उस पुस्तक को भूल गया जो परम शिखर है: 'दि बुक ऑफ दि सूफ़ीज!' शायद इसीलिए भूल गया क्योंकि इसमें कुछ है ही नहीं, बस खाली पन्ने। पिछले बारह सौ वर्षों से सूफियों ने इसे परम श्रद्धापूर्वक संजोया है, वे इसे खोलते हैं और पढ़ते हैं। किसी को भी आश्चर्य होता है कि वे पढ़ते क्या हैं। जब बहुत लंबे समय तक खाली पन्नों को देखो तो स्वयं पर ही लौट आने के लिए बाध्य हो जाते हो। यही असली अध्ययन है–असली काम।

'दि बुक' को मैं कैसे भूल गया? अब कौन मुझे क्षमा करेगा? 'दि बुक' का उल्लेख सर्वप्रथम होना चाहिए, अंत में नहीं। इसका अतिक्रमण तो हो ही नहीं सकता। इससे बेहतर पुस्तक रची कैसे जा सकती है, जिसमें कुछ भी न हो, शून्य का संदेश हो?

अपने नोट्स में देवगीत, ना-कुछ, नथिंगनेस को ना-कुछ-पन ही लिखना। अन्यथा ना-कुछ का नकारात्मक अर्थ होता है–खालीपन। पर ऐसा नहीं है। इसका अर्थ है 'पूर्णता।' पूरब में खालीपन दूसरे ही संदर्भ में प्रयुक्त होता है...'शून्यता।'

अपने एक संन्यासी को मैंने 'शून्यो' नाम दिया है, लेकिन वह बेवकूफ अपने को डॉक्टर इचलिंग कहता रहता है। अब इससे अधिक बेवकूफी क्या होगी? 'डॉक्टर इचलिंग'–कितना भद्दा नाम है! और डॉक्टर इचलिंग बनने के लिए उसने अपनी दाढ़ी मूंडवा दी, क्योंकि दाढ़ी में वह थोड़ा सुंदर लगता था।

पूरब में शून्यता–खालीपन का अर्थ खालीपन नहीं है जैसा अंग्रेजी भाषा में होता है। इसका अर्थ है पूर्णता, अतिशय होना, इतना पूर्ण कि और किसी कुछ की आवश्यकता ही न रहे। 'दि बुक' का यही संदेश है। कृपया सूची में इसे सम्मिलित कर लो।

पहली पुस्तक: दि बुक ऑफ दि सूफ़ीज।

दूसरी: खलील जिब्रान की 'दि प्रोफेट।' 'दि प्रोफेट' को मैं आसानी से छोड़ सकता था, इसका सामान्य सा कारण यह कि इसमें फ्रेड्रिक नीत्शे की 'दस स्पेक जरथुस्त्रा' की ही अनुगूंज है। हमारे संसार में कोई भी सत्य नहीं बोलता। हम इतने झूठे हैं, इतने औपचारिक, इतने शिष्टाचारी... 'दि प्रोफेट' बस सुंदर है, क्योंकि इसमें जरथुस्त्र की अनुगूंज है।

तीसरी: 'दि बुक ऑफ लीहत्सू।' मैंने लाओत्सु का उल्लेख किया, च्वांग्त्सु का उल्लेख किया; लीहत्सू को मैं भूल गया, और वह लाओत्सु तथा च्वांग्त्सु दोनों के परम शिखर हैं। लीहत्सू तीसरी पीढ़ी में आते हैं। लाओत्सु

सदगुरु थे, च्वांग्त्सु शिष्य थे। लीहत्सू शिष्य के शिष्य थे, शायद इसीलिए मैं उन्हें भूल गया। लेकिन उनकी पुस्तक शानदार है और सूची में शामिल किया जाना है।

चौथी–और यह सचमुच आश्चर्य है कि मैंने प्लेटो रचित 'डायलॉग्स ऑफ साक्रेटीज' का उल्लेख नहीं किया। प्लेटो के कारण शायद मैं भूल गया। प्लेटो उल्लेख योग्य नहीं है, वह एक दार्शनिक भर था, लेकिन उसकी 'डायलॉग्स ऑफ साक्रेटीज एंड हिज डेथ' की जितनी प्रशंसा की जाए कम है और यह सम्मिलित करने योग्य है।

पांचवीं... 'दि नोट्स ऑफ दि डिसाइपल्स ऑफ बोधिधर्मा' को भी मैं भूल गया। जब मैं गौतम बुद्ध के बारे में बात करता हूं तो बोधिधर्म के बारे में सदैव भूल जाता हूं, शायद इसलिए कि मुझे लगता है कि उनको मैंने उनके सदगुरु बुद्ध में सम्माहित कर लिया है। लेकिन नहीं, यह ठीक नहीं है। बोधिधर्म अपनी स्वयं की शक्ति पर खड़े हैं। वे एक महान शिष्य थे, इतने महान कि गुरु भी उनसे ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने स्वयं एक शब्द भी नहीं लिखा, लेकिन उनके अज्ञात शिष्यों ने जिन्होंने अपने नाम का उल्लेख भी नहीं किया, बोधिधर्म के शब्दों के नोट्स लिखे। यद्यपि ये नोट्स बहुत थोड़े से हैं, लेकिन कोहिनूर जैसे मूल्यवान। तुम्हें मालूम है, कोहिनूर शब्द का अर्थ है: विश्व का प्रकाश। नूर यानी प्रकाश, कोहिनूर यानी विश्व। यदि किसी चीज को मुझे कोहिनूर जैसी बताना हो तो मैं बोधिधर्म के अनाम शिष्यों के नोट्स की ओर इशारा करूंगा।

छठवीं: मैं 'रुबाइयात' को भी भूल गया। मेरी आंखों में आंसू आ रहे हैं। सभी कुछ भूलने के लिए मैं क्षमा मांग सकता हूं लेकिन 'रुबाइयात' भूलने के लिए नहीं। उमर खय्याम... मैं बस चिल्ला सकता हूं, रो सकता हूं। आंसुओं से ही क्षमा मांग सकता हूं, शब्दों से काम न चलेगा। 'रुबाइयात' संसार में सबसे अधिक गलत समझी जाने वाली और फिर भी सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से एक है। अनुवाद के माध्यम से ही उसे समझा जाता है, लेकिन उसका भाव सदैव गलत समझा गया है। अनुवादक इसके भाव की अभिव्यक्ति नहीं कर पाया है। 'रुबाइयात' में प्रतीकों का उपयोग किया गया है, और अनुवादक अनुशासित मन वाला एक ऐसा अंग्रेज था, जिसे अमरीका में लोग व्यवस्थित मन वाला कहते हैं, जो लीक से जरा भी न हटता हो। 'रुबाइयात' को समझने के लिए तुम्हें जरा लीक से हट कर चलने की आवश्यकता पड़ेगी।

'रुबाइयात' में सुरा और सुंदरी की ही चर्चा है और कुछ नहीं; इसमें सुरा और सुंदरी के ही गीत हैं। सारे अनुवादक–और वे बहुते से हैं–सभी गलत हैं। और उन्हें गलत होना ही था–क्योंकि उमर खय्याम एक सूफी थे, तसव्वुफ के आदमी, एक ऐसा आदमी जो जानता है। जब वे स्त्री की बात करते हैं, तो वे परमात्मा की बात कर रहे हैं। परमात्मा को बुलाने का सूफियों का ढंग यही है: "महबूबा, ओ मेरी महबूबा।" और परमात्मा के लिए वे सदैव स्त्रीलिंग का ही उपयोग करते हैं, इसे खयाल में रखना चाहिए। मानवता और चैतन्य के पूरे इतिहास में संसार भर में किसी ने भी परमात्मा को स्त्री के रूप में संबोधित नहीं किया है। केवल सूफी ही परमात्मा को महबूबा कहते हैं। और 'शराब' वह है जो दोनों के बीच घटित होती है, अंगूर से इसका कुछ भी लेना-देना नहीं है। वह कीमिया जो दो प्रेमियों के बीच घटती है, गुरु और शिष्य के बीच घटती है, साधक और साध्य के बीच घटती है, पूजक और परमात्मा के बीच घटती है... वह कीमिया, वह रूपांतरण शराब है। 'रुबाइयात' को इतना गलत समझा गया है, शायद इसीलिए मैं इसे भूल गया।

सातवीं: जलालुद्दीन रुमी की 'मसनवी।' इसमें छोटी-छोटी बोधकथाएं है। उस विराट को बोधकथाओं से ही व्यक्त किया जा सकता है। जीसस बोधकथाओं में ही बोलते हैं; ऐसे ही 'मसनवी।' मैं इसे क्यों भूल गया? बोधकथाओं से मुझे प्रेम है। मुझे इसको नहीं भूलना चाहिए था। इसकी हजारों बोधकथाएं मैंने सुनाई हैं। ये बोधकथाएं इतनी अधिक मेरी अपनी लगती हैं कि इसीलिए अलग से इसका उल्लेख करना मैं भूल गया। लेकिन यह क्षम्य नहीं है। इसके लिए क्षमा मांगना आवश्यक है।

आठवीं: आठवीं है 'ईशा उपनिषद।' मैं इसको क्यों भूल गया यह समझ लेना आसान है। मैंने इसे पी लिया है, यह मेरे रक्त और अस्थियों में समाहित हो चुका है; यह मैं ही हूं। हजारों बार मैं इस पर बोल चूका हूं। यह बहुत छोटा सा उपनिषद है। एक सौ आठ उपनिषद हैं और उनमें 'ईशा' सबसे छोटा उपनिषद है। इसे पोस्टकार्ड पर लिखा जा सकता है, वह भी बस एक तरफ, लेकिन इसमें सभी एक सौ सात समाए हुए हैं, इसलिए उनका उल्लेख करने की आश्यकता नहीं है। ईशा में ही बीज है।

'ईशा' का अर्थ है दिव्य। तुम्हें आश्चर्य होगा कि भारत में हम क्राइस्ट को 'क्राइस्ट' नहीं, 'ईसा' कहते हैं–ईसा, जो अंग्रेजी के 'जोशुआ' की तुलना में अरैमेक भाषा के 'येशुआ' के कहीं अधिक निकट है। उनके माता-पिता उन्हें येशु ही कहते होंगे। येशु शब्द भी काफी लंबा है। भारत तक आते-आते येशु बन गया ईशु। भारत ने तुरंत ही पहचान लिया कि ईशु शब्द ईशा जैसा ही है, जिसका अर्थ है परमात्मा, इसलिए उन्हें ईसा कहना ही बेहतर होगा।

'ईशा उपनिषद' ध्यान में उतर चुके लोगों की महानतम कृतियों में से एक है।

नौवीं: गुरजिएफ और उनकी पुस्तक 'ऑल एंड एवरीथिंग' के बारे में कुछ कहना तो मैं भूल ही गया... शायद इसलिए कि यह बहुत अजीब पुस्तक है, पढ़ने योग्य भी नहीं। मुझे नहीं लगता कि मेरे अलावा किसी भी जीवित व्यक्ति ने इसे पहले पेज से आखिरी पेज तक पढ़ा हो। गुरजिएफ के कई अनुयायियों से मैं मिला हूं, लेकिन किसी ने भी 'ऑल एंड एवरीथिंग' को पूरा नहीं पढ़ा है।

'ईशा उपनिषद' से ठीक विपरीत–यह एक विशालकाय ग्रंथ है–एक हजार पृष्ठ। और गुरजिएफ इतना दुष्ट फकीर है–मुझे उसके लिए दुष्ट फकीर का संबोधन प्रयोग करने दो–वह इस प्रकार से लिखता है कि पढ़ना असंभव हो जाता है। एक ही वाक्य कई-कई पृष्ठों तक चलता रहता है। जब तक तुम वाक्य के अंत में पहुंचो उसका प्रारंभ भूल चूके होते हो। और मेरी ही तरह, वह अपने ही बनाए हुए शब्दों का प्रयोग करता है। अजीब शब्द... उदारहण के लिए, जब वह कुंडलिनी के बारे में लिख रहा था, तो उसने इसे 'कुंडा-बफर' कहा; कुंडलिनी के लिए यह उसका शब्द था। यह पुस्तक अत्यंत महत्व की है, लेकिन हीरे सामान्य पत्थरों में छिपे रहते हैं, उनको ढूंढना और खोजना पड़ता है।

मैंने इस पुस्तक को एक बार नहीं अनेक बार पढ़ा है। जितना ही मैं इसमें डूबा उतना ही मैं इसे प्रेम करने लगा। क्योंकि उसकी उतनी ही दुष्टता मेरी समझ में आ गई, मुझे दिखने लगा कि जिनको नहीं जानना चाहिए उनसे वह बात छिपा ली गई है। ज्ञान उनके लिए नहीं है जो अभी उसे समझने योग्य नहीं हैं। ज्ञान को बेहोश लोगों से छिपाना है, यह केवल उनके लिए है जो पचा सकें। यह केवल उन लोगों को दिया जाना चाहिए, जो तैयार हैं। विचित्र ढंग से इसे लिखने का अभिप्राय यही है। गुरजिएफ की 'ऑल एंड एवरीथिंग' से विचित्र दूसरी कोई पुस्तक नहीं और सचमुच यह सब और सब-कुछ है।

दसवीं: मुझे यह पुस्तक याद है, लेकिन मैंने इसका उल्लेख नहीं किया, क्योंकि यह गुरजिएफ के उस शिष्य पी.डी. ऑस्पेंस्की ने लिखी है, जिसने गुरजिएफ को धोखा दिया। उसकी इसी धोखाधड़ी के कारण मैं इसे शामिल नहीं करना चाहता था, लेकिन यह पुस्तक सदगुरु के साथ धोखा करने के पहले लिखी गई थी, इसलिए अंततः मैंने इसे शामिल करने का निर्णय लिया। पुस्तक का नाम है: 'इन सर्च ऑफ दि मिरेकुलस।' यह अत्यंत सुंदर पुस्तक है, इसलिए भी कि इसे उस व्यक्ति ने लिखा है, जो केवल शिष्य था, जिसने अभी स्वयं जाना नहीं है। वह न केवल शिष्य था बल्कि बाद में जुदास बन गया, उसने गुरजिएफ को धोखा दिया। यह अजीब है, लेकिन संसार अजीब बातों से भरा पड़ा है।

गुरजिएफ के द्वारा लिखी गई पुस्तक से कहीं अधिक ऑस्पेंस्की की पुस्तक गुरजिएफ का प्रतिनिधित्व करती है। हो सकता है कि चेतना की किसी विशेष भावदशा में गुरजिएफ ने ऑस्पेंस्की पर आधिपत्य करके माध्यम की तरह उपयोग किया हो, ऐसे ही जैसे मैं देवगीत का उपयोग माध्यम की तरह कर रहा हूं। इस समय वह नोट्स लिख रहा है और मैं अपने अधखुले नेत्रों से सब सब-कुछ देख रहा हूं। मैं बंद आंखों से भी देख सकता हूं। मैं केवल द्रष्टा हूं, शिखर पर बैठा द्रष्टा। मुझे सिवाय देखने के अब और कोई काम नहीं बचा है।

ग्यारहवीं: यह पुस्तक एक ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गई है जो संबुद्ध नहीं है, जो न सदगुरु है न ही शिष्य: वाल्ट व्हिटमैन रचित 'लीव्स ऑफ ग्रास।' लेकिन कोई बात उससे अभिव्यक्त हुई है, कवि के माध्यम से प्रकट हो गई है। कवि ने बांस की पोंगरी का काम किया है और वे गीत बांसुरी के नहीं हैं, वे बांस के भी नहीं हैं। वाल्ट व्हिटमैन बस एक अमरीकन बांस है। लेकिन 'लीव्स ऑफ ग्रास' अत्यंत शानदार है। अस्तित्व से जो प्रवाहित हो रहा था उसे कवि ने ग्रहण कर लिया है। जहां तक मुझे पता है, वाल्ट व्हिटमैन के अलावा कोई भी अमरीकन इस भाव को छू तक नहीं पाया है, यहां तक कि आंशिक रूप से भी नहीं। अन्यथा कोई भी अमरीकन कवि इतना प्रतिभाशाली नहीं है।

हस्तक्षेप मत करो!–कम से कम जब अपने नोट्स लिख रहे हो तब तो बिलकुल भी नहीं। बाद में तुम पछताओगे कि तुमसे यह छूट गया, वह छूट गया। बस अपने नोट्स लिखते रहो। जब समय पूरा हो जाएगा, तो मैं खुद कहूंगा–बंद करो।

क्या मेरा समय समाप्त हो चला है? मेरा समय तो बहुत पहले से ही समाप्त हो गया था; आज नहीं, पच्चीस वर्ष पहले। मैं एक मरणोपरांत जीवन जी रहा हूं, बस पत्र में लिखा गया पुनश्च लेख। लेकिन कभी-कभी पुनश्च लेख पत्र के मूल लेख से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है।

कैसा अदभुत संसार है। इन ऊंचाइयों पर भी घाटी से उठती हुई खिलखिलाहट सुनाई दे रही है। एक तरह से यह अच्छा है, यह दोनों का मेल कराती है।

दुख है यह शीघ्र समाप्त होगा।
इसे हम शाश्वत नहीं बना सकते?
कम से कम अभी तो मेरे साथ धोखा मत करो।
आदमी तो कायर है।
क्या शिष्य जुदास होने से बच नहीं सकते?
जब यह समाप्त हो जाए तो रुक सकते हो।
तो ठीक है...अलेलूइया!

सत्र-03

अब मेरा काम शुरू होता है। यह कैसा मजाक है! सबसे बड़ा मजाक यह कि चीनी संत सोसान मेरी चेतना का द्वार खटखटा रहे थे। ये संत भी बड़े अजीब होते हैं। तुम कुछ नहीं कह सकते कि कब ये तुम्हारे दरवाजे खटखटाने लगें। तुम अपनी प्रेमिका के साथ प्रेम कर रहे हो और सोसान लगे दरवाजा खटखटाने। वे कभी भी आ जाते हैं–किसी भी समय–वे किसी शिष्टाचार में विश्वास नहीं करते। और वे मुझसे क्या कह रहे थे? वे कह रहे थे कि 'तुमने मेरी पुस्तक शामिल क्यों नहीं की?'

हे परमात्मा, यह सच है! मैंने उनकी पुस्तक को केवल इसलिए अपनी सूची में शामिल नहीं किया, क्योंकि उनकी पुस्तक में सभी कुछ समाहित है। अगर मैं उनकी पुस्तक शामिल करूं, तो फिर और किसी की जरूरत नहीं रहेगी, फिर किसी और पुस्तक की आवश्यकता ही नहीं रही। सोसान अपने आप में पर्याप्त हैं। उनकी पुस्तक का नाम है: 'शिन शिन मिंग।'

शिन को अंग्रेजी शब्द 'एस-आइ-एन' की तरह नहीं लिखा जाता है, बल्कि 'एच-एस-आइ-एन' लिखा जाता है। अब तुम चीनियों को तो जानते ही हो: 'सिन' करने का कैसा अदभुत ढंग! शिन... शिन शिन मिंग।

ठीक है सोसान, आपकी पुस्तक को मैंने शामिल कर लिया है। आज की यह पहली पुस्तक होगी। क्षमा करना, बिलकुल शुरुआत से ही इसे प्रथम होना चाहिए था, लेकिन मैं पहले ही बीस के बारे में बात कर चुका हूं। पर कोई बात नहीं। मैं कहूं या न कहूं 'शिन शिन मिंग' सर्वप्रथम है, पहली है। देवगीत, 'पहली' को बड़े अक्षरों में लिखना।

'शिन शिन मिंग' इतनी छोटी सी पुस्तक है कि अगर सोसान को कभी पता चलता कि उनके बाद गुरजिएफ 'ऑल एंड एवरीथिंग' नामक पुस्तक लिखेंगे, तो वे बहुत हंसते, क्योंकि यही शीर्षक उनकी अपनी पुस्तक का भी है। और गुरजिएफ को एक हजार पृष्ठ लिखने पड़े, लेकिन फिर भी सोसान के शब्द कहीं ज्यादा प्रभावी हैं, कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। वे सीधे हृदय में उतर जाते हैं।

मुझे आवाज भी सुनाई पड़ रही है–उन शब्दों की नहीं जो तुम्हारे हृदय तक पहुंच रहे हैं, बल्कि किसी चूहे की, किसी शैतान की, जो अपना काम कर रहा है। उसे अपना काम करने दो।

सोसान की पुस्तक बहुत छोटी है, 'ईशा उपनिषद' की भांति, और कहीं अधिक महत्वपूर्ण। जब मैं यह कहता हूं तो मेरा दिल टूट रहा है, क्योंकि मैं चाहता हूं कि 'ईशा' परम पुस्तक हो, लेकिन मैं क्या कर सकता हूं?–सोसान ने उसे हरा दिया है। मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं कि 'ईशा' हार गया, और इसलिए भी कि सोसान जीत गया है।

पुस्तक इतनी छोटी है कि तुम उसे अपनी हथेली पर लिख सकते हो; लेकिन अगर तुम लिखो, तो कृपया स्मरण रखना... कि बाएं हाथ पर लिखना। दाहिने हाथ की हथेली पर मत लिखना, ऐसा करना अनुचित होगा। लोग कहते हैं कि "दाहिना ठीक है और बायां गलत है।" मैं कहता हूं, बायां ठीक है और दाहिना गलत है, क्योंकि तुम्हारे भीतर जो भी सुंदर है बायां उसका प्रतिनिधित्व करता है, और सोसान केवल बाएं से ही प्रवेश कर सकते हैं। मैं जानता हूं, क्योंकि मैंने हजारों हृदयों में बाएं हाथ के माध्यम से प्रवेश किया है, बाईं तरफ से, उनके स्त्री-चित्त वाले भाग से, उनके यिन से–मेरा मतलब जिसे चीन में यिन कहते हैं; मैं कभी भी किसी के भीतर उसके यांग, पुरुष-चित्त के माध्यम से प्रवेश नहीं कर पाया हूं। किसी को रोकने के लिए यह शब्द ही

काफी है: 'यांग।' यह कहता हुआ लगता है कि "दूर रहो!" यह कहता है कि "रुको! यहां मत आओ! दूर रहो! कुत्ते से सावधान!"

दाहिना भाग ऐसा ही है। दाहिना भाग चेतना के गलत पक्ष से जुड़ा हुआ है। यह उपयोगी है, लेकिन एक सेवक की भांति। इसे मालिक नहीं बन जाना चाहिए। इसलिए अगर तुम्हें सोसान की 'शिन शिन मिंग' लिखना ही हो, तो उसे बाईं हथेली पर लिखना।

यह इतनी सुंदर पुस्तक है कि इसका प्रत्येक शब्द स्वर्णिम है। मैं सोच नहीं सकता कि इसका एक भी शब्द हटाया जा सकता है। सत्य को कहने के लिए जो जरूरी है, जो आवश्यक है, यह एकदम वही है। सोसान निश्चय ही एक महान तार्किक व्यक्ति रहे होंगे, कम से कम 'शिन शिन मिंग' लिखते समय।

मैंने इस पर बोला है और इस पर बोलना मुझे इतना अच्छा लगा उतना किसी और पर बोलते हुए नहीं लगा है। मेरे बोलने के महानतम क्षण थे जब मैं सोसान पर बोल रहा था। बोलना और मौन एक साथ... बोलते हुए भी न बोलना, क्योंकि सोसान को बिना बोले ही समझा जा सकता है। वे शब्दों के व्यक्ति नहीं थे, वे मौन के व्यक्ति थे। वे कम से कम बोले हैं। सोसान, क्षमा करना, मैं आपको भूल गया था। आपके कारण ही कुछ और लोग मुझे याद आ रहे हैं, जो मेरे द्वार पर दस्तक दे सकते हैं और मेरी दोपहर की नींद खराब कर सकते हैं। इसलिए अच्छा तो यही है कि मैं उनका भी उल्लेख कर दूं।

पहली है: सोसान की पुस्तक 'शिन शिन मिंग।'

दूसरी है: पी.डी. ऑस्पेंस्की की 'टर्शियम आर्गानम।' यह एक चमत्कार है कि इस पुस्तक को उसने तब लिखा जब उसने गुरजिएफ का नाम भी नहीं सुना था। उसने इसे तब लिखा जब उसे होश भी नहीं था कि वह क्या लिख रहा है। वह स्वयं भी इसे गुरजिएफ से मिलने के बाद ही समझ पाया। गुरजिएफ से मिलते ही उसके पहले शब्द थे: "आपकी आंखों में झांक कर मैं 'टर्शियम आर्गानम' को समझ पाया। यद्यपि मैंने ही इसे लिखा है, लेकिन अब मैं कह सकता हूं कि यह मुझे माध्यम बना कर किसी अज्ञात शक्ति द्वारा लिखी गई है, जिसका मुझे पता नहीं था।" शायद उस शरारती गुरजिएफ ने ही ऑस्पेंस्की को माध्यम बना कर इसे लिखा था, या फिर कोई और व्यक्ति जिसको सूफी 'परम शरारती' कहते हैं, जो चमत्कार करता रहा है–'टर्शियम आर्गानम' जैसे चमत्कार।

शीर्षक का अर्थ है: 'विचार का तीसरा सिद्धांत।' सूफी उस परम सत्ता को एक नाम देते हैं; वह कोई व्यक्ति नहीं है, बल्कि बस एक उपस्थिति मात्र है। मैं अभी भी उस उपस्थिति को अनुभव कर रहा हूं, यहीं... इसी क्षण। वे इसे एक नाम देते हैं, क्योंकि प्रत्येक चीज को कोई नाम देना पड़ता है। लेकिन इस सौंदर्य, इस भव्यता, इस उत्साह, इस उमंग, इस आनंद की उपस्थिति को मैं कोई नाम नहीं दूंगा।

जैसा मैंने कहा कि यह एक चमत्कार है कि ऑस्पेंस्की विश्व की किसी भी भाषा में लिखी गई श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक 'टर्शियम आर्गानम' लिख सका। वस्तुतः ऐसा कहा जाता है, और ठीक ही कहा जाता है–याद रखना, मैं जोर देकर दोहरा रहा हूं कि ठीक ही कहा जाता है कि केवल तीन श्रेष्ठतम पुस्तकें हैं: पहली है: 'आर्गानम'–जिसे अरस्तू ने लिखा है; दूसरी है: 'दि सेकेंड आर्गानम'–जिसे बैकन ने लिखा है; और तीसरी है ऑस्पेंस्की की: 'टर्शियम आर्गानम।' 'टशिर्च्यम' यानी तीसरा। और ऑस्पेंस्की ने बड़ी शरारत से–और केवल एक संत ही इतना शरारतपूर्ण हो सकता है–अपनी पुस्तक का परिचय बिना किसी अहंकार के, विनम्रता और सादगी

से इस प्रकार दिया है: ''पहला सिद्धांत अस्तित्व में है लेकिन तीसरे सिद्धांत से पहले नहीं। पहला सिद्धांत जब जगत में नहीं था, तब भी यह तीसरा सिद्धांत मौजूद था।''

ऐसा लगता है कि 'टर्शियम आर्गानम' लिख कर ऑस्पेंस्की बिलकुल ही पूरी तरह से थक गया था, क्योंकि फिर वह कभी उसी ऊंचाई पर नहीं पहुंच पाया। यहां तक कि 'इनसर्च ऑफ दि मिरैकुलस' में गुरजिएफ के बारे में बताते हुए भी वह उस ऊंचाई को नहीं पा सका। जब उसने गुरजिएफ को धोखा दिया, तो अंत में उसने 'टर्शियम' से बेहतर कुछ लिखने का प्रयास किया। अपने अंतिम प्रयास में उसने 'दि फोर्थ वे' नामक पुस्तक लिखी, लेकिन वह बुरी तरह असफल रहा। किताब अच्छी है, लेकिन केवल विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के लिए अच्छी है। तुम देखते हो, किसी चीज की आलोचना करने के लिए मेरे अपने ही ढंग हैं...

'दि फोर्थ वे' विश्वविद्यालय के नियमित पाठ्यक्रम का अंश बन सकती है, लेकिन इससे अधिक कुछ नहीं। हालांकि वह अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ लिखने का प्रयास कर रहा था, और ऑस्पेंस्की ने जो कुछ भी लिखा है उसमें यह निकृष्टतम पुस्तक है। यह उसकी अंतिम पुस्तक थी।

जो भी श्रेष्ठ है उसके साथ यही कठिनाई है: अगर तुम प्रयास करोगे, तो तुम चूक जाओगे। या तो वह अनायास आता है या फिर बिलकुल नहीं। 'टर्शियम आर्गानम' में वह अज्ञात शक्ति ऑस्पेंस्की पर अवतरित हुई थी, लेकिन उसे पता नहीं था। 'टर्शियम' में शब्द इतने प्रभावशाली हैं कि कोई भरोसा नहीं कर सकता कि लेखक ज्ञान को उपलब्ध नहीं है, कि वह अभी भी मास्टर की खोज में है, कि वह अभी भी सत्य की खोज में है।

मैं एक गरीब विद्यार्थी था, पूरे दिन पत्रकार के रूप में काम करता था–जो तुम कर सकते हो उनमें यह निकृष्टतम काम है, किंतु उस समय मेरे लिए यही उपलब्ध था–और मैं इतना जरूरतमंद था कि मुझे रात के कॉलेज में जाना पड़ा। इसलिए दिन भर मैं पत्रकार का काम करता और रात को कॉलेज जाता। एक तरह से मेरा नाम रात्रि से संबंधित है। रजनीश का अर्थ है चंद्रमा: रजनी यानी रात, ईश यानी देवता–रात्रि का देवता।

तो लोग हंसते थे और कहते थे: ''यह तो अजीब है: तुम दिन भर काम करते हो और रात को पढ़ने जाते हो। क्या अपने नाम को सार्थक कर रहे हो?''

अब मैं उन्हें उत्तर दे सकता हूं, हां–बड़े अक्षरों में लिखना–'हां,' मैं सारे जीवन इसे सार्थक करने का प्रयास करता रहा। पूर्णिमा के चांद से और अधिक सुंदर और हो भी क्या सकता है? तो मैं एक गरीब छात्र होने के कारण दिन भर काम करता था। लेकिन मैं दीवाना हूं, अमीर या गरीब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता...

दूसरों से पुस्तक उधार लेकर पढ़ना मैंने कभी पसंद नहीं किया। वस्तुतः पुस्तकालय से लेकर पुस्तक पढ़ना भी मुझे पसंद नहीं है, क्योंकि पुस्तकालय की पुस्तकें वेश्या जैसी होती हैं। उनमें दूसरे लोगों के द्वारा लगाए गए निशानों, पंक्तियों के नीचे खींची गई रेखाओं को देख कर मुझे घृणा होती है। मैंने हमेशा ताजगी को पसंद किया है, बर्फ सी सफेद ताजगी।

'टर्शियम आर्गानम' महंगी पुस्तक थी। भारत में, उन दिनों में, मैं केवल सत्तर रुपया प्रतिमाह पाता था, और संयोग से इस पुस्तक का मूल्य भी सत्तर रुपये ही था–लेकिन मैंने इसे खरीद लिया। पुस्तक विक्रेता आश्चर्यचकित था। उसने कहा: ''यहां तक कि हमारे समाज के सबसे धनी व्यक्ति भी इसे नहीं खरीद सकते। पांच सालों से मैंने इसे बेचने के लिए रखा हुआ था, पर इसे किसी ने नहीं खरीदा। लोग आते हैं और इसे देखते हैं, उसके बाद खरीदने का खयाल छोड़ देते हैं। तो तुम एक निर्धन छात्र, जो दिन भर काम करता है और रात को पढ़ने जाता है, और हर रोज लगभग चौबीसों घंटे काम करता है, तुम इसे कैसे खरीद सकते हो?''

मैंने कहा: ''अगर जीवन देकर भी मुझे खरीदना पड़े तो भी मैं इस पुस्तक को खरीद सकता हूं। इसकी पहली पंक्ति पढ़ना ही पर्याप्त है। मुझे यह चाहिए ही चाहिए, चाहे जो भी मूल्य हो।''

भूमिका में पहला वाक्य जो मैंने पढ़ा वह था: "यह विचार का तीसरा सिद्धांत है, और केवल तीन ही हैं। पहला अरस्तू का; दूसरा बैकन का, और तीसरा मेरा खुद का।" ऑस्पेंस्की के साहस से मैं रोमांचित हो उठा, जब उसने कहा: "तीसरा सिद्धांत प्रथम के पहले भी मौजूद था।" यही वह वाक्य था जिसने मेरे हृदय की आग को भड़का दिया।

पुस्तक विक्रेता को मैंने अपनी पूरे महीने की तनख्वाह दे दी। तुम समझ नहीं सकते, क्योंकि उस पूरे महीने मुझे करीब-करीब भूखा ही रहना पड़ा। लेकिन यह पुस्तक इसके योग्य थी। उस सुंदर महीने को मैं याद कर सकता हूं: न भोजन, न कपड़े–और न ही सिर पर छप्पर; क्योंकि किराया अदा न कर पाने के कारण मुझे अपने छोटे से कमरे के बाहर निकाल दिया गया था। लेकिन 'टर्शियम आर्गानम' के साथ आसमान के नीचे भी मैं प्रसन्न था। मैंने पुस्तक को सड़क के खंभे की रोशनी में पढ़ाहै–यह एक स्वीकारोक्ति है–और मैंने इस पुस्तक को जीया है। यह पुस्तक इतनी सुंदर है, और इसलिए भी कि मुझे मालूम है कि लेखक को खुद कुछ भी मालूम नहीं है। लेकिन उसने ऐसा कैसे कर लिया? यह सब देवताओं का षडयंत्र रहा होगा, उस पार से कुछ हुआ होगा। सूफियों द्वारा उपयोग किए गए नाम का प्रयोग करने से मैं अपने को रोक नहीं सकता; सूफी उसे 'खिद्र' कहते हैं। खिद्र ही वह शक्ति है जो उन्हें वह मार्गदर्शन देती है जिन्हें उसकी जरूरत होती है।

'टर्शियम आर्गानम' दूसरी पुस्तक है।

तीसरी: 'गीत गोविंद'–'परमात्मा के गीत।'

इस पुस्तक को जिस कवि ने लिखा था उसे भारतीयों ने बहुत निंदित किया है, क्योंकि 'गीत गोविंद' में, 'परमात्मा के गीत' में, उसने प्रेम की बहुत अधिक बात की है। भारतीय प्रेम के इतने विरुद्ध हैं कि उन्होंने इस श्रेष्ठ कृति की कभी प्रशंसा नहीं की।

'गीत गोविंद' ऐसी पुस्तक है जिसे गाया जाना चाहिए। इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। यह एक बाउल गीत है, एक बावले का गीत। यदि उसे गाओगे और नाचोगे, तभी समझ पाओगे–और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

मैं उस आदमी के नाम का उल्लेख नहीं कर रहा हूं जिसने इसे लिखा है। वह महत्वपूर्ण नहीं है। क ख ग कुछ भी हो... ऐसा नहीं कि मुझे उसका नाम मालूम नहीं है, लेकिन मैं उसका उल्लेख नहीं कर रहा हूं उसका सरल सा कारण यह है कि वह संबुद्धों के संसार का नहीं है। फिर भी उसने महान सेवा की है।

चौथी: अब धैर्य रखो, क्योंकि मुझे दस की सूची पूरी करनी है। मैं इससे आगे गिनती नहीं कर सकता। दस क्यों?–क्योंकि मेरी दस अंगुलियां हैं। इसी तरह दस की गिनती शुरू हुई: दस अंगुलियों से। आदमी ने अपनी अंगुलियों पर गिनना प्रारंभ किया इसलिए दस मूलभूत संख्या हो गई।

चौथी है: कुंदकुंद की 'समयसार।'

मैंने इस पर कभी नहीं बोला है। कई बार मैंने बोलने का निश्चय किया, लेकिन फिर विचार त्याग दिया। यह जैनियों द्वारा लिखी हुई श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक है, लेकिन यह बहुत ही गणितीय है; इसलिए मैं इस पर कभी नहीं बोला। मुझे काव्य प्रिय है। यदि यह काव्यात्मक होती तो मैं इस पर भी बोलता। यहां तक कि मैं असंबुद्ध कवियों पर भी बोल चुका हूं, लेकिन संबुद्ध गणितज्ञों और तर्कशास्त्रियों पर नहीं। गणित बहुत रूखा-सूखा होता है, तर्क मरुस्थल है।

शायद वे यहीं मेरे संन्यासियों के बीच में हों... लेकिन हो नहीं सकते। कुंदकुंद संबुद्ध सदगुरु थे, उनका पुनर्जन्म नहीं हो सकता। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि उनकी पुस्तक सुंदर है। मैं इससे अधिक कुछ और नहीं कहूंगा, क्योंकि वह गणितीय है... गणित की अपनी सुंदरता है, अपनी लयबद्धता है, इसलिए मैं उसकी प्रशंसा करता हूं। उसका अपना खुद का सत्य है लेकिन वह बहुत सीमित है, बहुत तर्क के घेरे में है।

समयसार का अर्थ है: सारतत्व। यदि संयोग से कभी तुम्हें कुंदकुंद की 'समयसार' मिल जाए, तो कृपया कभी भी इसे बाएं हाथ में मत लेना। दाहिने हाथ में ही रखना। यह दाहिने हाथ की पुस्तक है, हर ढंग से ठीक-ठीक। इसलिए इस पर बोलने से मैं इनकार करता रहा हूं। यह इतनी ठीक है कि मुझे इससे थोड़ी विरक्ति अनुभव होती है–निस्संदेह मेरी आंखों में आंसू हैं, क्योंकि जिस व्यक्ति ने इसे लिखा है उसके सौंदर्य को मैं जानता हूं, कुंदकुंद मुझे प्रिय हैं, लेकिन उनकी गणितीय अभिव्यक्ति को मैं सख्ती से नापसंद करता हूं।

गुड़िया, तुम अगर चाहो तो थोड़ी और आजादी ले लो, क्योंकि मुझे अभी चार पुस्तकों पर और बोलना है। अगर तुम चाहो तो फिर से बाहर जा सकती हो।

पांचवीं है: जे. कृष्णमूर्ति की 'दि फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम।'

मैं इस व्यक्ति से प्रेम करता हूं, और इस व्यक्ति से घृणा भी करता हूं। मैं प्रेम करता हूं, क्योंकि यह व्यक्ति सत्य बोलता है; लेकिन घृणा करता हूं उनकी बौद्धिकता से। वे शुद्ध तर्क हैं, तर्कसंगत हैं। मैं सोचता हूं कि शायद वे उस तर्कवादी ग्रीक अरस्तू के अवतार हैं। उनके तर्क से मैं घृणा करता हूं, उनके प्रेम का मैं आदर करता हूं–लेकिन उनकी पुस्तक सुंदर है।

बुद्धत्व की उपलब्धि के बाद यह उनकी पहली पुस्तक थी, और अंतिम भी। यद्यपि उनकी अनेक पुस्तकें आईं, लेकिन वे इसी की कमजोर पुनरक्तियां हैं। 'दि फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम' से बेहतर कुछ लिखने में वे असमर्थ रहे हैं।

यह अजीब बात है: खलील जिब्रान ने अपनी श्रेष्ठ पुस्तक 'दि प्रॉफेट' तब लिखी जब वे मात्र अठारह वर्ष के थे, और सारे जीवन उससे बेहतर लिखने के लिए संघर्ष करते रहे, किंतु असफल रहे। ऑस्पेंस्की 'टर्शियम आर्गानम' से आगे नहीं जा सका, यद्यपि वह गुरजिएफ के साथ वर्षों रहा, वर्षों काम किया। और यही बात कृष्णमूर्ति के साथ हुई: उनकी पुस्तक 'दि फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम' वस्तुतः पहली और आखिरी है।

छठवीं: छठवीं पुस्तक है एक अन्य चीनी लेखक की: 'दि बुक ऑफ हुआंग पो।' यह एक छोटी सी पुस्तक है, कोई ग्रंथ नहीं, मात्र कुछ अंश। सत्य को ग्रंथों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, इस पर तुम कोई पीएच.डी. नहीं लिख सकते। पीएच.डी. एक ऐसी डिग्री है जो मूर्खों को दी जानी चाहिए। हुआंग पो अंशों में लिखते हैं। ऊपर से देखने पर वे अंश असंबंधित लगते हैं, लेकिन ऐसा है नहीं। तुम्हें ध्यान में उतरना होगा और तभी तुमको उनके संबंध का पता चलेगा। यह अभी तक लिखी गई पुस्तकों में सबसे अधिक ध्यानमय पुस्तक है।

अंग्रेजी में 'दि बुक ऑफ हुआंग पो' का अनुवाद अंग्रेजी शैली में किया गया है 'दि टीचिंग्स ऑफ हुआंग पो' –'हुआंग पो की शिक्षाएं।' यहां तक कि यह शीर्षक ही गलत है। हुआंग पो जैसे व्यक्ति शिक्षा नहीं देते। इसमें कोई शिक्षा नहीं है। इसे समझने के लिए तुम्हें ध्यान में उतरना होगा, मौन में उतरना होगा।

सातवीं है: 'दि बुक ऑफ हुई हाई।'

फिर से अंग्रेजी में इसका अनुवाद उसी तरह से किया गया है 'दि टीचिंग्स ऑफ हुई हाई'–'हुई हाई की शिक्षाएं।' ये बेचारे अंग्रेज, ये सोचते हैं कि जीवन में शिक्षण के अलावा और कुछ है ही नहीं। ये सभी अंग्रेज लोग शिक्षक हैं। और अंग्रेज महिलाओं से तो सावधान रहना; वरना तुम किसी महिला स्कूल टीचर द्वारा पकड़ लिए जाओगे!

हुई हाई और हुआंग पो दोनों सदगुरु हैं। वे बांटते हैं, वे सिखाते नहीं। इसलिए मैं इसे 'दि बुक ऑफ हुई हाई' कहता हूं, हालांकि पुस्तकालयों में इस नाम से तुम न पाओगे। पुस्तकालयों में तुम 'दि टीचिंग्स ऑफ हुई हाई' पाओगे।

आठवीं: और आखिरी पुस्तक–कम से कम आज के लिए, क्योंकि कल के बारे में कोई नहीं जानता। हो सकता है कोई और दूसरे शैतान मेरे दरवाजों पर दस्तक देना शुरू कर दें। इस पृथ्वी पर जीवित किसी भी व्यक्ति से अधिक पुस्तकें मैं पढ़ चुका हूं, और याद रखना, मैं कोई डींग नहीं मार रहा हूं, बस एक तथ्य कह रहा हूं। मैंने कम से कम एक लाख पुस्तकें पढ़ी होंगी, शायद इससे भी अधिक, लेकिन इससे कम नहीं, क्योंकि उसके बाद मैंने गिनती करना बंद कर दिया। तो मुझे कल के बारे कुछ पता नहीं, लेकिन आज के लिए आठवीं... 'गीत गोविंद' के लिए मुझे थोड़ा सा अपराध-भाव महसूस हो रहा है, क्योंकि मैंने तुम्हें उसके लेखक का नाम नहीं बताया है। मैं बता दूंगा, लेकिन पहले मुझे आठवीं पूरी कर लेने दो।

आठवीं पुस्तक जिसने कि मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है, वह कुछ अजीब है, स्वभावतः; वरना वह मुझे प्रभावित ही नहीं करती। तुम्हें हैरानी होगी! अनुमान लगाओ कि आठवीं कौन सी पुस्तक हो सकती है... मुझे पता है कि तुम अनुमान नहीं लगा सकते हो–ऐसा नहीं है कि वह संस्कृत, या चीनी, जापानी या अरबी भाषा में है। तुमने इसके बारे में सुना है, हो सकता है वह तुम्हारे घर में ही हो। वह है ओल्ड टेस्टामेंट की 'दि सांग ऑफ सोलोमन।' यह वह पुस्तक है जिसे मैं पूरे दिल से प्रेम करता हूं। केवल 'दि सांग ऑफ सोलोमन' को छोड़ कर यहूदियों का बाकी जो कुछ भी है उसे मैं घृणा करता हूं।

तथाकथित मनोवैज्ञानिकों के कारण 'दि सांग ऑफ सोलोमन' को बहुत गलत समझा गया है, विशेष रूप से फ्रायड को मानने वाले–फ्राड लोगों–की वजह से। वे 'दि सांग ऑफ सोलोमन' की जितनी संभव हो सके उतनी निकृष्टतम तरीके से व्याख्या करते रहे हैं; उन्होंने इसे सेक्सुअल-सांग बना दिया है, यौन-गीत बना दिया है। यह ऐसा नहीं है। यह सच है कि यह सेंसुअल है, ऐंद्रिक है, अत्यधिक ऐंद्रिक है, लेकिन सेक्सुअल, कामुक नहीं है। यह बहुत ही जीवंत है, इसी कारण यह ऐंद्रिक है। यह बहुत ही रसपूर्ण है, इसीलिए यह ऐंद्रिक है... लेकिन सेक्सुअल नहीं है। सेक्स इसका एक अंश हो सकता है, लेकिन मनुष्य-जाति को गुमराह मत करो। यहां तक कि यहूदी भी इससे भयभीत हो गए हैं। वे सोचते हैं कि ओल्ड टेस्टामेंट में इसे दुर्घटनावश शामिल कर लिया गया है। सच पूछो तो यह गीत ही एकमात्र बचाने योग्य है; बाकी सब जला देने लायक है।

क्या मेरा समय पूरा हो गया? धत् तेरे की। तुम कहते हो 'हां,' लेकिन मैं क्या कर सकता हूं?–यही तो इसका सौंदर्य है। तुम दोनों को धन्यवाद।

ॐ मणि पद्मे हुम।

इस सौंदर्य पर रुक जाना कितना अच्छा है। नेति, नेति, नेति। इस 'नेति' का उच्चार भारतीय तब करते हैं जब वे बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाते हैं। फिर वे दुबारा जन्म नहीं लेना चाहते। वे कहते हैं: 'नेति, नेति, नति...' इस सुंदर अनुभव के उपरांत फिर जन्म लेने का क्या अर्थ है?

आज इतना ही

ओ. के.। नोट्स लिखने के लिए तैयार हो जाओ।

देवगीत जैसे लोग अगर न होते तो संसार से बहुत कुछ खो जाता। यदि प्लेटो ने नोट्स न लिखे होते तो सुकरात के बारे में हम कुछ भी नहीं जान पाते, न बुद्ध के बारे में, न ही बोधिधर्म के बारे में। जीसस के बारे में भी उनके शिष्यों के नोट्स के माध्यम से पता चलता है। कहा जाता है कि महावीर एक शब्द कभी नहीं बोले। मैं यह जानता हूं कि ऐसा क्यों कहा जाता है। ऐसा नहीं है कि वे एक शब्द भी नहीं बोले, लेकिन संसार से सीधे उनका संवाद कभी नहीं रहा। शिष्यों के नोट्स के माध्यम से ही जानकारी प्राप्त हुई।

ऐसा एक भी उदाहरण ज्ञात नहीं है जहां किसी संबुद्ध ने स्वयं कुछ लिखा हो। जैसा कि तुम जानते ही हो, संबुद्ध व्यक्ति होना मेरे लिए अंतिम घटना नहीं है। उससे भी पार एक ज्ञानातीत अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति न तो संबुद्ध होता है और न ही असंबुद्ध। अब, चैतन्य की उस अवस्था में केवल आंतरिक लयबद्धता के माध्यम से ही–जान कर ही मैं 'संवाद' शब्द का उपयोग नहीं कर रहा हूं, बल्कि लयबद्धता–विलीन हो जाने के एक ढंग से, शिष्य बस सदगुरु का हाथ बन कर लिखता है।

तो अपने नोट्स के लिए तैयार हो जाओ, क्योंकि पिछली बार, हालांकि अनजाने में ही मैं 'गीत गोविंद' के कवि-गायक के नाम का उल्लेख करने जा रहा था। उल्लेख न करने का हिसाब मैंने किसी तरह बिठा लिया था। मैंने ऐसा दिखाया जैसे कि मैं भूल गया हूं, लेकिन यह मुझ पर बड़ा बोझ बन गया है। सारे दिन मैं जयदेव के बारे में सोचता रहा। 'गीत गोविंद' के कवि-गायक का नाम यही है।

उनके नाम के उल्लेख को मैं क्यों टाल रहा था? उन्हीं के भले के लिए। वे संबोधि के करीब भी नहीं थे। 'दि बुक ऑफ मीरदाद' के रचनाकार मिखाइल नैयमी के नाम का मैंने उल्लेख किया; मैंने खलील जिब्रान का उल्लेख किया, और अन्य कई लोगों का: नीत्शे, दोस्तोवस्की, वाल्ट व्हिटमैन। ये लोग संबुद्ध नहीं हैं, लेकिन बहुत निकट हैं, एकदम किनारे पर; एक धक्का और ये लोग भीतर, मंदिर के भीतर होंगे। ये एकदम द्वार पर खड़े हैं, द्वार खटखटाने की इनमें हिम्मत नहीं है... और द्वार पर ताला भी नहीं लगा हुआ है। ये धक्का दें और द्वार खुल जाएगा। वह खुला ही हुआ है, उसे बस एक धक्के की जरूरत है, जैसे उन्हें एक धक्के की जरूरत है। इसलिए मैं इनका नाम उल्लेख करता हूं।

लेकिन जयदेव मंदिर के करीब भी नहीं हैं। यह चमत्कार है कि 'गीत गोविंद' उन पर अवतरित कैसे हुई। लेकिन परमात्मा के रहस्यों को कोई नहीं जानता–और याद रखना कोई परमात्मा नहीं है, यह केवल एक अभिव्यक्ति है। अस्तित्व के रहस्यों को कोई नहीं जानता, उसकी परिपूर्णता को। कभी यह बंजर भूमि पर बरस जाता है और कभी उपजाऊ भूमि पर भी नहीं बरसता। बस यह ऐसा ही है, इसमें कुछ भी नहीं किया जा सकता।

जयदेव बंजर भूमि हैं। यह अत्यधिक सुंदर कविता 'गीत गोविंद'–'परमात्मा का गान' उन पर अवतरित हुई। बिना यह जाने कि वे क्या कर रहे हैं उन्होंने इसे गाया होगा, रचा होगा। वे मुझे मंदिर के पास भी नहीं दिखते। इसीलिए मैं उनके नाम का उल्लेख करने के लिए तैयार नहीं था। यह उन्हें और अहंकारी बना सकता है। इसीलिए मैंने कहा, "उन्हीं के भले के लिए," लेकिन मुझे लगा कि उन बेचारे की कोई गलती नहीं–वे जैसे हैं, वैसे हैं–पर उन्होंने एक सुंदर शिशु को जन्म दिया है, और अगर मैंने शिशु का उल्लेख किया है तो फिर पिता के

नाम का भी उल्लेख होने दो; वरना लोग सोचेंगे कि शिशु लावारिस है। पिता चाहे लावारिस हो, पर शिशु ऐसा नहीं है।

मुझे बड़ी राहत अनुभव हो रही है, क्योंकि मुझे जयदेव से हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया है। लेकिन मेरे द्वार पर एक कतार लगी हुई है। तुम्हें पता नहीं है मैं किस झंझट में हूं। पहले मैंने उनके बारे में नहीं सोचा था, क्योंकि मैं कोई विचारक नहीं हूं और छलांग लगाने से पहले मैं कभी विचार नहीं करता। मैं छलांग लगा लेता हूं और फिर विचार करता हूं। यह तो ऐसे ही मैंने दस सुंदर पुस्तकों का उल्लेख कर दिया था। मैंने सोचा भी नहीं था कि अन्य बहुत से लोग आकर मुझे तंग करने लगेंगे। इसलिए दस और।

पहली: हेराक्लाइटस की 'फ्रैग्मेंट्स।' यह आदमी मुझे प्रिय है। हाशिये पर नोट के रूप में एक बात और बता दूं, कि मैं सभी को प्रेम करता हूं, लेकिन मैं सभी को पसंद नहीं करता। कुछ को मैं पसंद करता हूं और कुछ को नहीं, लेकिन प्रेम सभी को करता हूं। इसमें कोई संदेह नहीं है। मैं जयदेव से भी उतना ही प्रेम करता हूं जितना हेराक्लाइटस से, लेकिन हेराक्लाइटस को मैं पसंद भी करता हूं।

बहुत ही कम लोग हैं जिन्हें मैं उसी श्रेणी में रखता हूं जिसमें हेराक्लाइटस है। वस्तुतः ऐसा कहना भी सही नहीं है; कोई उन जैसा नहीं है। अब मैं वह कह रहा हूं जो हमेशा से कहना चाहता था। उन जैसा कोई नहीं, मैं दोहराता हूं, कोई ऐसा नहीं है जिसे उसी श्रेणी में रखा जा सके जिसमें हेराक्लाइट्स है। वे बहुत ऊपर हैं–विद्रोही और संबुद्ध, वे जो भी कह रहे हैं उसके परिणामों से भयभीत न होने वाले।

'फ्रैग्मेंटस' में वे कहते हैं–फिर वही किसी देवगीत, किसी शिष्य के नोट्स... हेराक्लाइटस ने लिखा नहीं है। कुछ तो बात होगी, कोई तो कारण होगा कि ये लोग क्यों नहीं लिखते हैं, लेकिन इसके बारे में बाद में बात करेंगे। 'फ्रैग्मेंटस' में हेराक्लाइटस कहते हैं: "एक ही नदी में तुम दुबारा नहीं उतर सकते।" और फिर वे कहते हैं: "नहीं, एक ही नदी में तुम एक बार भी नहीं उतर सकते..." यह अत्यधिक सुंदर है, और सत्य भी।

सब-कुछ बदल रहा है, और इतनी तेजी से बदल रहा है कि उसी नदी में दुबारा उतरने का उपाय नहीं है। तुम उसी नदी में एक बार भी नहीं उतर सकते। नदी निरंतर प्रवाहित हो रही है; प्रवाह, प्रवाह, सागर की ओर प्रवाह, असीम की ओर प्रवाह, अज्ञात में विलीन होने के लिए जा रही है।

आज की संध्या मेरी सूची में प्रथम है: हेराक्लाइटस।

दूसरी: पाइथागोरस की 'दि गोल्डन वर्सेस।' वह उन व्यक्तियों में से एक है जिसे सबसे अधिक गलत समझा गया। स्वभावतः, अगर तुम ज्ञानी हो, तो यह निश्चित है कि तुमको गलत ही समझा जाएगा। ज्ञानी होना बड़ा खतरनाक है, क्योंकि फिर तुम गलत समझे जाओगे। पाइथागोरस को उसके अपने शिष्यों ने भी नहीं समझा, उन्होंने भी नहीं समझा जिन्होंने 'दि गोल्डन वर्सेस' को लिखा। उन्होंने इसे यंत्रवत लिख दिया... क्योंकि पाइथागोरस की ऊंचाई तक उनका कोई भी शिष्य नहीं उठ पाया था, उनका एक भी शिष्य बुद्धत्व को उपलब्ध नहीं हुआ। और ग्रीकवासियों ने उनकी पूरी उपेक्षा की। अपने श्रेष्ठतम व्यक्तियों की उन्होंने उपेक्षा की: हेराक्लाइट्स, सुकरात, पाइथागोरस, प्लोटिनस। सुकरात की भी वे उपेक्षा करना चाहते थे, लेकिन सुकरात बहुत प्रतिभाशाली थे। इसीलिए उन्हें सुकरात को जहर देना पड़ा, क्योंकि वे लोग उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते थे।

लेकिन पाइथागोरस की पूरी तरह से उपेक्षा कर दी गई है, और उसके पास वह कुंजी थी जो गौतम बुद्ध, जीसस, या किसी दूसरे संबुद्ध व्यक्ति के पास होती है। एक बात और: न तो जीसस ने, न बुद्ध ने, और न ही

लाओत्सु ने कुंजी पाने के लिए उतना प्रयास किया जितना पाइथागोरस ने किया। उन्होंने सबसे अधिक श्रम किया। पाइथागोरस सर्वाधिक प्रामाणिक खोजी थे। उन्होंने अपना सब-कुछ दांव पर लगा दिया था। उन दिनों जो भी ज्ञात था उन सभी की उन्होंने संसार भर में यात्रा की; हर प्रकार के सदगुरुओं के साथ साधना की, हर प्रकार के रहस्य-विद्यालयों में प्रवेश लिया और उनकी शर्तों को पूरा किया। वे अपने आप में एक कोटि हैं।

तीसरी: एक ऐसा व्यक्ति जिसे बहुत कम लोग जानते हैं, उसके अपने देशवासी भी उससे अपरिचित हैं। उसका नाम है सरहा, और पुस्तक का नाम है 'दि सांग ऑफ सरहा'–'सरहा के गीत'–यह उसका तिब्बती शीर्षक है। कोई नहीं जानता कि इस पुस्तक को किसने लिखा। एक बात निश्चित है कि सरहा ने तो कभी नहीं लिखा, उन्होंने बस इसे गाया है। पर इस गीत में ऐसी सुरभि है कि यह आदमी जानता है, कि इसे संबोधि प्राप्त हो चुकी है। यह गीत किसी कवि की रचना नहीं है, बल्कि एक रहस्यदर्शी का आत्मानुभव है। इसमें बस कुछ ही पंक्तियां हैं, लेकिन उनका सौंदर्य और वैभव ऐसा है कि सितारों तक की चमक फीकी पड़ जाए।

'दि सांग ऑफ सरहा' का अनुवाद अभी तक नहीं हुआ है। मैंने इसे तिब्बत के एक लामा से सुना। मैं इसे बार-बार सुनना चाहता था, लेकिन उस लामा से इतनी बदबू आ रही थी कि मुझे कहना पड़ा "धन्यवाद..." लामाओं से बदबू आती है, क्योंकि वे कभी स्नान नहीं करते हैं। उस लामा की बदबू–और हर गंध से मुझे एलर्जी है–और बदबू इतनी तेज थी कि पूरा गीत सुन पाना मेरे लिए संभव नहीं था! मुझे डर था कि कहीं अस्थमा का दौरा न पड़ जाए।

सरहा के बारे में मैं बहुत कुछ बोल चुका हूं; वे तंत्र-विद्यालय के मूल-स्रोत हैं।

चौथी: दि सांग ऑफ तिलोपा, और उनके गीत के कुछ नोट्स जो उनके शिष्यों ने लिख कर रखे हैं। मैं सोचता हूं, अगर ये शिष्य न होते तो हम कितना कुछ चूक जाते। उनके सदगुरु ने जो कुछ भी कहा ये लोग बिना सोचे कि यह सही है या गलत बस लिखते जा रहे थे, जो बोला जा रहा था उसे बस यथासंभव ठीक रूप में लिखने का प्रयास कर रहे थे। और यह एक मुश्किल कार्य है। सदगुरु तो दीवाना होता है; वह कुछ भी बोल सकता है, वह कुछ भी गा सकता है, या वह मौन भी रह सकता है। हो सकता है कि वह अपने हाथ से कुछ इशारे करे, और उन इशारों को समझना होता है। लगातार तीस साल तक मेहर बाबा यही करते रहे। वे मौन रहे, बस हाथों से इशारे करते रहे।

क्या मेरी गिनती गलत चल रही है, देवगीत?

"नहीं, ओशो।"

बहुत अच्छा... कभी-कभी ठीक होना बहुत अच्छा लगता है। संख्याओं के साथ में वास्तव में अच्छा हूं। यह अजीब संयोग की बात है कि मैंने ठीक समय पर पूछा। संख्याओं के मामले में मैं हमेशा गड़बड़ कर जाता हूं। मैं गिनती नहीं कर सकता, इसका सीधा सा कारण यह है कि मेरे सम्मुख वह है जिसे गिना नहीं जा सकता, जो असीमित है। जो सत्य मेरे सम्मुख है वह न तो शब्दों में है न ही संख्याओं में। सत्य सबका अतिक्रमण कर जाता है, और यह इतना अदभुत है कि व्यक्ति भ्रमित हो ही जाता है। सब-कुछ उलटा-सीधा हो जाता है, अजीब सा। जब तुमने कहा कि मेरी गिनती ठीक है, तो यह मेरे लिए बड़ी प्रशंसा की बात है। लेकिन कृपया अब बताओ, कौन सा नंबर चल रहा था?

"नंबर पांच, ओशो।"

धन्यवाद।

पांचवीं: जिसके नाम का मैं उल्लेख करने जा रहा हूं वह संबुद्ध की भांति नहीं पहचाना गया है, क्योंकि उसे पहचानने के लिए कोई था ही नहीं। केवल संबुद्ध व्यक्ति ही दूसरे संबुद्ध को पहचान सकता है। इस व्यक्ति का नाम है, डी.टी. सुजुकी। ध्यान और झेन को आधुनिक जगत के सम्मुख रखने का जो प्रयास सुजुकी ने किया वह किसी और ने नहीं किया। सुजुकी ने पूरी जिंदगी झेन के अंतर्तम तत्व से पश्चिम को परिचित कराने का प्रयास किया।

संस्कृत शब्द 'ध्यान' का जापानी उच्चारण ही 'झेन' है। बुद्ध ने संस्कृत का उपयोग कभी नहीं किया; उन्हें इससे घृणा थी, इसका सीधा सा कारण यह था कि यह पुरोहितों की भाषा बन चुकी थी, और पुरोहित सदैव शैतान की सेवा में रहता है। बुद्ध ने बहुत सरल भाषा का उपयोग किया, जिसे उनके लोग नेपाल की घाटी में उपयोग करते थे। उनकी भाषा का नाम है: पाली। पाली में ध्यान को 'झान' कहते हैं। सीधे-सादे, बेपढ़े-लिखे, आम लोग किसी भाषा की बारीकियों को नहीं समझ सकते। वे उसे अपने अनुरूप ढाल लेते हैं। नदी में लुढ़कते हुए पत्थर की भांति ये शब्द गोल हो जाते हैं। इसीलिए आम लोगों द्वारा उपयोग किए गए हरेक शब्द में एक सुंदर गोलाई आ जाती है, एक विशेष सादगी। सामान्य लोगों के लिए ध्यान उच्चारित करना मुश्किल होता है; वे झान उच्चारित करते हैं। और जब झान शब्द चीन पहुंचा, तो 'चान' हो गया, और जब यह जापान पहुंचा, तो झेन बन गया। तुम देखते हो, हर जगह यही होता है, लोग हमेशा शब्दों को सीधा-सादा बना लेते हैं।

डी. टी. सुजुकी की 'झेन एंड जैपनीज कल्चर'–'झेन और जापानी संस्कृति' मेरी पांचवी पुस्तक है। इस व्यक्ति ने मानवता की इतनी सेवा की है कि उससे अधिक सेवा और कोई कर नहीं सकता। उसने अत्यधिक कार्य किया है। सारा संसार उसका ऋणी है और रहेगा। सुजुकी का नाम घर-घर में होना ही चाहिए। ऐसा है नहीं... लेकिन मैं कह रहा हूं कि ऐसा होना ही चाहिए। ऐसे लोग बहुत कम हैं जो सजग हैं, और जो लोग सजग हैं उनका यह उत्तरदायित्व है कि यह सजगता दूर-दूर तक फैल जाए।

छठवीं: मैं एक फ्रांसीसी का परिचय देने जा रहा हूं। तुम्हें आश्चर्य होगा। भीतर ही भीतर तुम अपने से पूछ रहे होगे, "एक फ्रांसीसी? और ओशो उसका नाम पाइथागोरस, हेराक्लाइट्स, सुजुकी के साथ सूचीबद्ध करवा रहे हैं? क्या वे वास्तव में पगला गए हैं?"

हां, पिछले पच्चीस वर्षों से, या कुछ और अधिक वर्षों से मैं कभी भी सामान्य नहीं रहा। उसके पहले मैं भी सामान्य था, लेकिन भगवान का धन्यवाद–लेकिन फिर याद रखना कि यह बस एक अभिव्यक्ति मात्र है, क्योंकि भगवान नहीं है, केवल भगवत्ता है। मैं इसे बताना नहीं भूलता, क्योंकि बहुत संभावना है कि मेरे ही लोग, मेरे ही शिष्य भगवान की पूजा करने लगें–या मुझे ही भगवान की तरह पूजने लगें। कहीं कोई भगवान नहीं है, कभी था भी नहीं।

नीत्शे गलत है जब वह कहता है कि "ईश्वर मर गया!"–इसलिए नहीं कि ईश्वर मरा नहीं है, बल्कि इसलिए कि जो कभी जीवित ही नहीं था, वह मर कैसे सकता है? मरने के पहले व्यक्ति को यह शर्त पूरी करनी होती है कि जीवित हो। यहीं पर सात्र भी गलत है; वह नीत्शे से राजी है। मैं कहता हूं "भगवान का धन्यवाद!"–मैंने इस शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि और कोई दूसरा शब्द नहीं है जो इसके स्थान पर उपयोग किया जा सके। लेकिन यह बस एक शब्द है, अर्थहीन। "भगवान का धन्यवाद" इसका इतना ही अर्थ है कि सब ठीक है, सुंदर है।

मुझें इतनी खुशी अनुभव हो रही है कि, देवगीत, जरा फिर से बताना कि छठवीं पुस्तक कौन सी थी जिसके बारे में मैं बात कर रहा था।

''एक फ्रांसीसी, ओशो।''

ठीक है। अभी मैंने उसका नाम नहीं बताया है। यह पुस्तक है ह्यूबर्ट बेनोइट की 'लेट-गो।' इस पुस्तक को प्रत्येक ध्यानी के पास होना चाहिए। किसी ने भी इतनी वैज्ञानिकता और काव्यात्मकता से नहीं लिखा है। यह एक विरोधाभास है, लेकिन वह इसमें कामयाब रहा है। ह्यूबर्ट बेनोइट की 'लेट-गो' सबसे अच्छी पुस्तक है, जो आधुनिक पश्चिमी जगत से निकली है। जहां तक पश्चिम का संबंध है, यह इस शताब्दी की सबसे अच्छी पुस्तक है। मैं पूरब को नहीं गिन रहा हूं।

सातवीं: रामकृष्ण की 'पैरेबल्स'–'रामकृष्ण की बोधकथाएं।' तुम्हें पता है मैं संतों को बहुत अधिक पसंद नहीं करता हूं। उसका अर्थ यह नहीं है कि मैं उन्हें थोड़ा-थोड़ा पसंद करता हूं–मैं उन्हें बिलकुल ही पसंद नहीं करता हूं। असल में, सच पूछो तो मैं उनसे घृणा करता हूं। संत बकवासी होते हैं, धूर्त होते हैं, और उनके भीतर कचरा भरा होता है। लेकिन रामकृष्ण उनमें से नहीं हैं–फिर से, भगवान का धन्यवाद! कुछ लोग तो ऐसे हैं जिनमें संतत्व है और वे संत नहीं हैं।

रामकृष्ण की 'बोधकथाएं' बहुत सरल हैं। बोधकथाएं सरल ही होती हैं। जीसस की बोधकथाओं को याद करो?–बस वैसी ही। यदि कोई बोधकथा जटिल हो तो वह किसी काम की नहीं रह जाती। बोधकथा की आवश्यकता ही इसलिए होती है कि उसे हर उम्र के बच्चे समझ सकें। हां, मेरा मतलब सभी उम्र के बच्चों से है। कुछ ऐसे बच्चे हैं जो दस वर्ष के हैं, और कुछ ऐसे बच्चे हैं जो अस्सी वर्ष के हैं, और इसी तरह से... लेकिन वे सभी बच्चे हैं जो सागर-तट पर खेल रहे हैं, सीपियां बटोर रहे हैं। रामकृष्ण की बोधकथाएं मेरी सातवीं पुस्तक है।

आठवीं: 'दि फेबल्स ऑफ ईसप'–'ईसप की दंतकथाएं।' अब ईसप कोई वास्तव में ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं है; वह कभी हुआ ही नहीं। बुद्ध ने अपने प्रवचनों में उन सभी बोथकथाओं का उपयोग किया है। जब सिकंदर भारत आया, तो इन बोधकथाओं को पश्चिम ले गया। हां, यह जरूर है कि बहुत सी चीजें बदल गईं, बुद्ध का नाम भी बदल गया। बुद्ध को बोधिसत्व कहा जाता था।

बुद्ध ने बताया है कि संबुद्ध दो प्रकार के होते हैं: एक है अर्हत, जो संबोधि तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन किसी और की चिंता नहीं करते; और दूसरे हैं बोधिसत्व, जो संबोधि प्राप्त करते हैं और दूसरे साधकों की सहायता के लिए अत्यधिक प्रयास करते हैं। 'बोधिसत्व' शब्द सिकंदर के साथ जाकर 'बोधिसत' बन गया। जो बाद में 'जोसेफस' हो गया; और फिर जोसेफस से ईसप बन गया। ईसप कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं है, लेकिन वे बोधकथाएं अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। आज की यह मेरी आठवीं पुस्तक है।

नौवीं: नागार्जुन की 'मूल माध्यमिक कारिका।' मुझे नागार्जुन बहुत अधिक पसंद नहीं हैं; वे बहुत अधिक दार्शनिक हैं, और मैं दार्शनिकता का विरोधी हूं। लेकिन उनकी 'मूल माध्यमिक कारिका,' संक्षेप में उनकी 'कारिकाएं'... 'मूल माध्यमिक कारिका' का अर्थ है मध्य-मार्ग का सारतत्व–मूल मध्य-मार्ग। अपनी कारिकाओं में वे उन अधिकतम गहराइयों तक पहुंच गए हैं जो शब्दों द्वारा संभव है। मैं इस पर कभी नहीं बोला। यदि मौलिक तत्व पर बोलना हो, तो सब से अच्छा तरीका है कि बिलकुल न बोला जाए, मौन रहा जाए। लेकिन यह पुस्तक अत्यधिक सुंदर है।

दसवीं: आज की संध्या के लिए मेरी अंतिम पुस्तक अजीब है; आमतौर पर कोई नहीं सोचेगा कि मैं इसे शामिल करूंगा। यह तिब्बती रहस्यदर्शी मारपा का महान कार्य है। उनके अनुयायी भी इसे नहीं पढ़ते हैं; यह पढ़ने के लिए नहीं है, यह एक पहेली है। तुम्हें इस पर ध्यान करना होगा। तुम्हें बस इसकी ओर देखते रहना होगा, और अचानक पुस्तक विलीन हो जाती है–इसके वक्तव्य विलीन हो जाते हैं, और बस चेतना बच रहती है।

मारपा बहुत अजीब आदमी थे। उनके सदगुरु मिलारेपा कहा करते थे, "मैं भी मारपा के सामने सिर झुकाता हूं।" किसी भी सदगुरु ने ऐसा कभी नहीं कहा, क्योंकि मारपा थे ही ऐसे...

मारपा से किसी ने एक बार कहा था, "क्या तुम्हें मिलारेपा पर भरोसा है? यदि हां, तो कूद जाओ आग में! वे तत्काल कूद गए! मारपा आग में कूद गए हैं यह जान कर सभी दिशाओं से लोग आग बुझाने दौड़ पड़े। जब आग बुझाई गई, तो वे अट्टाहास करते हुए बुद्धासन में बैठे मिले!

उन्होंने मारपा से पूछा: "आप हंस क्यों रहे हैं?"

उन्होंने कहा: "मैं हंस रहा हूं, क्योंकि श्रद्धा ही वह वस्तु है जिसे आग जला नहीं सकती है।"

यही वह व्यक्ति है जिनके सरल गीतों को मैं दसवीं पुस्तक के रूप में गिनता हूं—'दि बुक ऑफ मारपा।'

क्या मेरा समय समाप्त हो गया? मैं तुम्हें 'हां' कहते हुए सुन सकता हूं, यद्यपि मैं जानता हूं कि मेरा समय अभी भी नहीं आया। मेरा समय समाप्त कैसे होगा? मैं अपने समय से पहले आ गया हूं, इसीलिए मुझे गलत समझा गया है।

लेकिन जहां तक तुम्हारा संबंध है, तुम सही हो; मेरा समय पूरा हो गया है। और यह वास्तव में सुंदर है। इसके लिए कोई शब्द नहीं मिलते। यह इतना सुंदर है कि अब इसे समाप्त कर देना बेहतर है।

आज इतना ही।

सत्र-05

अब काम शुरू होता है...

"अथातो ब्रह्म जिज्ञासा–अब ब्रह्म की जिज्ञासा"... इस तरह से बादरायण अपनी महान पुस्तक की शुरुआत करते हैं, शायद महानतम। बादरायण की पुस्तक प्रथम है जिस पर आज मैं बोलने जा रहा हूं। वे अपनी महान पुस्तक 'ब्रह्मसूत्र' का प्रारंभ इस वाक्य से करते हैं: "ब्रह्म की जिज्ञासा।" पूरब में सभी सूत्र हमेशा इसी तरह से शुरू होते हैं "अब... अथातो" कह कर, इससे अन्यथा कभी नहीं।

बादरायण उनमें से एक हैं जिन्हें गलत ही समझा जाता है, इसका सरल सा कारण यह है कि वे बहुत गंभीर हैं। रहस्यदर्शी को इतना गंभीर नहीं होना चाहिए, यह कोई अच्छा गुण नहीं है। लेकिन वे ऐसे ब्राह्मण हैं जो हजारों वर्ष पहले हुआ करते थे, ब्राह्मणों में उठना-बैठना, ब्राह्मणों से बातचीत, और ब्राह्मण संसार के सर्वाधिक गंभीर लोग हैं। क्या तुम्हें पता है कि भारत के पास लतीफे नहीं हैं? इतने बड़े देश के लिए क्या यह आश्चर्य नहीं है कि यहां कोई लतीफा नहीं है? बिना लतीफों के ही इतना लंबा इतिहास! ब्राह्मण मजाक नहीं कर सकते, क्योंकि मजाक अपवित्र मालूम होता है, और वे पवित्र लोग हैं।

मैं समझ सकता हूं और बादरायण को क्षमा कर सकता हूं, लेकिन मैं यह बताना नहीं भूल सका कि वे गंभीर व्यक्ति थे। मुझे संकोच अनुभव हो रहा था कि उन्हें पुस्तकों की अपनी सूची में शामिल करूं या नहीं। यह संकोच उनकी गंभीरता के कारण हो रहा था। मीरदाद के विषय में मुझे कोई संकोच नहीं हुआ; उमर खय्याम की 'रुबाइयात' के बारे में भी मुझे संकोच नहीं हुआ। लेकिन बादरायण के ब्रह्मसूत्र के बारे में मुझे संकोच हुआ, जब कि इसे पूरब में महानतम ग्रंथों में से एक माना जाता है–और निश्चित ही यह है भी।

मैंने बहुत सी गंभीर पुस्तकें पढ़ी हैं, यहां तक कि उस दुष्ट संत जॉर्ज गुरजिएफ की 'ऑल एंड एवरीथिंग' भी, लेकिन जहां तक गंभीरता का प्रश्न है बादरायण के ब्रह्मसूत्र का कोई मुकाबला नहीं। वे अपनी गंभीरता में भी शिखर पर हैं। काश, वे थोड़ा हंस लिए होते!

ईसाइयत ऐसा मानती है कि जीसस कभी हंसे नहीं। मैं इसका खंडन करता हूं। मैं इसका पूरी तरह से खंडन करता हूं! बादरायण के बारे में यह संभव है; हो सकता है कि वे कभी न हंसे हों। वे इतने गंभीर हैं, बिलकुल गंभीर। इससे अधिक गंभीर पुस्तक की रचना नहीं की जा सकती है। इसे समझाने के लिए हजारों भाष्य लिखे गए कि उनका अर्थ क्या है।

सत्य के लिए किसी भाष्य की आवश्यकता नहीं है, लेकिन जब इसे गंभीर आवरण में बंद कर दिया जाता है, तो स्वाभाविक है कि भाष्यकार इसे समझाने आएं, और भाष्यकार हमेशा शैतान की ही सेवा करते हैं। अभी भी यह एक महान ग्रंथ है; बादरायण की गंभीरता के बावजूद यह महान है। बादरायण बड़ी कुशलता के साथ, बड़ी क्षमता के साथ, एक वैज्ञानिक की क्षमता के साथ परम शिखर को, सर्वोच्च को स्पर्श करते हैं।

भारत में किसी व्यक्ति को आचार्य तभी कहा जाता है जब वह इन तीन शास्त्रों पर भाष्य लिख चुका हो: पहला है, 'एक सौ आठ उपनिषद;' दूसरा है, 'श्रीमद्भगवद्गीता,' कृष्ण के दिव्य गीत; तीसरा है, सभी से अधिक महत्वपूर्ण, बादरायण का 'ब्रह्मसूत्र।' मैं इस पर कभी नहीं बोला। कई वर्षों तक मुझे 'आचार्य' कहा जाता रहा, और लोग मुझसे पूछते थे कि क्या मैं इन तीनों पर भाष्य लिख चुका हूं–गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र पर। मैं हंसता और कहता, "मैं केवल लतीफे सुनाता हूं। मैं कोई भाष्य वगैरह नहीं लिखता हूं। मुझे आचार्य कहा जाना एक मजाक है, इसे गंभीरता से मत लो।"

'ब्रह्मसूत्र।' 'ब्रह्म' को ईश्वर जाना और समझा जाता है, लेकिन ऐसा नहीं है। ईश्वर के बारे में ईसाइयत की जो धारणा है, कि ईश्वर ने जीसस क्राइस्ट के जन्म से चार हजार चार साल पहले दुनिया का निर्माण किया था, उससे ब्रह्म का कुछ भी लेना-देना नहीं है। जब मैं यह कह रहा हूं तो सोच रहा हूं कि अगर बादरायण मेरी बात सुन रहे होंगे, तो शायद वे भी हंसते होंगे, शायद उनकी गंभीरता खो गई होगी। 'ब्रह्म' का अर्थ ईश्वर नहीं है; 'ब्रह्म' का अर्थ है भगवत्ता, दिव्यता जिसने संपूर्ण अस्तित्व को व्याप्त कर रखा है... संपूर्ण, संपूर्ण की पवित्रता।

'सूत्र' का सीधा सा अर्थ है मार्ग। ब्रह्म के बारे में अधिक कुछ और नहीं कहा जा सकता है; इसके बारे में जो कुछ भी कहा जा सकता है वह केवल एक मार्ग है, एक संकेत है। परंतु संकेत भी सेतु बन सकता है, मार्ग सेतु बन सकता है, और बादरायण ने अपने सूत्रों में सेतु निर्मित कर दिया है।

बादरायण की गंभीरता के बावजूद मैं इस पुस्तक से प्रेम करता हूं। मुझे गंभीरता से इतनी अधिक घृणा है कि मुझे कहना पड़ा, "बादरायण की गंभीरता के बावजूद।" संसार की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक की रचना के लिए अब भी मैं उनसे प्रेम करता हूं। बादरायण के सूत्रों से 'बाइबिल' जैसी पुस्तकें कोसों दूर हैं, वे इसके पास भी नहीं फटक सकती हैं।

दूसरी: नारद का 'भक्ति-सूत्र।' नारद बादरायण से ठीक विपरीत हैं, और विपरीत को साथ रखना मुझे अच्छा लगता है। नारद और बादरायण को मैं एक ही कक्ष में रखना चाहूंगा और फिर उनके बीच जो भी घटित होगा उसका आनंद लूंगा। नारद हमेशा ही अपने साथ एकतारा रखा करते थे, यह एक ऐसा वाद्ययंत्र है जिसमें एक ही तार होता है। नारद हमेशा अपना एकतारा साथ रखा करते थे, बजाया करते थे, गाया करते थे, नाचा करते थे। बादरायण तो इस सबको बिलकुल भी सहन नहीं करते। मैं हर तरह के लोगों को सहन कर सकता हूं। बादरायण तो नारद पर चीखे होते और चिल्लाए होते। नारद उस तरह के व्यक्ति नहीं थे कि वे बादरायण की बात सुनते; वे अपना एकतारा बजाते ही रहते, और बादरायण को चिढ़ाने के लिए और जोर से गाने लगते। दोनों को एक ही कक्ष में देख कर मुझे तो मजा ही आ जाता। इसीलिए दूसरी पुस्तक जो मैंने चुनी वह है नारद का 'भक्ति-सूत्र।'

उनके सूत्र "अथातो भक्ति जिज्ञासा–अब भक्ति की जिज्ञासा" से प्रारंभ होते हैं। भक्ति की जिज्ञासा श्रेष्ठतम खोज है, श्रेष्ठतम जिज्ञासा है। अन्य सभी बातें छोटी पड़ जाती हैं, यहां तक कि परमाणु ऊर्जा भी। तुम अलबर्ट आइंस्टीन की क्षमता के वैज्ञानिक हो सकते हो, लेकिन जब तक तुम प्रेम में न पड़ो तब तक तुम्हें पता भी न चलेगा कि असली खोज क्या है। और केवल प्रेम ही नहीं, बल्कि प्रेम+जागरूकता... तब यह प्रेम की जिज्ञासा बन जाती है, जो कि संसार में सबसे कठिनतम कार्य है।

मैं फिर से दोहरा दूं, संसार में यह सबसे कठिनतम कार्य है–प्रेम+जागरूकता। लोग प्रेम में गिरते हैं; लोग प्रेम में होश खो देते हैं। उनका प्रेम बस शारीरिक होता है, वह नीचे की ओर खींचता है। उन्हें धरती की ओर नीचे खींच लिया जाता है। लेकिन नारद पूरी तरह से अलग ही प्रेम की बात कर रहे हैं: प्रेम ध्यान की तरह, जागरण की तरह। या वैज्ञानिक भाषा में कहा जाए तो प्रेम ऊर्ध्वगमन की तरह, गुरुत्वाकर्षण के विपरीत। गुरुत्वाकर्षण को कब्रों में रहने वालों के लिए छोड़ दो; तुम ऊपर की ओर उठो, ऊंचे उठो! और जब कोई प्रेम में उठने लगता है, सितारों की ओर उड़ने लगता है, तो वही है 'अथातो भक्ति जिज्ञासा।'

तुम सब इतने चिंतित क्यों दिख रहे हो? मैं राक्षसों को भी प्रेम करता हूं–उन्हें काम करने दो, वे जितना शोर मचाना चाहें, उन्हें मचाने दो। और जहां तक मेरा संबंध है वे मुझे परेशान नहीं कर सकते हैं, और जहां तक

तुम्हारा संबंध है तुम पहले से ही परेशान हो, इससे अधिक वे कर भी क्या सकते हैं? इसलिए सब-कुछ बिलकुल ठीक है, वैसा ही है जैसा होना चाहिए।

नारद की पुस्तक को मैंने अत्यधिक प्रेम किया है। मैंने इस पर बोला भी है, लेकिन अंग्रेजी में नहीं, क्योंकि अंग्रेजी मेरी भाषा नहीं है, और इसके अलावा यह बहुत वैज्ञानिक, गणितीय और आधुनिक भाषा है। नारद पर मैं हिंदी में, अपनी मातृभाषा में बोला हूं, जिसमें मैं ज्यादा आसानी से गा सकता हूं। यह मेरे हृदय के निकट है।

मेरे एक प्रोफेसर कहा करते थे, "तुम विदेशी भाषा में प्रेम नहीं कर सकते, और न ही तुम झगड़ा कर सकते हो।"

जब झगड़े का मौका आता है तो आदमी अपने हृदय की भाषा बोलना चाहता है। जब प्रेम का क्षण आता है तो भी ऐसा ही होता है, बल्कि और भी अधिक, क्योंकि यहां और अधिक गहराई की जरूरत है।

जब मैं अंग्रेजी में बोलता हूं तो मैं गलत बोलने के लिए बाध्य हूं, क्योंकि यह दोहरा कार्य है। मैं अब भी हिंदी में बोल रहा हूं और फिर इसका अंग्रेजी में अनुवाद कर रहा हूं। यह एक कठिन कार्य है। सीधे ही अंग्रेजी में बोल पाना मेरे लिए अभी तक संभव नहीं हो पाया है, भगवान का धन्यवाद! याद रखना, भगवान का अस्तित्व नहीं है; उसे बस इसीलिए बनाया गया है कि हम किसी को धन्यवाद दे सकें। मैं आशा करता हूं कि नारद पर मैंने जो बोला है कोई उसका अनुवाद करेगा।

बहुत से विषयों को आवश्यक समझते हुए मैं उन पर हिंदी में बोला हूं, उन पर मैं अंग्रेजी में नहीं बोला, क्योंकि ऐसा संभव नहीं था। और इससे विपरीत भी हुआ है; मैं बहुत से विषयों के बारे में अंग्रेजी में बोला हूं, जिन पर हिंदी में बोल पाना संभव नहीं था। मेरा काम थोड़ा अजीब हो गया है। जब मेरी सभी पुस्तकों का हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद हो जाएगा, और अंग्रेजी से हिंदी में, तो तुम आज की तुलना में और अधिक किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाओगे, तुम इस समय जितना उलझे हुए हो उससे और अधिक उलझ जाओगे–और तब मैं ठहाका लगा कर हंसूंगा। मैं शरीर में रहूं या न रहूं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; मैं जी भर कर हंसूंगा, यह मेरा वादा रहा, जहां भी मैं होऊं! मैं ब्रह्मांड में कहीं तो होऊंगा ही। मैं तुम्हें उलझन में देख कर, घबड़ाए हुए, सिर हिलाते हुए, तुम्हें भरोसा नहीं आएगा, क्योंकि मैंने अलग-अलग आयामों में इन दोनों भाषाओं में बोला है... मैंने अंग्रेजी में बोलना केवल इसलिए चुना, क्योंकि एक ऐसा आयाम है जिसे हिंदी में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

तीसरी पुस्तक है पंतजलि का 'योग-सूत्र।' बादरायण बहुत गंभीर हैं, नारद बहुत गैर-गंभीर हैं, पतंजलि ठीक मध्य में हैं, ठीक बीच में: न तो गंभीर और न ही गैर-गंभीर, उनमें एक वैज्ञानिक की आत्मा है। मैं पतंजलि पर दस भागों में बोल चुका हूं, इसलिए उनके विषय में कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है। दस भागों के बाद कुछ और कहना कठिन है, कुछ और जोड़ना कठिन है... बस एक ही बात है कि उस व्यक्ति से मुझे प्रेम है।

चौथी: कबीर, 'दि सांग्स ऑफ कबीर'–'कबीर के गीत।' संसार में इनके जैसा कुछ भी नहीं है। कबीर अविश्वसनीय रूप से सुंदर हैं। एक बे-पढ़ा-लिखा व्यक्ति, जुलाहे के घर जन्मा, जिसे कोई जानता नहीं... उनकी मां ने उन्हें गंगा-तट पर छोड़ दिया था। निश्चित ही वे नाजायज संतान रहे होंगे। लेकिन यह सिर्फ जायज संतान होना ही पर्याप्त नहीं है; वे निश्चित ही नाजायज संतान रहे होंगे, लेकिन उनका जन्म प्रेम के द्वारा हुआ था, और प्रेम असली कानून है। मैं कबीर पर भी बहुत बोला हूं, इसलिए कुछ और जोड़ने की आवश्यकता नहीं है सिवाय

इसके कि बार-बार मैं कहूंगा, ''कबीर, मैंने तुम्हें इस तरह प्रेम किया है जैसा किसी और व्यक्ति से कभी नहीं किया।''

मेरी गिनती ठीक है न?

''हां, ओशो।''

यह तो बहुत अच्छी बात है! शैतान मुझे बिलकुल तंग नहीं कर सकते!

पांचवीं: अब मैं एक महिला का जिक्र करता हूं। मैं बार-बार सोच रहा था कि किसी महिला का जिक्र करूं, लेकिन द्वार पर पुरुषों ने बड़ी भीड़ लगा रखी थी–वे लोग बहुत ही अशिष्ट हैं!–और वे किसी महिला को भीतर नहीं आने दे रहे थे। और वह महिला किसी तरह अंदर आ ही गई है... हे भगवान, क्या महिला है! मैडम ब्ला-ब्ला (बकबक) ब्लावट्स्की! मैं ब्लावट्स्की को हमेशा इसी तरह बुलाता हूं: ब्ला-ब्ला। उसे ब्ला-ब्ला लिखने में, बकवास लिखने में महारत हासिल थी–राई का पहाड़ बना देना, व्यर्थ के बारे में भी बहुत कुछ लिख देना। और मैं जानता था कि वह अंदर आने वाली पहली महिला होगी। वह एक सशक्त महिला थी। वह किसी तरह इन सभी लोगों–पतंजलियों, कबीरों और बादरायणों को किनारे ढकेलते हुए अपनी पुस्तक 'दि सीक्रेट डॉक्ट्रिन' के सात भागों के साथ अंदर आने में सफल हो गई है। वह मेरी पांचवीं पुस्तक है। यह लगभग एक विश्वकोष, एनसाइक्लोपीडिया है–'एनसाइक्लोपीडिया इसोटेरिका।' जहां तक रहस्य-विद्या का संबंध है, मैं समझता हूं कि ब्लावट्स्की का मुकाबला कोई नहीं कर सकता–केवल मुझे छोड़ कर; मैं सात सौ भाग लिख सकता हूं। इसीलिए मैं 'दि सीक्रेट डॉक्ट्रिन' पर बोलने से बच रहा था: क्योंकि अगर मैं 'दि सीक्रेट डॉक्ट्रिन' के सात भागों पर बोलूंगा, तो इंशाअल्लाह, परमात्मा की मर्जी होगी तो मैं सात सौ भाग बना दूंगा, इससे कम नहीं।

मुझे बताया गया है कि अब तक मैं तीन सौ छत्तीस पुस्तकें बोल चुका हूं। हे परमात्मा! परमात्मा बड़ा दयालु है–दयालु इसलिए कि मुझे उन्हें नहीं पढ़ना पड़ेगा। उनमें से किसी को मैंने पढ़ा भी नहीं है। लेकिन ब्लावट्स्की इसमें से भी कुछ निकाल लेती, इसी को मैं गुह्य-विज्ञान कहता हूं। तीन सौ और छत्तीस: तीन-तीन-छह, अर्थात तीन+तीन छह होते हैं...छियासठ; छह+छह बारह होते हैं...एक+दो...फिर वही तीन! जैसे ही तुम तीन पर आते हो तुम रहस्यवादी को रोक नहीं सकते; चाबी मिल गई है। रहस्यवादी उन आयामों में ले जाएगा जिसकी तुमने कभी कल्पना भी न की हो। 'तीन' सभी द्वारों को खोलने के लिए प्रर्याप्त है, चाहे ताला लगा हो या न लगा हो।

ब्लावट्स्की, बेचारी महिला–मुझे उस पर दया भी आती है और मुझे उससे प्रेम भी है, उसके चेहरे के बावजूद, जो कि प्यारा नहीं है, आकर्षक भी नहीं है, प्यारे की तो बात ही क्या कहें! उसके चेहरे का उपयोग केवल बच्चों को डराने के लिए किया जा सकता है जब वे कुछ उपद्रव कर रहे हों। ब्लावट्स्की का चेहरा बहुत कुरूप था–लेकिन मुझे उस महिला पर दया आती है: पुरुषों की दुनिया में, पुरुषों द्वारा बनाई गई दुनिया में, पुरुषों द्वारा शासित दुनिया में वह अकेली महिला है जिसने आवाज बुलंद की, जो छा गई, और उसने पहली बार किसी महिला द्वारा स्थापित एक धर्म की स्थापना की–थियासॉफी। उसने बुद्ध, जरथुस्त्र, मोहम्मद के साथ मुकाबला किया, और इसके लिए मैं उसे धन्यवाद देता हूं। किसी को तो यह करना ही था। पुरुष को उसकी औकात बतानी ही चाहिए। इसके लिए मैं उसे धन्यवाद देता हूं।

'दि सीक्रेट डॉक्ट्रिन,' यद्यपि इसमें गुह्य-विज्ञान का ढेर सारा कचरा है, लेकिन इसमें बहुत से सुंदर हीरे भी हैं और कमल के अनेक फूल भी। इसमें ढेर सारा कचरा है, क्योंकि वह संग्रह करती रहती थी। वह जहां-जहां से संभव हो वहां-वहां से हर तरह का कूड़ा-करकट इकट्ठा करती रहती थी बिना इसकी फिकर किए कि वह

उपयोगी है या नहीं। वह निरर्थक बकवास को भी व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में माहिर थी। बहुत व्यवस्थित महिला थी। लेकिन इसमें थोड़े से–यह कहते हुए दुख होता है कि थोड़े से–यहां-वहां हीरे मिल जाते हैं।

कुल मिला कर पुस्तक बहुत काम की नहीं है। मैं केवल इसे इसीलिए शामिल कर रहा हूं ताकि मेरी सूची में कुछ महिलाएं भी हों, और मुझे पुरुषों का पक्षधर न समझा जाए। जो कि मैं नहीं हूं। मैं महिलाओं का पक्षधर हो सकता हूं, लेकिन पुरुषों का पक्षधर कभी भी नहीं हो सकता।

छठवीं: 'दि सांग्स ऑफ मीरा'–'मीरा के गीत।' ब्लॉवट्स्की के बाद मुझे मीरा को शामिल करना ही है, चीजों को फिर से थोड़ा सुंदर बनाने के लिए, बस संतुलित करने के लिए। ब्लॉवट्स्की बहुत भारी भरकम है और उसके साथ संतुलन बनाने के लिए कुछ और महिलाओं की जरूरत होगी। मैं वह भी करूंगा। छठवीं है 'मीरा के गीत;' वे आज तक किसी भी स्त्री या पुरुष द्वारा गाए गए गीतों में सबसे सुंदर हैं। उनका अनुवाद करना असंभव है।

मीरा कहती है: "मैं तो प्रेम दीवानी–मैं प्रेम में पागल हूं, इस कदर पागल होकर प्रेम किया है कि मैं पागल हूं, मैं पागल हूं, पागल हूं!" शायद इससे तुम्हें थोड़ा सा इशारा मिल जाए कि वह किस प्रकार के गीत गाती थी। वह राजकुमारी थी, रानी थी, परंतु वह राजमहल छोड़ राह पर भिक्षा मांगने लगी। अपनी 'वीणा' बजाते हुए, नाचते हुए वह बाजार में, गांव-गांव में, नगर-नगर में, शहर-शहर में जाकर पूरे दिलोजान से अपने हृदय के गीत गाने लगी। मीरा पर मैंने हिंदी में बोला है; जो कुछ मैंने कहा है किसी दिन कोई दीवाना उसका अनुवाद कर सकता है।

सातवीं: एक और महिला... मैं तो बस उस भारी भरकम ब्ला-ब्ला ब्लावट्स्की के साथ संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा हूं। वह वास्तव में भारी थी, सचमुच में भारी भरकम, कोई तीन सौ पौंड की रही होगी! एक महिला और तीन सौ पौंड की! वह एक क्षण में तुम्हारे मोहम्मद अली जैसे को उठा कर फेंक सकती थी। वह तुम्हारे तथाकथित महानतम लोगों को अपने पैरों तले कुचल सकती थी और उनका पता भी नहीं चलता। एक असली महिला–तीन सौ पौंड की! आश्चर्य नहीं कि उसे कोई प्रेमी नहीं मिला, केवल अनुयायी मिले। स्वाभाविक है, स्पष्ट है कि इस प्रकार की महिला से तुम प्रेम नहीं कर सकते। अगर वह तुम्हारे साथ जोर-जबरदस्ती करे तो तुम केवल उसकी आज्ञा का पालन कर सकते हो। ब्लावट्स्की के साथ संतुलन बनाने के लिए सातवीं है 'दि सांग्स ऑफ सहजो'–'सहजो के गीत।'

एक और महिला, सहजो। उसका नाम भी काव्यात्मक है; इसका अर्थ है 'सहजता का सारभूत तत्व।' मैं सहजो पर बोला हूं, और हिंदी में बोला हूं, क्योंकि अंग्रेजी मुझे उतना काव्यात्मक होने नहीं देती। अंग्रेजी भाषा में मुझे बहुत काव्य दिखाई नहीं देता, और कविता के नाम पर जो मैं देखता हूं वह इतना काव्यरहित है कि मुझे आश्चर्य होता है कि इसके प्रति कोई विद्रोह क्यों नहीं करता है। ऐसे लोग क्यों नहीं हैं जो अंग्रेजी भाषा को नये सिरे से प्रारंभ करें, लेकिन काव्यात्मक ढंग से? यह दिन प्रतिदिन ज्यादा से ज्यादा वैज्ञानिकों की, तकनीशयनों की, या और सही कहा जाए तो टेक्नालॉजी की, प्रौद्योगिकी की भाषा होती जा रही है। यह दुर्भाग्य है। इसकी केवल आशा की जा सकती है कि किसी दिन जो मैंने सहजो पर बोला है वह पूरे संसार को पता चलेगा।

आठवीं: एक और महिला, क्योंकि अभी भी हैवी वेट चैम्पियन ब्लावट्स्की के साथ मैं संतुलन नहीं बना पाया हूं। लेकिन यह महिला उसे संतुलित कर देगी। वह एक सूफी है; उसका नाम है, राबिया अल-अदाबिया।

अल-अदाबिया का मतलब है 'अदाबिया गांव से।' राबिया उसका नाम है, अल-अदाबिया उसका पता है। सूफियों ने उसे इसी नाम से पुकारा: राबिया अल-अदाबिया। राबिया के जीवन-काल में ही उसका गांव मक्का बन गया। पूरी दुनिया से यात्री, हर जगह के खोजी राबिया की झोपड़ी खोजते हुए चले आते थे। वह वास्तव में एक खूंखार फकीर थी; हाथ में हथौड़ा लेकर वह किसी की भी खोपड़ी खोल सकती थी। उसने वास्तव में कई खोपड़ियां तोड़ दीं और छिपे हुए सारतत्व को उजागर कर दिया था।

एक बार उसकी तलाश करता हुआ, उसे खोजता हुआ, हसन उसके पास आया। वह उसके साथ ठहरा हुआ था, सुबह की प्रार्थना करने के लिए हसन ने कुरान मांगी। राबिया ने उसे अपनी कुरान दे दी। उसे देख कर हसन तो चकित हो गया; उसने कहा, "यह तो कुफ्र है। किसने किया है यह?" राबिया ने कुरान में सुधार कर दिया था! उसने कई स्थानों पर कई शब्दों को काट दिया था। कहीं तो उसने पूरा पैराग्राफ ही काट दिया था। हसन ने कहा, "इसकी इजाजत नहीं है। कुरान में सुधार नहीं किया जा सकता। पैगंबर, खुदा के आखिरी संदेशवाहक की बात को कौन बदल सकता है?" इसीलिए मुसलमान उन्हें आखिरी पैगंबर कहते हैं–क्योंकि मोहम्मद के बाद कोई और पैगंबर नहीं होगा। तो उनके कहे हुए शब्दों में कौन सुधार कर सकता है? वे सही हैं, और उनमें सुधार नहीं किया जा सकता।

राबिया हंसी और बोली: "मुझे परंपरा की कोई परवाह नहीं है। मैंने खुदा को रू-ब-रू देखा है, और मैंने अपनी अनुभूति के अनुरूप किताब को बदल दिया है। यह मेरी किताब है।" उसने कहा: "तुम कोई एतराज नहीं उठा सकते। यह मेरी चीज है। तुम्हें शुक्रिया अदा करना चाहिए कि मैंने तुम्हें इसे पढ़ने दिया। मुझे अपनी अनुभूति के प्रति सच्चा होना चाहिए, किसी दूसरे की अनुभूति के प्रति नहीं।"

यह है राबिया, एक अविश्वसनीय महिला। मैं उसे अपनी सूची में शामिल कर रहा हूं। वह मैडम ब्लावट्स्की को उसकी अपनी औकात दिखाने के लिए काफी है। फिर से मैं कहूंगा, राबिया ने स्वयं कुछ भी नहीं लिखा है, केवल शिष्यों के नोट्स हैं, जैसे देवगीत के। राबिया बिना संदर्भ के कुछ बोल देगी–किसी को संदर्भ का पता भी न चलेगा; अचानक फिर कुछ बोल देगी, और उसे लिख लिया जाएगा। इसी तरह की कई छोटी कहानियां उसके बारे में हैं, और उसका खुद का जीवन अपने आप में एक कहानी हो गया है। मैं उसे प्रेम करता हूं।

मीरा सुंदर है, लेकिन बिना नमक की, बस मीठी। राबिया में बहुत नमक है। तुम्हें पता ही है कि मुझे डायबिटीज है, और मैं मीरा को बहुत ज्यादा नहीं पी सकता हूं और न खा सकता हूं–देवराज इसकी अनुमति नहीं देगा। लेकिन राबिया ठीक है, जितना नमक चाहूं ले लूं। असल में, मुझे चीनी से घृणा है और सैकरीन से तो और भी ज्यादा, कृत्रिम चीनी जिसे डायबिटीज वालों के लिए विशेष रूप से बनाया गया है–लेकिन नमक मुझे प्रिय है।

जीसस ने अपने शिष्यों से कहा था: तुम पृथ्वी के नमक हो। मैं राबिया के बारे में कहूंगा: राबिया, वे सभी महिलाएं जो कभी इस पृथ्वी पर हुई हैं और कभी होंगी, तुम उन सभी का नमक हो।

नौवीं: नानक, सिक्ख धर्म के संस्थापक, उनके गीत। उन्होंने अपने एक ही शिष्य मरदाना के साथ उस समय के ज्ञात पूरे संसार की यात्रा की। मरदाना यानी पौरुष से भरा हुआ–'वास्तव में वीर।' शिष्य होने के लिए वीर होना आवश्यक है। नानक गाते थे और मरदाना अपना सितार बजाते थे, और इसी तरह वे सारे संसार में परम की सुगंध फैलाते घूमते रहे। उनके गीत इतने सुंदर हैं कि मेरी आंखों में आंसू ले आते हैं। केवल उनके गीतों से एक नई भाषा का जन्म हो गया। उन्हें न तो व्याकरण से मतलब था, न भाषा के कायदे-कानूनों से, उन्होंने

अपने गीतों से ही पंजाबी भाषा को रचा है। यह एक बहुत शक्तिशाली भाषा है, ठीक तलवार की पैनी धार की तरह।

दसवीं: मैं हमेशा शंकराचार्य पर बोलना चाहता था–पहले वाले, वर्तमान वाले पर नहीं–असली शंकराचार्य पर, आदि शंकराचार्य पर। मैंने उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'विवेक-चूड़ामणि'–'जागरूकता की शिरोमणि' पर बोलने का निश्चय किया था। अंतिम क्षण में... जैसा कि तुम जानते हो, मैं पागल आदमी हूं; और अंतिम क्षण में मैंने यह निर्णय लिया कि मैं इस पर न बोलूं। कारण सीधा साफ है: इस पुस्तक में प्रेम के बजाय तर्क अधिक है, और मुझे उस तर्क को झेलना पड़ता। यह छोटी-मोटी पुस्तक नहीं है। यह एक बड़ी पुस्तक है और मैं आठ महीने लगातार इस पर बोलने वाला था। यह एक लंबी यात्रा होती, इसलिए इसे छोड़ देना ही बेहतर था। तो मैंने इस पर न बोलने का निर्णय लिया। लेकिन जिन श्रेष्ठ पुस्तकों को मैं यहां गिन रहा हूं उनमें इसको शामिल किया जाना चाहिए।

निश्चित ही शंकराचार्य की 'विवेक-चूड़ामणि' में यहां-वहां हीरे हैं, पुष्प हैं, सितारे हैं। लेकिन बीच-बीच में ब्राह्मणों की बकवास इतनी अधिक और इतनी घनी है कि मैं इसे सहन नहीं कर सका। लेकिन पुस्तक श्रेष्ठ है–हीरों की खदान को तुम सिर्फ इसलिए नहीं छोड़ सकते हो कि उसमें पत्थर बहुत हैं और चारों ओर बहुत सा कीचड़ है।

ग्यारहवीं: और इस श्रृंखला की अंतिम: हजरत मोहम्मद की 'कुरान।' कुरान ऐसी किताब नहीं है जिसे पढ़ा जाए, बल्कि ऐसी किताब है जिसे गाया जाए। अगर तुम इसे पढ़ोगे तो चूक जाओगे। अगर इसे गाओगे तो इंशाअल्लाह शायद पा ही जाओ।

'कुरान' को किसी विद्वान या दार्शनिक ने नहीं लिखा था। मोहम्मद एकदम अनपढ़ थे। वे अपने हस्ताक्षर भी नहीं कर सकते थे। लेकिन वे भगवत्ता से अभिभूत हो जाते थे। अपनी सरलता के कारण वे चुन लिए गए थे और गाने लगे, और वह गीत 'कुरान' है।

मैं अरबी भाषा नहीं समझता, लेकिन मैं कुरान समझता हूं, क्योंकि मैं लय को, और अरबी सुरों की लय के सौंदर्य को समझ सकता हूं। अर्थ की परवाह कौन करता है? जब तुम एक फूल को देखते हो तो क्या तुम पूछते हो, ''इसका अर्थ क्या है?'' फूल अपने आप में पर्याप्त है। जब तुम आग की लपट देखते हो तो क्या तुम पूछते हो, ''इसका अर्थ क्या है?'' लपट अपने आप में पर्याप्त है। इसका सौंदर्य ही इसका अर्थ है। अगर यह लयबद्ध है तो इसकी अर्थहीनता ही इसका अर्थ है।

ऐसी ही कुरान है, और मैं आभारी हूं कि परमात्मा ने मुझे अवसर दिया–और ध्यान रहे, ईश्वर कहीं नहीं है, यह एक अभिव्यक्ति मात्र है। मुझे कोई अवसर नहीं दे रहा है, इंशाअल्लाह, परमात्मा का शुक्र है कि मुझे इस श्रृंखला को कुरान के साथ समाप्त करने का अवसर मिला, जो सबसे सुंदर, सबसे अर्थहीन, और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन फिर भी मनुष्य-जाति के संपूर्ण इतिहास में सबसे अतार्किक किताब है।

सत्र-06

अब पोस्टस्क्रिप्ट, पश्चलेख। पिछले सत्र में जब मैंने कहा था कि यह उन पचास पुस्तकों की श्रृंखला का अंत है, जिनको मुझे अपनी सूची में शामिल करना था, यह तो मैंने बस ऐसे ही कह दिया था। मेरा मतलब यह नहीं था कि मेरी प्रिय पुस्तकों का अंत हो गया है, बल्कि संख्या से था। मैंने इसलिए पचास चुनी थी, क्योंकि मुझे लगा कि वह एक सही संख्या होगी। फिर भी निर्णय तो लेना ही पड़ता है, और सभी निर्णय स्वैच्छिक होते हैं। लेकिन आदमी प्रस्ताव रखता है और परमात्मा निपटारा करता है–परमात्मा, जो कि है नहीं।

जब मैंने कहा था कि यह श्रृंखला का अंत है, तो वह भीड़ जो मुझे तंग कर रही थी–'गीत गोविंद' के जयदेव, 'दि सीक्रेट् डॉक्ट्रिन' की मैडम ब्ला-ब्ला ब्लावट्स्की, और पूरी मंडली, उनमें बहुतों से तो मैं परिचित हूं लेकिन पहचानना भी नहीं चाहता, मेरी सूची में उन्हें शामिल करने की बात तो बहुत दूर है। जैसे ही उन्होंने सुना कि यह श्रृंखला का अंत है, वे सभी अपने-अपने रास्ते चले गए।

तब तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा, तब मुझे जीसस का वक्तव्य का मतलब दिखाई पड़ा: धन्य हैं वे जो विनम्र हैं, क्योंकि प्रभु का राज्य उन्हीं का है। वे यह भी कहते हैं: धन्य हैं वे जो अंत में खड़े हैं, आखिर में, जो आगे आने का प्रयास नहीं करते–संक्षेप में कहें, जो आगे आने के लिए किसी को धक्का नहीं देते, जो बस खड़े रहते हैं और प्रतीक्षा करते हैं। जब भीड़ छंट गई तो मैंने उन थोड़े से धन्यभागियों को देखा; इसलिए इस पोस्टस्क्रिप्ट की आवश्यकता पड़ी।

मुझे खुद भी भरोसा नहीं हो पाया कि मैंने गौतम बुद्ध के 'धम्मपद' को सम्मिलित नहीं किया था। गौतम बुद्ध अंतिम पंक्ति में शांत बैठे थे। मैं उस व्यक्ति को जितना प्रेम करता हूं उतना मैंने किसी को भी नहीं किया है। मैं उन पर अपने पूरे जीवन भर बोलता रहा हूं। दूसरों पर बोलते समय भी मैं उन पर बोलता रहा हूं। इसे लिख लो, यह एक स्वीकृति है। बुद्ध को बीच में लाए बिना मैं जीसस पर नहीं बोल सकता; बुद्ध को बीच में लाए बिना मैं मोहम्मद पर नहीं बोल सकता। यह और बात है कि उनका उल्लेख मैं सीधे करूं या न करूं। बुद्ध को बीच में लाए बिना मेरे लिए बोलना सच में असंभव है। वे ही मेरा खून, मेरी हड्डी-मांस-मज्जा हैं। वे मेरा मौन हैं, और मेरा संगीत भी। जब मैंने उन्हें वहां बैठे हुए देखा तो मुझे स्मरण आया। मैं उनसे क्षमा भी नहीं मांग सकता, यह बात अक्षम्य है।

'धम्मपद' का शाब्दिक अर्थ है 'सत्य का मार्ग,' या और ज्यादा सही होगा 'सत्य के पदचिह्न।' तुम्हें विरोधाभास दिख रहा है?

भीतर आते हुए
बाहर जाते हुए
जल-पंछी
नहीं छोड़ता है कोई पदचिह्न,
और न ही उसे जरूरत है किसी मार्गदर्शक की।

सत्य को कहा नहीं जा सकता। उसका कोई पदचिह्न भी नहीं होता है। आकाश में उड़ते पक्षी कोई पदचिह्न नहीं छोड़ते... और बुद्धपुरुष आकाश के पक्षी हैं। लेकिन बुद्धपुरुष हमेशा विरोधाभासों में बोलते हैं, और यह बात सुंदर है कि कम से कम वे बोलते तो हैं। अपनी बात का खंडन किए बिना वे बोल नहीं सकते, यह

उनकी मजबूरी है। सत्य बोलने का मतलब है अपनी ही बात का खंडन करना। और कुछ न बोलना भी अपनी ही बात का खंड़न करना है क्योंकि जब तुम कुछ भी नहीं बोलने का प्रयास करते हो तो भी तुम्हें पता है कि तुम्हारा मौन भी कुछ और नहीं, बल्कि एक अभिव्यक्ति है, भले ही बिना शब्दों की है, लेकिन फिर भी है तो अभिव्यक्ति ही।

बुद्ध ने अपनी श्रेष्ठतम पुस्तक नाम 'धम्मपद' रखा, और इसमें विरोधभास ही विरोधभास है। वे विरोधाभासों से इतने अधिक भरे हुए हैं, और यकीन मानिए, मेरे अलावा उन्हें कोई नहीं हरा सकता है। बेशक मुझसे पराजित होने में उन्हें मजा आएगा, जैसे कभी-कभार पिता अपने पुत्र से पराजित होने का मजा लेता है। पुत्र अपने पिता की छाती पर बैठ जाता है विजयी, और पिता बस उसे जीतने का मजा लेने देता है। सभी बुद्धपुरुष उन सबसे पराजित हो जाना चाहते हैं जो उन्हें प्रेम करते हैं। मैं अपने शिष्यों को यह अनुमति देता हूं कि वे मुझे पराजित करें, और वे मुझसे आगे निकल जाएं। मेरे शिष्य मुझसे भी आगे निकल जाएं, इससे अधिक और क्या प्रसन्नता की बात हो सकती है।

बुद्ध शुरुआत 'धम्मपद' नाम से ही करते हैं–यही वे करने जा रहे हैं, वे उसे कहने जा रहे हैं जो नहीं कहा जा सकता, वे उसे बोलने जा रहे हैं जिसे बोला नहीं जा सकता। अनिर्वचनीय को उन्होंने इतनी सुंदरता से कहा कि धम्मपद एवरेस्ट की भांति हो गया है। यहां सब तरफ पर्वत ही पर्वत हैं लेकिन एवरेस्ट की ऊंचाई को कोई छू नहीं सकता।

मैंने बुद्ध को बैठे हुए देखा। मैंने दूसरे लोगों को भी देखा, अत्यंत सुंदर, अत्यंत विनम्र–वे ब्लावट्स्की की तरह नहीं हैं जो चिल्लाते हुए द्वार पर हथौड़े मार रही है कि "मुझे भीतर आने दो।" मैंने नग्न महावीर को देखा …क्योंकि सत्य नग्न है, वे एकदम शांत खड़े थे। और उनके शिष्य उनकी पुस्तक को हाथ में लिए हुए थे, न कि वे स्वयं।

दूसरी: 'जिन-सूत्र'–'विजेता के सूत्र।' 'जिन' एक सुंदर शब्द है, इसका अर्थ है जिसने जीत लिया है: वह जिसने स्वयं पर विजय पा ली है।

मैं इन सूत्रों पर अनेक भागों में बोल चुका हूं, लेकिन अभी तक उनका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हो पाया है। यहंा पर एक बात जरूर कहना चाहता हूं: 'जिन-सूत्रों' को मैं पोस्टस्क्रिप्ट में सम्मिलित करता हूं।

कोई भी उतना मौन में नहीं रहा है जितना कि महावीर रहे हैं, न ही उतना नग्न। केवल मौन ही इतना नग्न हो सकता है। याद रहे, मैं नंगा नहीं कह रहा हूं, मैं कह रहा हूं नग्न। दोनों शब्द बिलकुल भिन्न हैं, 'नंगा' अश्लील है; और 'नग्न' बस पूरी तरह से खुला है, वल्नरेबल, अनावृत। एक बच्चा नंगा नहीं होता, बस नग्न होता है। महावीर अपनी नग्नता में बहुत सुंदर हैं।

कहा जाता है कि उन्होंने अपने सूत्र किसी से नहीं कहे थे; केवल उन अंतरंग शिष्यों ने जो उनके समीप बैठे थे, उन्हीं शिष्यों ने इन सूत्रों को अपने भीतर सुना था। उन्होंने केवल सुना। यह सर्वाधिक आश्चर्यजनक घटनाओं में से एक है… महावीर के पास ग्यारह अंतरंग शिष्यों का एक इनर सर्किल था, और जब वे सभी एक साथ वही शब्द सुनते थे, तभी वे समझते थे कि यह शब्द लिखा जाना चाहिए, यद्यपि बाहर से देखा जाए तो महावीर ने कुछ भी नहीं बोला है, लेकिन इन शिष्यों ने एक सूक्ष्म ढंग से उनकी तरंग को ग्रहण किया है।

सारे संसार में लिखी गई किसी और पुस्तक से एकदम भिन्न तरीके से 'जिन-सूत्रों' की रचना हुई है। महावीर मौन रहे, और ग्यारह शिष्यों ने वही शब्द एक साथ सुना–'एक साथ' पर जोर है–तब उन्होंने उसी शब्द को लिख दिया। 'जिन-सूत्रों' की उत्पत्ति इसी प्रकार से हुई है। एक पुस्तक की कैसी अदभुत उत्पत्ति! इससे

सुंदर प्रारंभ की कोई सोच भी नहीं सकता और निश्चित ही इन सूत्रों में, मनुष्य को प्राप्त हो सकने वाला योग्य सर्वोच्च प्रकाश है, स्वयं पर विजय पाने का पूरा विज्ञान है।

तीसरी... मैंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसे मैं पहचान नहीं पाया। मैंने सोचा कि "अजीब बात है।" "हजारों जन्मों की यात्रा में मैं कई लोगों के साथ, कई विचारधाराओं में, कई मार्गों का यात्री रहा हूं। फिर कौन है यह आदमी? यह बिलकुल पहचान में नहीं आ रहा है।" वह कोई सदगुरु नहीं था, इसीलिए मैं उसे पहचान नहीं पाया, लेकिन वह इतना विनम्र था कि उसे सम्मिलित करना ही चाहिए। उसकी पुस्तक मुझे हमेशा प्रिय रही है। मुझे किसी तरह का कोई भी कारण समझ में नहीं आता कि इसे पचास की सूची में शामिल करना मैं कैसे भूल गया। वह एक ग्रीक आदमी था, कजानजाकिस, 'जोरबा दि ग्रीक' का लेखक। मुझे यह भी नहीं पता कि उसके नाम का उच्चारण कैसे किया जाता है, लेकिन 'जोरबा दि ग्रीक' अति उत्तम रचना है। जिस व्यक्ति ने इसे लिखा है वह न तो बुद्ध है, न महावीर है, लेकिन उसमें किसी भी क्षण इनके जैसा होने की क्षमता है। वह करीब-करीब तैयार है, परिपक्व है, जैसे कि बस वह अपने लिए सही मौसम का इंतजार कर रहा है।

जोरबा से मेरे संबंध प्रेम के हैं। मुझे अजीब तरह के लोगों से प्रेम है। जोरबा बड़ा ही अजीब व्यक्ति है–और वह कोई वास्तविक व्यक्ति भी नहीं है, केवल काल्पनिक है, लेकिन मेरे लिए वह करीब-करीब एक वास्तविकता बन गया है, क्योंकि वह एपीकुरस, चार्वाक और संसार के सभी भौतिकवादियों का प्रतिनिधित्व करता है। वह उनका प्रतिनिधित्व ही नहीं करता है, बल्कि वह उनका सबसे अच्छे रूप में प्रतिनिधित्व करता है।

एक जगह जोरबा अपने मालिक से कहता है, "मालिक, आपके पास सब-कुछ है, लेकिन फिर भी आप जीवन से चूक रहे हैं, क्योंकि आपमें थोड़ी सी दीवानगी नहीं है। यदि आपमें थोड़ा सा भी दीवानापन आ जाए तो आपको पता चलेगा कि जीवन क्या है।"

मैं उसे समझ सकता हूं; न केवल उसको, बल्कि हर युग के जोरबाओं को उनके 'थोड़े से दीवानेपन' के साथ समझ सकता हूं। लेकिन मेरा भरोसा किसी भी चीज के थोड़े से में नहीं है। मैं तो उतना ही दीवाना हूं जितना कोई हो सकता है, पूरा दीवाना। यदि तुम सिर्फ थोड़े से ही दीवाने हो, तो निश्चित ही, जीवन को भी सिर्फ थोड़ा सा ही समझ सकोगे, लेकिन यह बिलकुल नहीं जानने से तो कुछ बेहतर है।

जोरबा, बेचारा जोरबा, अनपढ़ जोरबा, एक मजदूर... वह शरीर से बहुत बड़ा रहा होगा, मजबूत शरीर वाला, और थोड़ा सा दीवाना रहा होगा। लेकिन उसने अपने मालिक को बड़ी अच्छी सलाह दी: "थोड़े से दीवाने हो जाएं," उसने कहा था। मैं कहता हूं, थोड़े से दीवानेपन से काम नहीं चलेगा; पूरी तरह से दीवाने हो जाओ! लेकिन तुम केवल मेडिटेशन में, ध्यान में ही पूरा दीवानापन ला सकते हो, वरना तुम पागल हो जाओगे। इस दीवानेपन का तुम उपभोग न कर सकोगे; बल्कि यही तुम्हारा उपभोग कर लेगा। यदि तुम्हें पता नहीं है कि ध्यान क्या है, तो तुम भस्म जाओगे। इसलिए मैंने एक नया नाम गढ़ा है: 'जोरबा दि बुद्धा।'

जोरबा दि बुद्धा मेरा संश्लेषण है। कला की श्रेष्ठ कृति की रचना करने के लिए कजानजाकिस से मुझे प्रेम है, लेकिन मुझे अफसोस भी है क्योंकि वह अब भी अंधकार में है। कजानजाकिस, तुम्हें एक सदगुरु की जरूरत है, थोड़े ध्यान की जरूरत है, अन्यथा जीवन क्या है यह तुम कभी न जान पाओगे।

चौथी: एक बहुत ही सुंदर व्यक्ति को मैंने देखा है। उनके बारे में मैंने चर्चा की है, लेकिन अपनी चाही हुई पचास पुस्तकों की सूची में उनका उल्लेख नहीं किया है। उनका नाम है, अल-हिल्लाज मंसूर। अल-हिल्लाज ने कोई पुस्तक नहीं लिखी है, बल्कि केवल थोड़े से वक्तव्य हैं, या यूं कहें कि घोषणाएं हैं। अल-हिल्लाज जैसे लोग

केवल घोषणा करते हैं, किसी अहंभाव के कारण नहीं–उन्हें किसी प्रकार का कोई अहंकार नहीं होता, इसलिए तो वे घोषणा करते हैं–"अनलहक!"

"अनलहक" उनकी घोषणा है, इसका अर्थ है "मैं खुदा हूं, और कोई दूसरा खुदा नहीं है।" मुसलमान उनको क्षमा न कर सके, उन लोगों ने उन्हें मार डाला। लेकिन क्या तुम अल-हिल्लाज को मार सकते हो? असंभव! जब उन्हें मारा जा रहा था, तब भी वे हंस रहे थे।

किसी ने उनसे पूछा: "तुम किसलिए हंस रहे हो?"

उन्होंने उत्तर दिया: "क्योंकि तुम मुझे नहीं मार रहे हो, तुम केवल शरीर को मार रहे हो, और मैंने बार-बार कहा है कि मैं शरीर नहीं हूं। अनलहक! मैं स्वयं खुदा हूं।" अब ये लोग ही पृथ्वी के नमक हैं।

अल-हिल्लाज मंसूर ने कोई पुस्तक नहीं लिखी है। केवल उनकी कुछघोषणाओं को उनके प्रेमियों और मित्रों ने संगृहीत किया है। मैं उन्हें अनुयायी भी नहीं कहूंगा, क्योंकि अल-हिल्लाज जैसे लोग अनुयायिओं को, नकल करने वालों को स्वीकार नहीं करते है। वे बस प्रेमियों को, मित्रों को ही स्वीकार करते हैं।

मुझे खेद है कि मैं उनके बारे में बिलकुल ही भूल ही गया था। ऐसा करना मेरे लिए ठीक नहीं है। लेकिन अल-हिल्लाज आपको मेरी दिक्कत को समझना चाहिए। जितनी पुस्तकों के बारे में तुमने कभी सुना भी न होगा उससे अधिक पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं। मैंने एक लाख से भी अधिक पुस्तकें पढ़ी हैं। अब उनमें से पचास को खोजना बहुत ही मुश्किल काम है। मैंने सिर्फ कुछ पुस्तकें ही चुनी हैं, और स्वाभाविक है कि मुझे बहुत पुस्तकों को छोड़ देना पड़ा, आंखों में आंसू लिए। मैं उनको भी चुनना चाहता था... लेकिन मैं आपका नाम पोस्टस्क्रिप्ट में लिखवा रहा हूं।

पांचवीं: इनको बहुत कम लोग ही जानते हैं, कारण सीधा सा है कि उन्होंने न कभी कुछ लिखा और न कभी कुछ बोला। वह व्यक्ति हैं, महाकाश्यप। उनके विषय में बस यही घटना ज्ञात है।

एक दिन बुद्ध सुबह के अपने प्रवचन में कमल का फूल हाथ में लिए हुए आए। वे मौन बैठ कर फूल को देखने लगे, एक शब्द भी नहीं बोले। दस हजार संन्यासियों की सभा बेचैन हो गई। ऐसा कभी न हुआ था। पहली बात तो यह कि बुद्ध जो कभी कुछ लेकर नहीं आते थे, आज कमल का फूल लेकर आए; दूसरी बात, वे आते ही बोलना शुरू कर देते थे, लेकिन आज काफी समय बीत गया, और वे बस फूल को देखे चले जाते हैं। बहुत से लोगों ने सोचा होगा कि वे पगला गए हैं। केवल एक ही व्यक्ति इस बात से राजी नहीं था। वह हंस पड़ा। उनका नाम था, महाकाश्यप।

बुद्ध ने आंखें उठाईं, हंसे और महाकाश्यप को अपने पास बुलाया, फूल उनको दिया और सभा से कहा, आज का प्रवचन पूरा हुआ, उन्होंने कहा, "जिस योग्य तुम हो वह मैं तुम्हें दे चुका हूं, महाकाश्यप को वह दिया जिसके वह योग्य है, और ठीक भी है। कई वर्षों तक मैं तुमसे शब्दों के माध्यम से बोला, लेकिन तुम कभी नहीं समझे। आज मैं मौन की भाषा में बोला हूं, और महाकाश्यप की हंसी ने बता दिया कि वह समझ गया है।" तो इस रहस्यमय ढंग से उनके उत्तराधिकारी को खोज लिया गया। महाकाश्यप बुद्ध के उत्तराधिकारी बना दिए गए। इस अजीब ढंग से...

महाकाश्यप के शिष्यों ने उनके बारे में कुछ लिखा है जिसे उनकी पुस्तक कहा जा सकता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि उन्होंने उसे लिखा नहीं है, न ही उनके शिष्यों ने अपने हस्ताक्षर किए हैं। वे गुमनाम रहे हैं। लेकिन जो कुछ भी लिखा गया है उसका सौंदर्य अदभुत है। कुछ अंश है, जैसे चांद के टुकड़े हों: अगर तुम उन

सबको एक साथ रख सको तो फिर से पूर्णिमा का चांद बन जाएगा। ध्यान ही वह राज है जिससे उन सबको साथ रखा जा सकता है।

महाकाश्यप के पीछे जो परंपरा चली वह झेन है। वे झेन का, ध्यान का प्रथम स्रोत हैं। अजीब बात है... कि बुद्ध भी नहीं, बल्कि महाकाश्यप प्रथम हैं। ...क्योंकि बुद्ध चालीस वर्ष तक बोलते रहे, महाकाश्यप ने कभी कुछ नहीं बोला; अगर उन्होंने कभी किसी तरह की कोई आवाज की तो वह सिर्फ उनकी हंसी की है। अगर तुम उसे उनका बोलना कहो, तो बात अलग है। एक तरह से यह बोलना ही है, वह हंसी यह कह रही है कि यह सारा अस्तित्व एक मजाक है। जैसे कि वह बुद्ध से कह रही है कि "क्या मजाक है!"

जिस क्षण तुम्हें यह समझ आता है कि यह पूरा अस्तित्व ही एक मजाक है, तुम समझ गए। इसके अलावा और कोई समझ नहीं है, और कोई संबोधि नहीं है। बाकी सब-कुछ झूठ है।

देवगीत, क्या तुम मुझे बता सकते हो कौन सा नंबर चल रहा है?–क्योंकि मरणोपरांत रिकॉर्ड में भी, पोस्टस्क्रिप्ट में भी मुझे दस की संख्या पूरी करनी है। कौन सा नंबर तुमने कहा?

"नंबर छह, ओशो।"

ठीक है। यह बहुत अच्छा हुआ कि मैंने 'मरणोपरांत' कहा है। मैं सचमुच में मिट चुका हूं, इसीलिए मैं तुम्हें मुझे 'धन्यभागी' कहने की अनुमति देता हूं। यदि मैं नहीं मिटा हूं तो मुझे धन्यभागी कहना उचित नहीं है।

शब्द 'मरणोपरांत' संयोगवश मेरे खयाल में आया है। मैं 'पोस्टस्क्रिप्ट' कहने जा रहा था, लेकिन कभी-कभी सत्य संयोगवश बाहर आ जाता है। यह व्यवस्थित नहीं होता, क्रमबद्ध नहीं होता; यह केवल ज्वालामुखी की भांति फूट पड़ता है। मैं इसे कहने वाला नहीं था, लेकिन यह अपने से ही निकल आया। सत्य के अपने ही रास्ते हैं। मैं सच में ही एक मरणोपरांत व्यक्ति हूं, बहुत पहले ही मिट चुका हूं।

छठवीं: मैंने हरमन हेस को देखा। वह कोई बुद्धपुरुष नहीं है–जो बुद्धत्व के पार जा चुके हैं उनके बारे में तो क्या कहें। वह बस एक साधारण सा व्यक्ति था, लेकिन काव्य की उड़ान में उसने दुनिया की श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक लिखी है, 'सिद्धार्थ।'

सिद्धार्थ वास्तव में गौतम बुद्ध का नाम है जो उनके माता-पिता ने उन्हें दिया था। वे गौतम बुद्ध के रूप में प्रसिद्ध हुए। गौतम उनका पारिवारिक नाम था; बुद्ध का सीधा सा अर्थ है 'जागा हुआ।' उनका असली नाम सिद्धार्थ था, जो उनके माता-पिता ने ज्योतिषियों की राय से उन्हें दिया था। यह सुंदर नाम है। सिद्धार्थ का यह भी अर्थ होता है 'वह जो अर्थ को उपलब्ध हो गया है।' 'सिद्ध' यानी 'जिसने प्राप्त कर लिया'; 'अर्थ' यानी जिसका अर्थ होता है। दोनों को मिला दो, तो सिद्धार्थ का मतलब होता है, 'जो अपने जीवन के अर्थ को उपलब्ध हो गया है।' उनके मां-बाप, ज्योतिषी, और वे लोग जिन्होंने उनको यह नाम दिया वे बुद्धिमान लोग रहे होंगे–अगर वे बुद्धत्व को उपलब्ध नहीं, तो कम से कम बुद्धिमान तो रहे होंगे... कम से कम सांसारिक रूप से बुद्धिमान।

हरमन हेस की 'सिद्धार्थ' बुद्ध की कहानी को दूसरे ढंग से दोहराती है, लेकिन उसी आयाम में, उसी अर्थ के साथ। यह अविश्वसनिय है कि हरमन हेस ने इसे लिखा है, लेकिन वह स्वयं सिद्ध नहीं हो पाया। वह एक मामूली सा लेखक ही रहा–हां, एक नोबल पुरस्कार विजेता, लेकिन इससे कोई बहुत फर्क नहीं पड़ता है। आप बुद्ध को नोबल पुरस्कार नहीं दे सकते; वे हंसेगे और उसे फेंक देंगे। लेकिन पुस्तक बहुत सुंदर है, और मैं इसे शामिल करता हूं।

सातवीं: अत्यधिक परंपरावादी और कट्टर यहूदी धर्म में भी पूरी तरह से बुद्धत्व को उपलब्ध कुछ सदगुरु हुए हैं–कुछ तो बुद्धत्व के पार भी जा चुके हैं, यह बात बहुत कम लोगों को पता है। उनमें से एक हैं, बाल शेम तोव। उनको शामिल न करने के लिए मैं अपने आप को माफ नहीं कर सकता, और क्षमा मांगने के लिए और कोई दूसरा नहीं है।

बाल शेम तोव। तोव उनके नगर का नाम था। उनके नाम का सीधा अर्थ है 'तोव नगर के बाल शेम'; इसलिए हम उनको केवल बाल शेम ही कहेंगे। उनके बारे में मैं बोल चुका हूं, क्योंकि जब मैं हसीद धर्म पर बोल रहा था, मैंने कोई भी जरूरी बात नहीं छोड़ी थी। मैं ताओ, झेन, सूफी, हसीद, सभी पर बोल चुका हूं। मैं किसी भी परंपरा का हिस्सा नहीं हूं, इसलिए मैं किसी भी दिशा में जाने के लिए स्वतंत्र हूं। मुझे किसी नक्शे की भी जरूरत नहीं है। मैं तुम्हें फिर से याद दिलाता हूं:

भीतर आते हुए
बाहर जाते हुए
जल-पंछी
नहीं छोड़ता है कोई पदचिह्न,
और न ही उसे जरूरत है किसी मार्गदर्शक की।

बाल शेम तोव ने कभी कोई शास्त्र नहीं लिखे–रहस्यवाद के जगत में 'शास्त्र' एक गंदा शब्द है–लेकिन उन्होंने कई सुंदर कहानियां कही हैं, वे इतनी सुंदर हैं कि उदाहरण के रूप में मैं उनमें से एक तुम्हें सुनाता हूं जिससे तुम उस व्यक्ति की गुणवत्ता का स्वाद पा सको।

बाल शेम के पास एक स्त्री आई। वह निःसंतान थी; वह संतान चाहती थी। वह बाल शेम को निरंतर तंग करती और कहती: "अगर आप आशीर्वाद दें तो सभी कुछ संभव है। कृपया मुझे आशीर्वाद दें। मैं संतान चाहती हूं।"

आखिरकार थक कर–हां, यहां तक कि बाल शेम भी तंग करने वाली स्त्री से थक सकते हैं–उन्होंने पूछा: "तुम लड़का चाहती हो या लड़की?"

स्त्री तो बहुत प्रसन्न हुई; वह बोली: "निस्संदेह, लड़का ही चाहिए।"

बाल शेम ने कहा: "तो फिर इस कहानी को सुनो। मेरी मां निःसंतान थी, उसने भी अपने नगर के रबाई को उसे आशीर्वाद देने के लिए लगातार परेशान और तंग किया। आखिर रबाई ने कहा, 'पहले मेरे लिए एक सुंदर टोपी बना लाओ।' मेरी मां ने एक सुंदर सी टोपी बनाई और रबाई के पास गई।"

टोपी इतनी सुंदर थी कि मेरी मां ने कहा, "इसके बदले में मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, आपको इस टोपी को पहने हुए देखना ही बहुत सुंदर लग रहा है। मैं बहुत संतुष्ट हूं। आपको मेरे प्रति आभारी होने की जरूरत नहीं है, मैं ही आपकी आभारी हूं। धन्यवाद, रबाई।"

"और मेरी मां चली गई। इसी तरह मेरी मां गर्भस्थ हुई।" और मेरा जन्म हुआ, बालशेम ने बताया।

उस स्त्री ने कहा: "बहुत खूब, तो कल ही मैं एक सुंदर सी टोपी लेकर आती हूं।"

दूसरे दिन वह एक बहुत सुंदर टोपी लेकर वापस आई। बाल शेम ने टोपी ले ली और उसे "धन्यवाद" भी नहीं दिया। वह स्त्री लंबे समय तक प्रतीक्षा करती रही, फिर उसने पूछा, "बच्चे के बारे में क्या?"

बाल शेम ने कहा: ''बच्चे के बारे में सब-कुछ भूल जाओ! टोपी इतनी सुंदर है कि मैं तुम्हारा आभारी हूं। मुझे तुम्हारा धन्यवाद करना चाहिए। क्या तुम्हें वह कहानी याद है जो मैंने तुम्हें सुनाई थी? उस स्त्री ने बदले में कुछ नहीं मांगा था, इसीलिए वह गर्भस्थ हुई, और मेरे जैसा बच्चा''–बाल शेम पैदा हुआ।

''लेकिन तुम कुछ पाने की इच्छा के साथ आई हो। बस इस टोपी को देकर तुम बाल शेम जैसा बच्चा चाहती हो? उसके बारे में सब-कुछ भूल जाओ,'' उसने कहा, ''और फिर कभी मत आना–कभी नहीं।''

कई बातें ऐसी हैं जिन्हें केवल कहानियों के माध्यम से ही कहा जा सकता है। बाल शेम ने आधारभूत बात कह दी है: मांगो मत और वह मिल जाएगा। मांगो मत–यही मूल शर्त है।

बाल शेम की कहानियों से जो हसीद धर्म अंकुरित हुआ वह आज तक की सबसे सुंदर खिलावट है। हसीद धर्म की तुलना में यहूदियों ने कुछ भी नहीं किया है। हसीद धर्म एक छोटी सी धारा है, लेकिन अभी भी जीवंत है, अभी भी प्रवाहमान है।

आठवीं: फरीद। मैं उन पर पहले ही बोल चुका हूं–लेकिन अंग्रेजी में नहीं, हिंदी में। सूफी रहस्यदर्शी, फरीद–कबीर, नानक और दूसरे अन्य रहस्यदर्शियों के समकालीन थे। वे मुझे प्रिय हैं। अपने गीतों में उन्होंने खुद को फरीदा कहा है। वे सदा अपने को ही संबोधित करते हैं, किसी और को नहीं। वे हमेशा शुरू करते हैं, ''फरीदा क्या तू सुन रहा है? फरीदा जाग, फरीदा ऐसा कर वैसा कर।'' हिंदी भाषा में जब तुम फरीद नाम का प्रयोग करोगे तो वह सम्मानीय होता है। लेकिन फरीदा कहने पर वह सम्माननीय नहीं रह जाता। इस तरह से तो केवल नौकरों को बुलाया जाता है। फरीद अपने को फरीदा कहते हैं, क्योंकि वे मालिक हैं... शरीर सेवक है।

महान सम्राट अकबर फरीद से उनके गीत सुनने के लिए आया करता था। एक बार अकबर को एक उपहार, बहुत कीमती उपहार प्राप्त हुआ, हीरों से जड़ी सोने की कैंची। गुड़िया को वह अच्छी लगी होती–किसी भी स्त्री को अच्छी लगती। अकबर को भी अच्छी लगी थी, उसे यह इतनी अच्छी लगी और उसने सोचा कि फरीद के लिए यह उपहार अच्छा रहेगा। वह आया और उसने वह मूल्यवान कैंची फरीद को दे दी। फरीद ने उसे उलट-पलट कर देखा, फिर अकबर को वापस कर कहा: ''यह मेरे किसी काम की नहीं। यदि तुम मुझे कुछ उपहार देना चाहते हो, तो एक सुई ले आओ।''

अकबर हैरान था। उसने पूछा: ''सुई क्यों?''

फरीद बोले: 'क्योंकि कैंची का काम चीजों के टुकड़े करना है, और सुई का काम है टुकड़ों को जोड़ना। मेरा काम कैंची वाला नहीं है, सुई का है। मैं चीजों को जोड़ता हूं, मैं संश्लेषण करता हूं।

फरीद न तो सिग्मंड फ्रायड से राजी होते, न ही मनोविश्लेषण से, क्योंकि मनोविश्लेषण सोने की कैंची है, हर चीज के टुकड़े कर देती है। वह असागोली और मनोसंश्लेषण से राजी होते। जोड़ो, चीजों को एक साथ ले आओ, एक इकाई में। मेरे आंसू देखते हो? वे फरीद के लिए हैं... फरीदा... हां, फरीदा के लिए। उनके लिए कोई भी श्रद्धांजलि कम है। वे आंसुओं को समझ जाएंगे, सोने की कैंची को नहीं। काश, अकबर फरीद के चरणों पर गिर पड़ा होता और रोए होता... सदगुरु के लिए वास्तविक उपहार यही होता।

फरीद ने कोई पुस्तक नहीं लिखी, लेकिन उनके प्रेमियों ने उनके गीत लिखे हैं। उनके गीत अत्यंत सुंदर हैं, लेकिन तुम्हें उन गीतों को पंजाबी भाषा में ही सुनना पड़ेगा। वे पंजाब में रहते थे, उनके गीत पंजाबी में हैं, हिंदी में नहीं हैं। पंजाबी हिंदी से बहुत अलग है। हिंदी थोड़ी कोमल है, व्यवसायियों की भाषा है। पंजाबी है तलवार की तरह, योद्धा की भाषा है। यह बहुत गहराई तक जाकर दिल को छू लेती है। अगर तुम फरीद के गीतों को पंजाबी भाषा में सुनो तो तुम्हारा दिल झूम उठेगा।

जब मैं पंजाब में यात्रा किया करता था तो लोगों से पूछा करता था, "क्या तुम मेरे लिए फरीद के गीत गा सकते हो?" और कभी-कभार कोई गाने वाला मिल जाता था, जो फरीद के गाने का ढंग जानता था। और वे सभी अच्छे गायक... वे सभी सुंदर क्षण... पंजाबी भाषा की अपनी एक गुणवत्ता है। हर भाषा की अपनी एक गुणवत्ता है। लेकिन पंजाबी निश्चित ही एक तलवार है, उसे और अधिक धार नहीं दे सकते।

नौवीं... मैं जल्दी में हूं, क्योंकि मेरा समय लगभग पूरा हो गया होगा, या हो चुका है, क्योंकि मैंने गुड़िया को भीतर आते हुए देखा है। यह कितनी दुखद बात है कि समय भी उसी नियम का अनुसरण करता है फिर चाहे वह मेरा हो या तुम्हारा। इसे क्रोनॉलॉजिकल, क्रमबद्ध नहीं होना चाहिए, बल्कि रिलेटिव, सापेक्ष होना चाहिए। मेरे समय को वही नियम पालन नहीं करना चाहिए, इसे आइंस्टीन के सापेक्षवाद से संबंधित नहीं होना चाहिए। इसे अंतहीन होना चाहिए। लेकिन मैं जानता हूं कि ऐसा हो नहीं सकता, इसलिए मैं जल्दी में हूं, और तुम्हें पता है कि जब मैं जल्दी में होता हूं तब भी मैं विश्राम में ही होता हूं।

नौवीं: एक अन्य कवि, एक गायक, एक नर्तक, जिनकी गुणवत्ता बिलकुल ही भिन्न है: शिव, और उनकी पुस्तक 'विज्ञान भैरव तंत्र।' मैं इस पर बोल चुका हूं। यह बहुत छोटी है, केवल एक सौ बारह सूत्र। तुम इन सूत्रों को पुस्तक के एक पृष्ठ पर आसानी से लिख सकते हो, या ज्यादा से ज्यादा दो पृष्ठों पर। इस पर मैं पांच भागों में बोल चुका हूं, कई सौ पृष्ठों में–'दि बुक ऑफ सीक्रेट्स।' मेरे हिसाब से कोई भी और पुस्तक इतनी घनीभूत नहीं है जितनी कि 'विज्ञान भैरव तंत्र'–शिव की यह पुस्तक है। प्रत्येक सूत्र अपने आप में एक मेथड है, एक विधि है।

देवगीत, कृपया हस्तक्षेप मत करो। मुझे अपना काम खत्म कर लेने दो। जो व्यक्ति रोगी वाली कुर्सी पर बैठा होता है उसे लोग पेशेंट, मरीज कहते हैं; लेकिन उन्हें डॉक्टरों को पेशेंट, धैर्यवान होना सिखाना चाहिए। आशु, तुम डॉक्टर नहीं हो इसलिए तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। कोई महिला कभी चिंता नहीं करती, वह दूसरों को चिंता में डाल देती है; यह और बात है। देखो, गुड़िया भी हंस रही है, जो एक असली अंग्रेज महिला के लिए असाधारण बात है!

अच्छा है, हंसना हमेशा ही अच्छा होता है। यह मुझे प्रीतिकर है। लेकिन मुझे अपना काम जारी रखना है चाहे तुम हंसो या रोओ; इस कुर्सी पर बैठे हुए आदमी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं चट्टान की भांति कठोर हूं और कमल की भांति कोमल, लेकिन मैं दोनों एक साथ हूं। इसे स्पष्ट करने के लिए मैं तुम लोगों से कहे देता हूं: पहले तो मैं चट्टान हूं; और इससे मैं तुम्हारी खोपड़ी को तोड़ दूंगा। तुम्हारे लिए मैं कमल नहीं हो सकता हूं, लेकिन तुम जो कर रहे हो वह बहुत सुंदर है।

दसवीं: मैं हमेशा उमास्वाति और उनकी पुस्तक पर बोलना चाहता था। उमास्वाति एक रहस्यदर्शी हैं, लेकिन बहुत रुखे-सूखे रहस्यदर्शी–जैसे कि इस समय मेरे ओंठ हैं रूखे-सूखे बिना किसी नमी के। उन्होंने एक बहुत रूखी-सूखी पुस्तक लिखी है, लेकिन उसमें परम का बिलकुल सही वर्णन है। उनकी पुस्तक का नाम है 'तत्व सूत्र।' 'तत्व' का अर्थ है 'परम सत्य।' 'तत्' यानी 'वह'–परम। 'यह' यानी जो अभी है, और 'वह' यानी परम।

देवगीत, हस्तक्षेप बंद करो। मैं जानता हूं कि तुम अपनी मशीन के विषय में अधिक जानते हो। मैं भी तुम्हारी चेतना के विषय में अधिक जानता हूं। और यही मतलब की बात है।

'तत्व सूत्र' सुंदर है और मैं इस पर बोलना चाहता था, लेकिन बार-बार स्थगित करता रहा। यह बहुत ही गणितीय है, जैसे कुंदकुंद का समयसार। सभी जैन रहस्यदर्शी ऐसे ही हैं–रूखे-सूखे, अत्यंत रूखे-सूखे।

लक्ष्मी ने सचमुच एक ऐसी जगह चुनी है–कच्छ! महावीर, कुंदकुंद, उमास्वाति, ये सभी के सभी कच्छ को पसंद करते। लेकिन मेरे लिए यह कैसा दुर्भाग्य है! मैं हमेशा हिमालय में रहना चाहता था, लेकिन मुझे मेरे अपने लोगों के लिए हिमालय में रहने का खयाल ही छोड़ देना पड़ा।

बुद्ध, बोधिधर्म या बाशो के साथ ऐसा नहीं हुआ; उमर खय्याम, खलील जिब्रान, मिखाइल नैमी के साथ ऐसा नहीं हुआ, लेकिन यह मेरे साथ हुआ। मैं जानता हूं कि इसमें भी कुछ रहस्य होगा। वह यह हो सकता है कि मुझे कच्छ को भी हिमालय जैसा सुंदर बनाना पड़े। एक बात पक्की है: मैं जहां कहीं भी रहूंगा, मैं उसे दुनिया का सबसे सुंदरतम स्थान बना दूंगा, चुनौती चाहे जो भी हो।

ग्यारहवीं: और पोस्टस्क्रिप्ट के लिए अंतिम... मेरा मतलब है आज के लिए। कल के बारे में कोई नहीं जानता। अंतिम पुस्तक कुछ इतनी सुंदर है कि इसे भूल जाने के लिए मुझे वास्तव में असली दीवाना होना चाहिए। खयाल रखना, मैं पागल नहीं कह रहा हूं, मैं कह रहा हूं दीवाना। मैं दीवाना रहा होऊंगा कि इसे भूल गया। अगर मैं पागल होता तो इसे भूल पाना असंभव था। तब यह स्मरण में आने वाली पहली पुस्तक होती, अंतिम नहीं। वह है 'दि सांग ऑफ नरोपा'–'नरोपा के गीत।'

मैं इस पर कभी नहीं बोला, क्योंकि मैंने कभी नहीं सोचा कि इसके बारे में कुछ कहा जा सकता है, लेकिन यह मेरे हृदय में बनी रही। मैं इसका उल्लेख केवल इसलिए कर रहा हूं ताकि जो मुझसे प्रेम करते हैं वे इसे खोजना शुरू कर दें...नरोपा के गीत, काव्य और नृत्य। और यह मेरा भी काव्य और नृत्य है।

ॐ मणि पद्मे हुम,
कमल में मणि।

मेरे पूरे आनंद के साथ, तुम दोनों का धन्यवाद।

सत्र-07

ओ. के.। मैं तुम्हारी नोटबुक के खुलने की आवाज सुन रहा हूं। अब यह एक घंटे का समय मेरा है, और मेरे एक घंटे में साठ मिनट नहीं होते। वे कुछ भी हो सकते हैं–साठ, सत्तर, अस्सी, नब्बे, सौ... या संख्याओं के पार भी। यदि यह एक घंटा मेरा है तो इसे मेरे साथ संगति बिठानी होगी, इससे विपरीत नहीं हो पाएगा।

पोस्टस्क्रिप्ट, पश्चलेख जारी है।

आज का जो पहला नाम है: मलूक, इस नाम को पश्चिम में किसी ने सुना भी नहीं होगा। वे भारत के अत्यंय महत्वपूर्ण रहस्यदर्शियों में से एक हैं। उनका पूरा नाम है, मलूकदास, लेकिन वे अपने को केवल मलूक कहते हैं, जैसे कि वे कोई बच्चे हों–और वे सच में ही बच्चे थे, 'बच्चे जैसे' नहीं।

उन पर मैं हिंदी में बोला हूं, लेकिन उसे अन्य भाषाओं में अनुवादित होने में काफी समय लगेगा, उसका कुल कारण यह है कि मलूक बहुत ही अनूठे हैं, बहुत ही रहस्यमय हैं। तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि भारत जैसे देश में जहां इतने सारे व्याख्याकार, विद्वान, पंडित भरे पड़े हैं, उनमें से किसी ने भी मलूकदास पर व्याख्या करने की फिकर नहीं की, क्योंकि यह बहुत मुश्किल मामला है। उनको मेरा इंतजार करना पड़ा। उनकी व्याख्या करने वाला मैं पहला व्यक्ति हूं, और कौन जाने शायद अंतिम भी।

उदाहरण के लिए:

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।

दास मलूका कहि गए, सबके दाता राम।।

अब मैं इसका अनुवाद करने की कोशिश करता हूं। यह बिलकुल उसी जैसा नहीं होगा, लेकिन इसके लिए मैं जिम्मेवार नहीं हूं। बेचारी अंग्रेजी भाषा इतनी समृद्ध नहीं है। मलूक कहते हैं: अजगर कभी नौकरी पर बाहर काम करने नहीं जाता है, न ही पक्षी कोई काम किया करते हैं। और, मलूक कहते हैं, कोई ऐसी जरूरत भी नहीं है, क्योंकि अस्तित्व सभी को पाल रहा है। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें जोरबा दि ग्रीक पसंद करता। वे थोड़े से अलमस्त व्यक्ति थे और बहुत ध्यानी।

वे ध्यान में इतने गहरे डूबे हुए थे कि वे कहते हैं:

माला जपों न कर जपों, जिभ्या कहों न राम।

सुमिरन मेरा हरि करैं, मैं पाया बिसराम।।

वे कहते हैं: भगवान का नाम मैं नहीं जपता, न ही पूजा के लिए माला जपता हूं। मैं पूजा ही नहीं करता–इन सब मूर्खताओं की परवाह कौन करता है! फिर आगे कहते हैं: सच तो यह है कि भगवान ही मेरा स्मरण करते हैं, मुझे उनका स्मरण करने की आवश्यकता नहीं है... देखते हो?–यह थोड़ी सी मस्ती और ध्यान की ऊंचाई। मलूकदास ऐसे व्यक्ति हैं जिनके बारे में मैं निस्संकोच कह सकता हूं कि वे संबोधि के पार चले गए हैं। झेन के दस बैलों वाले चित्रों में वे दसवां चित्र हैं।

दूसरी: सिक्खों की पुस्तक: 'गुरुग्रंथ साहिब।' यह किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं लिखी गई थी इसलिए मैं यह नहीं बता सकता कि इसका लेखक कौन है। इसे पीढ़ी दर पीढ़ी संकलित किया गया है। इसे सभी स्रोतों से एकत्रित किया गया है, ऐसा दुनिया में किसी और पुस्तक के साथ नहीं किया गया है। 'दि ओल्ड टेस्टामेंट' केवल यहूदियों की पुस्तक है, 'न्यू टेस्टामेंट' केवल ईसाइयों की है, 'भगवद्गीता' केवल हिंदुओं की है, 'धम्मपद' केवल

बौद्धों का है, 'जिन-सूत्र' केवल जैनों का है; लेकिन 'गुरुग्रंथ साहिब' दुनिया में एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसे सभी संभव स्रोतों से संकलित किया गया है। इसके स्रोत हिंदू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई से आते हैं। इसमें बहत खुलापन है, कोई कट्टरता नहीं।

शीर्षक 'गुरुग्रंथ' का अर्थ है: 'सदगुरुओं की पुस्तक' या 'सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ।' इसमें तुम्हें मिल जाएंगे कबीर, नानक, फरीद; और विभिन्न परंपराओं, विभिन्न विचारधाराओं के रहस्यदर्शियों की लंबी कतार मिल जाएगी, मानो हजारों नदियां सागर में गिर रही हों। 'गुरुग्रंथ' एक सागर की तरह है।

मैं नानक के केवल एक ही वाक्य का अनुवाद करूंगा। वे संस्थापक हैं, इसलिए निश्चित ही उनके शब्द 'गुरुग्रंथ' में संकलित किए गए हैं। वे सिक्खों के प्रथम सदगुरु थे; उनके बाद नौ अन्य सदगुरु हुए हैं। सिक्ख धर्म दस सदगुरुओं द्वारा स्थापित किया गया। यह एक अनोखा धर्म है क्योंकि बाकी सभी धर्म केवल एक ही सदगुरु द्वारा निर्मित किए गए हैं।

नानक कहते हैं: सत्य, परम सत्य अकथनीय है, कहा नहीं जा सकता है, इसलिए कृपया मुझे क्षमा करना, मैं सत्य के बारे में कुछ न कह पाऊंगा, बस गाऊंगा। अगर तुम संगीत की भाषा समझ सको, तो हो सकता है शायद तुम्हारे हृदय का कोई तार झंकृत हो जाए। सत्य शब्दों के पार है।

'गुरुग्रंथ साहिब'... सिक्ख लोग इसे 'साहिब' कहते हैं, क्योंकि वे इस पुस्तक का अत्यधिक सम्मान करते हैं, करीब-करीब ऐसे ही जैसे कि वह जीवित हो, जैसे कि वह सदगुरु की आत्मा हो। लेकिन पुस्तक तो पुस्तक है, और जैसे ही सदगुरु विदा होते हैं पुस्तक मृत हो जाती है, शब्द मृत हो जाते हैं। इसलिए वे एक सुंदर लाश को ढो रहे हैं, जैसा अन्य सभी धर्म कर रहे हैं। याद रखना, धर्म कभी-कभी जीवित होता है, केवल सदगुरु की मौजूदगी में जीवित होता है। जब सदगुरु जीवित नहीं होता तो वह संप्रदाय बन जाता है, और संप्रदाय एक कुरूप चीज है।

'पंथों और संप्रदायों' की जांच के लिए हालैंड की संसद ने एक आयोग नियुक्त किया है। निस्संदेह उनकी जांच की सूची में मैं प्रथम हूं। हालैंड में अपने लोगों को मैंने सूचित कर दिया है कि वे आयोग को बता दें, ''हम लोग आपके साथ सहयोग नहीं कर सकते, क्योंकि हमारा न तो कोई पंथ है न ही कोई संप्रदाय; हम एक धर्म हैं। यदि आपको पंथों और संप्रदायों को देखना हो, तो वे बहुत से हैं: ईसाई, यहूदी, हिंदू, मुसलमान, और इसी तरह के अंतहीन संप्रदाय हैं।'' वस्तुतः मैं इसे इतनी बार दोहराने वाला था कि चक्कर आ जाए...

जांच आयोग बहुत चिंतित हो गया। उन्होंने हालैंड में मेरे संन्यासियों को पत्र लिख कर कहा: ''कृपया हमारे साथ सहयोग करें।'' हमारे लोगों ने फिर पूछा है कि क्या किया जाए। मैंने उनसे कहा, ''जो करना है वह मैं पहले ही बता चुका हूं। जब तक वे धर्म के मूलतत्व के बारे में जांच के लिए आयोग नहीं नियुक्त करते, तब तक सहयोग मत करो।''

अब जरा उनकी मूर्खता को देखो: हालैंड की संसद में क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी का वर्चस्व है और जो लोग आयोग की सेवा में नियुक्त हैं वे सभी क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक हैं। अब, यही लोग हैं जो कि पंथ हैं, यही लोग संप्रदाय हैं। मेरे लोग कोई संप्रदाय नहीं हैं। मैं अभी जीवित और सक्रिय हूं! धर्म का अस्तित्व तभी है जब तक सदगुरु की श्वास चलती रहती है। यह सदगुरु की श्वास है जिससे धर्म बनता है।

'गुरुग्रंथ' में दस सदगुरुओं, दस बुद्धपुरुषों के वचन संकलित हैं। मैं कहता हूं कि किसी दूसरी पुस्तक से उसकी तुलना नहीं की जा सकती है। यह अतुलनीय है। नानक कहते हैं, ''एक ओंकार सतनाम–केवल एक ही बात सत्य है, उस अनिर्वचनीय का नाम।'' पूरब में हम उसे 'ओंकार' कहते हैं, 'ओम'–बस वही सत्य है, निर्ध्वनि की ध्वनि...वह मौन जो ध्वनि के विदा हो जाने पर घेर लेता है...'एक ओंकार सतनाम।'

तीसरी: मेबिल कॉलिन्स की पुस्तक: 'दि लाइट ऑन दि पाथ।' जिसे भी ऊंचाइयों की यात्रा करनी है, उसे 'दि लाइट ऑन दि पाथ' को समझना होगा। जहां तक विषयवस्तु का संबंध है यह एक छोटी सी पुस्तिका है, मात्र कुछ पृष्ठ, लेकिन जहां तक गुणवत्ता का संबंध है यह श्रेष्ठतम, महानतम पुस्तकों में से एक है। और आश्चर्यों का आश्चर्य कि इसे आधुनिक काल में लिखा गया है। कोई नहीं जानता कि जिसने इसे लिखा है वह मेबिल कॉलिन्स कौन है। जिसने लिखा उसने अपना पूरा नाम मेबिल कॉलिन्स भी नहीं लिखा, बस केवल एम. सी.। यह तो बस संयोग है कि एम. सी. के कुछ मित्रों के माध्यम से मुझे उसके पूरे नाम का पता चला।

एम. सी. क्यों? इसका कारण मैं समझ सकता हूं। लेखक बस एक माध्यम है, और विशेषकर 'दि लाइट ऑन दि पाथ' के मामले में तो ऐसा ही है। शायद सूफी खिज्र: वह आत्मा जो लोगों का मार्गदर्शन करती है, नेतृत्व करती है, उनकी सहायता करती है, जिसके बारे में मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं–एम. सी. के कार्य के पीछे भी थी।

एम. सी. एक थियोसॉफिस्ट, ब्रह्मविद्यावादी थी। वह स्त्री हो या पुरुष–मुझे पता नहीं लेखक स्त्री है या पुरुष, वैसे भी इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है–या शायद उसको सूफियों के परम मार्गदर्शक खिज्र का मार्गदर्शन पसंद नहीं आया हो। लेकिन एम. सी. को अत्यधिक प्रसन्नता होगी यदि मैं उसी नाम का प्रयोग करूं जो थियोसॉफिस्टों ने किया है: वे इसे के. एच. कहते हैं। कोई भी नाम चलेगा। तुम क्या नाम देते हो इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है...सदगुरु के. एच. या रहस्यदर्शी खिद्र, यह सब एक ही है। लेकिन पुस्तक बहुत उपयोगी है। जिस किसी ने भी इसे लिखा हो, जिसे किसी ने भी इसे लिखने में मार्गदर्शन दिया हो, यह अलग बात है; पुस्तक अपने में एक स्वर्ण स्तंभ है।

चौथी: मैं एकदम ठीक हूं, अगर मैंने संख्या सही बताई है तो चिंता मत करना। कभी-कभार संयोगवश बस ऐसा हो जाता है। चौथी है कश्मीरी महिला, लल्ला। कश्मीरी लोग लल्ला से इतना प्रेम करते हैं कि वे आदरवश कहते हैं कि हम दो ही शब्दों को जानते हैं: एक अल्लाह और दूसरा लल्ला। कश्मीर में निन्यानबे प्रतिशत मुसलमान रहते हैं, तो जब वे कहते हैं कि वे दो ही शब्द जानते हैं, अल्लाह और लल्ला, तो यह महत्वपूर्ण बात है।

लल्ला ने कोई पुस्तक नहीं लिखी है। वह अनपढ़ थी, लेकिन बहुत साहसी थी... वह पूरे जीवन भर नग्न रही–और याद रहे, यह घटना पूरब में सैकड़ों वर्ष पहले घटित हुई थी–और वह एक सुंदर महिला थी। कश्मीरी लोग सुंदर होते हैं; भारत में केवल वे ही वास्तविक रूप से सुंदर लोग हैं। यह वह भटका हुआ कबीला है जिसे मूसा खोज रहे थे। वे मूल रूप से, वास्तव में यहूदी हैं।

जब मूसा अपने लोगों को इजरायल की ओर ले जा रहे थे... आश्चर्य होता है कि यह दीवाना आदमी क्या कर रहा था: इजरायल की ओर क्यों? लेकिन दीवाना तो आखिर दीवाना होता है, इस बात की कोई व्याख्या नहीं कर सकता है। मूसा अपने लोगों के लिए एक जगह की खोज में थे। चालीस वर्ष तक वे रेगिस्तान में भटकते रहे, और तब इजरायल उन्हें मिला! इसी बीच उनके कबीलों में से एक कबीला खो गया। वह कबीला कश्मीर पहुंच गया।

कभी-कभी भटक जाना सौभाग्य होता है। मूसा को वह कबीला नहीं मिल पाया। क्या तुम्हें पता है कि बाद में अपने भटके हुए कबीले को खोजते हुए मूसा अंततः कश्मीर पहुंच गए... और वहीं उनका निधन हुआ। उनकी कब्र इजरायल में नहीं है, वह कश्मीर में है।

आश्चर्य है, मूसा ने कश्मीर में शरीर छोड़ा, जीसस ने कश्मीर में शरीर छोड़ा। मैं अनेक बार कश्मीर गया हूं, और मैं जानता हूं कि यह ऐसा स्थान है कि मन होता है, "आह, मैं इसी क्षण मर सकता, अभी और यहीं... !" यह इतना खूबसूरत है कि इसके बाद जीने का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

कश्मीरी लोग सुंदर होते हैं–गरीब, लेकिन बहुत ही सुंदर। लल्ला कश्मीरी महिला थी, अनपढ़, लेकिन फिर भी वह गा सकती थी, नाच सकती थी। तो उसके कुछ गीत बचा लिए गए हैं। उसको तो, निश्चित ही, नहीं बचाया जा सकता था, लेकिन उसके गीतों को बचा लिया गया है, अपनी पोस्टस्क्रिप्ट में मैं उन गीतों को शामिल करता हूं।

पांचवीं: एक और रहस्यदर्शी, गोरख, एक तंत्रविद, तंत्र की सभी विधाओं में वे इतने निपुण, इतने कुशल थे कि भारत में जो कोई भी बहुत से कार्यों को एक साथ करना जानता है, उसके बारे में कहा जाता है कि वह 'गोरखधंधा' कर रहा है। 'गोरखधंधा' यानी 'गोरख का कार्य।' लोग सोचते हैं कि साधक को अपने मार्ग पर स्थिर रहना चाहिए। गोरख सभी दिशाओं में, सभी आयामों में एक साथ सक्रिय रहे थे।

गोरख का पूरा नाम था, गोरखनाथ। यह नाम उनके शिष्यों ने ही दिया होगा, क्योंकि 'नाथ' का अर्थ है मालिक। गोरख ने आंतरिक रहस्य में प्रवेश की सभी संभव चाबियां दी हैं। जो कुछ भी कहा जा सकता है उन्होंने कह दिया है। वे एक तरह से पूर्णविराम हैं।

लेकिन संसार वैसे ही चलता रहता है। संसार को पूर्णविराम का पता नहीं और मुझे भी पता नहीं। मैं वाक्य के मध्य में मर जाऊंगा तब लोग सोचेंगे कि मैं क्या कहने जा रहा था, इस वाक्य को मैं किस प्रकार पूरा करने जा रहा था। गोरखनाथ का मैं सम्मान करता हूं। उनके बारे में मैं बहुत बोला हूं। किसी दिन उसका अनुवाद होगा, इसलिए इस आदमी पर मुझे और समय बर्बाद करने की जरूरत नहीं है।

छठवीं: ऐसा बहुत कम ही होता है कि एक अकेला व्यक्ति दो श्रेष्ठतम पुस्तकों की रचना कर सके, लेकिन ह्यूबर्ट बेनोइट के साथ ऐसा ही हुआ है। मुझे नहीं मालूम कि फ्रांसीसी लोग इस नाम का उच्चारण कैसे करते हैं ... और वे उच्चारण के मामले में बहुत ही सनकी होते हैं, और मैं इतना लापरवाह! लेकिन मुझे परवाह नहीं है– इससे क्या फर्क पड़ता है कि अगर किसी शब्द का यहां-वहां अशुद्ध उच्चारण हो जाए? पूरे जीवन मैं अशुद्ध उच्चारण करता रहा हूं।

यह व्यक्ति ह्यूबर्ट बेनोइट–उसकी पहली पुस्तक 'लेट-गो' का मैं उल्लेख कर चुका हूं। सच में तो वह उसकी दूसरी पुस्तक थी। 'लेट-गो' लिखने के पहले वह 'दि सुप्रीम डॉक्ट्रीन'–'सर्वोच्च सिंद्धांत' नाम की एक पुस्तक लिख चुका था। उसे भी मैं शामिल कर रहा हूं; वरना वास्तव में मुझे दुख होगा कि मैंने उसका उल्लेख नहीं किया। यह एक बहुत ही सुंदर पुस्तक है, लेकिन बहुत कठिन है पढ़ने में, और उसे समझना तो और भी कठिन है। लेकिन बेनोइट ने इसे जितना संभव हो सरल बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश की है।

सातवीं: एक विशेष रहस्यपूर्ण नंबर, सात। मैं चाहता हूं कि किसी रहस्यवादी व्यक्ति को यह नंबर दिया जाए, शिव, जिन्हें हिंदू-विचार में परम कल्याणकारी देवता माना गया है। शिव को कई पुस्तकों का लेखक बताया जाता है; लेकिन उनमें से अनेक के साथ यह सत्य नहीं है, लोग बस उनके नाम का उपयोग सम्मान पाने के लिए कर रहे हैं। लेकिन यह पुस्तक अत्यंत प्रामाणिक है–'शिव-सूत्र।' इस पर मैं हिंदी में बोल चुका हूं। अंग्रेजी में भी बोलने की सोच रहा हूं। मैंने तारीख भी तय कर रखी है, लेकिन तुम तो मुझे जानते ही हो...

'शिव-सूत्र' में ध्यान की सभी विधियां हैं। कोई भी ऐसी विधि नहीं है जो इस पुस्तक में शामिल न हो। 'शिव-सूत्र' ध्यान करने वालों की बाइबिल है।

आशु, मुझे पता है कि वे क्यों हंस रहे हैं। उन्हें हंसने दो। मैं जानता हूं कि मैं बहुत धीमे बोल रहा हूं, इसीलिए वे हंस रहे हैं। लेकिन मुझे इसमें मजा आ रहा है, और उन्हें भी अपनी हंसी में मजा आ रहा है। तो ठीक है... आशु, बस कभी-कभी इतनी भली महिला मिलती है। संसार में सुंदर महिलाएं बहुत हैं, लेकिन ओह मेरे ईश्वर, भली महिला पाना बहुत कठिन है। उन लोगों को हंस लेने दो। मैं जितना धीमे चाहूंगा उतना धीमे बोलूंगा।

मैं 'शिव-सूत्र' की बात कर रहा था। इस पुस्तक की तरह कोई दूसरी पुस्तक नहीं है, यह अतुलनीय है, अनूठी है।

आठवीं: एक भारतीय रहस्यदर्शी गौरांग की अत्यधिक सुंदर रचना। 'गौरांग' शब्द का अपने आप में अर्थ है 'गोरा आदमी।' वे इतने सुंदर थे... मैं उन्हें अपने सामने खड़ा देख रहा हूं, एकदम गोरे, या कहा जाए बर्फ जैसे श्वेत। वे इतने सुंदर थे कि उनके गांव की सभी लड़कियां उनके प्रेम में पड़ गई थीं। और वे अविवाहित ही रहे। कोई भी लाखों लड़कियों के साथ तो विवाह कर नहीं सकता है। उनमें से एक ही काफी है; लाखों, हे भगवान!–यह तो किसी को भी मार डालेगा! अब तुम मेरे अविवाहित रहने का रहस्य समझ गए होंगे।

गौरांग अपना संदेश गीत गाकर और नाच कर अभिव्यक्त किया करते थे। उनका संदेश शब्दों में नहीं था, बल्कि उससे भी अधिक गीतों में था। गौरांग ने कोई पुस्तक नहीं लिखी है; उनके प्रेमियों ने–और वे कई थे, असल में बहुत प्रेमी थे, उन्होंने उनके गीतों का संग्रह किया है। गीतों का यह संकलन सर्वाधिक सुंदर गीत-संग्रहों में से एक है; उन गीतों जैसी चीज मुझे न पहले कभी मिली और न बाद में। उनके विषय में क्या कहूं? बस यही कि मैं उन्हें प्रेम करता हूं।

नौवीं: फिर एक भारतीय रहस्यदर्शी, तुमने उनके बारे में नहीं सुना होगा। उनको दादू कहते थे, जिसका अर्थ है भाई। वे इतने प्यारे थे कि लोग उनका असली नाम ही भूल गए और उनको बस दादू के नाम से याद करते थे। दादू ने हजारों गीत गाएं हैं, लेकिन उन्होंने कुछ लिखा नहीं है, उनके गीतों को दूसरे लोगों ने एकत्रित किया है, जैसे माली गिरे हुए फूलों को एकत्रित कर लेता है।

दादू के बारे में जो मैं कहता हूं वह सभी संतों के बारे में सत्य है। लिखने में उनको रस नहीं होता है। वे गाते हैं, वे बोलते हैं, वे नाचते हैं, वे इशारा करते हैं, लेकिन वे लिखते नहीं हैं। लिखने से बात सीमित हो जाती है। शब्द की सीमा होती है; केवल तभी वह शब्द हो सकता है। यदि यह असीम है, तो आकाश होगा, जिसमें सभी तारे समा जाएं। संत का अनुभव ऐसा ही है।

मैंने भी स्वयं कुछ नहीं लिखा है... जो मेरे बहुत ही अंतरंग थे उनको ही मैंने कुछ पत्र लिखे हैं, यह सोच कर, इस आशा से कि शायद वे कुछ समझ जाएं। मैं नहीं जानता कि वे समझे या नहीं। इसलिए मेरी पुस्तक 'ए कप ऑफ टी' ही एकमात्र पुस्तक है जिसके बारे में कहा जा सकता है कि उसे मैंने लिखा है। यह मेरे पत्रों का संग्रह है। अन्यथा मैंने कुछ नहीं लिखा है।

दादू के गीतों को संगृहीत किया गया है। मैं उन पर बोला हूं। वे उन ऊंचाइयों पर पहुंच जाते हैं जहां पहुंचने के लिए लोग कामना करते हैं।

दसवीं: और अंतिम। आज के अंतिम व्यक्ति हैं पृथ्वी पर हुए अनोखे व्यक्तियों में से एक, सरमद। वे एक सूफी थे, और एक मुसलमान बादशाह के आदेश पर मस्जिद में उनकी हत्या कर दी गई थी। उनकी हत्या सिर्फ इसलिए कर दी गई कि मुसलमानों का एक विशेष सूत्र है, जिससे वे अपनी प्रार्थना किया करते हैं। उनकी प्रार्थना है: "ला इलाहा इल्लल्लाह–एक ही अल्लाह है और कोई अल्लाह नहीं है।" और यह उनके लिए पर्याप्त नहीं है; वे इसमें कुछ और जोड़ना चाहते हैं। वे दुनिया में घोषणा करना चाहते हैं कि केवल मोहम्मद ही खुदा के एकमात्र पैगंबर हैं: 'ला इलाहा इल्लल्लाह; मोहम्मद रसूलल्लाह। एक ही अल्लाह है और कोई अल्लाह नहीं है, और उसका एक ही पैगंबर है मोहम्मद।"

सूफी दूसरे हिस्से को इनकार करते हैं, कि अल्लाह का एक ही पैगंबर है मोहम्मद। यही सरमद का पाप था। निस्संदेह कोई भी एकमात्र पैगंबर नहीं हो सकता है; बेशक कोई भी एकमात्र पैगंबर नहीं हो सकता है–न मोहम्मद, न जीसस, न मूसा, न बुद्ध। मुसलमान मौलवियों के साथ षडयंत्र करके भारत के मुसलमान बादशाह ने सरमद का बड़ी बेरहमी के साथ कत्ल कर दिया था। लेकिन वे हंसे, और बोले: "यहां तक कि मृत्यु के बाद भी मैं यही कहूंगा: ला इलाहा इल्लल्लाह–एक ही अल्लाह है और कोई अल्लाह नहीं है।"

दिल्ली की विशाल मस्जिद, जामा मस्जिद, जहां सरमद का कत्ल किया गया था, आज भी इस महान व्यक्ति की हत्या की गवाह बनी खड़ी है। बहुत ही अमानवीय ढंग से सरमद की हत्या गई: उनकी गर्दन काट दी गई थी। उनकी गर्दन जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर लुढ़कती चली गई। हजारों लोग वहां इकट्ठे थे उन्होंने सीढ़ियों पर लुढ़कती गर्दन से यह स्पष्ट आवाज सुनी: "ला इलाहा इल्लल्लाह–एक ही अल्लाह है और कोई अल्लाह नहीं है..."

मुझे नहीं पता कि कहानी सच है या नहीं, लेकिन इसे सच होना चाहिए। इसे सच होना ही चाहिए। सत्य को भी सरमद जैसे व्यक्ति के साथ समझौता करना पड़ता है। मैं सरमद को प्रेम करता हूं। उन्होंने कोई पुस्तक नहीं लिखी है, लेकिन उनके वचनों को संगृहीत किया गया है और सबसे महत्वपूर्ण है: एक ही अल्लाह है और कोई अल्लाह नहीं है, और कोई पैगंबर नहीं है, तुम्हारे और अल्लाह के बीच में कोई नहीं है। कोई मध्यस्थ नहीं है, अल्लाह सीधा उपलब्ध है। बस जरूरत है तो थोड़ी सी दीवानगी की और बहुत सारे ध्यान की, मेडिटेशन की।

उस समय मैं कुछ कहने जा रहा था, लेकिन मैं कुछ कहूंगा नहीं... उसे कहा नहीं जा सकता है। यह पहले भी नहीं कहा गया है और मुझे भी नहीं कहना चाहिए।

आज इतना ही

सत्र-08

एक साधक बनो–एक खोजी। पोस्टस्क्रिप्ट, पश्चलेख जारी है।

पहली किताब है फ्रेड्रिक नीत्शे की: 'विल टु पॉवर।' जब तक वह जीवित था, इसे प्रकाशित नहीं किया गया। यह उसके मरने के बाद प्रकाशित हुई, और इस बीच, पुस्तक के छपने से पहले ही, तुम्हारे बहुत से तथाकथित महान व्यक्ति इसकी पाडुंलिपी से चोरी कर चुके थे।

अल्फ्रेड एडलर 'महानतम' मनोवैज्ञानिकों में से एक था। मनोवैज्ञानिकों की त्रिमूर्ति में से वह एक था: फ्रायड, जुंग और एडलर। वह बस एक चोर है। एडलर ने अपना पूरा मनोविज्ञान फ्रेड्रिक नीत्शे से चुराया है।

एडलर कहता है: 'शक्ति पाने की आकांक्षा' मनुष्य की मौलिक प्रवृत्ति है। गजब! किसको वह धोखा देने की कोशिश कर रहा था? फिर भी लाखों मूर्ख धोखा खा गए। अभी भी एडलर को महान व्यक्ति माना जाता है। वह बस एक छोटा सा आदमी है, उसे भूल जाओ और क्षमा कर दो।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने अपना पूरा मौलिक दर्शनशास्त्र नीत्शे से चुराया है। महान जी. बी. एस.–नोबल पुरस्कार विजेता, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ। वह जो कुछ भी कहता है सभी नीत्शे के 'विल टु पॉवर' के कुछ वाक्यों में लिखा हुआ है।

यहां तक कि एक तथाकथित महान भारतीय संत भी एडलर और बर्नार्ड शॉ से पीछे नहीं रहे। उनका नाम है, श्री अरविंदो। सारी दुनिया में लाखों लोगों द्वारा उन्हें इस युग के श्रेष्ठतम संत के रूप में पूजा जाता है। उन्होंने अपने 'सुपरमैन' के विचार को 'विल टु पॉवर' की पाडुंलिपी से चोरी किया है। श्री अरविंदो केवल एक साधारण से विद्वान थे, उनकी प्रशंसा करने के लिए ज्यादा कुछ भी नहीं है।

नीत्शे की पुस्तक उसके मरने के वर्षों बाद प्रकाशित हुई थी। उसकी बहिन ने इसे रोका हुआ था। वह एक व्यापारिक बुद्धि की होशियार महिला थी। उसकी पूर्व-प्रकाशित पुस्तकों को वह बेच रही थी, और सही समय की प्रतीक्षा कर रही थी कि कब 'दि विल टु पॉवर' को बेचा जा सके। उसे नीत्शे से, उसके दर्शन से, मानवता के प्रति उसके योगदान से कोई मतलब नहीं था।

जब वह जीवित था तब नीत्शे ने स्वयं यह पुस्तक प्रकाशित क्यों नहीं की? मैं जानता हूं क्यों। उसके लिए भी इसकी विषय-सामग्री भारी पड़ रही थी। वह कोई बुद्धपुरुष नहीं था। वह भयभीत था, उसे इस बात का भय था कि प्रकाशन के बाद पता नहीं उसके साथ क्या हो जाए। और पुस्तक शुद्ध डाइनामाइट है, आग है। सोते समय भी वह हमेशा इसे अपने तकिए के नीचे रखता था। उसे भय था कि कहीं यह पुस्तक गलत हाथों में न पड़ जाए। वह बहादुर आदमी नहीं था जैसा कि लोग आमतौर पर उसके बारे में सोचते हैं, वह एक कायर था। लेकिन अस्तित्व के ढंग भी अजीब हैं: कभी-कभी कायर पर भी सितारों की बरसात हो जाती है, और नीत्शे के साथ यही हुआ है।

एडोल्फ हिटलर ने अपना पूरा दर्शनशास्त्र नीत्शे से चुराया है। हिटलर कुछ भी ठीक से करने में असमर्थ था; वह एक तरह से मूर्ख था, सच में उसे भारत में होना चाहिए था, जर्मनी में नहीं, और मुक्तानंद का शिष्य हो जाना चाहिए था। उसके लिए मैं एक अच्छा सा नाम भी बता सकता हूं: स्वामी मूर्खानंदा। वह यही था, मानवीय इतिहास का सबसे बड़ा मूर्ख। वह सोचता था कि वह नीत्शे को समझता है। नीत्शे को समझना बहुत ही कठिन है; वह बहुत सूक्ष्म, बहुत गहरा और बहुत गंभीर है। वह किसी भी मूर्खानंदा की पहुंच के बाहर है।

फ्रेड्रिक नीत्शे ने अपनी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक को अपनी मृत्यु के बाद प्रकाशित होने के लिए रखा था। उसकी एक पुस्तक 'दस स्पेक जरथुस्त्रा' मैं पहले ही लिखवा चुका हूं, लेकिन 'विल टु पॉवर' के सामने वह फीकी पड़ जाती है। यह कोई दार्शनिक ग्रंथ नहीं है, जिसे व्यवस्थित ढंग से लिखा हो, इसमें केवल सूत्र हैं, घटनाएं हैं। तुम्हें उनके बीच संबंध खोजना होगा। इसे तुम्हारे पढ़ने के लिए नहीं लिखा गया है। इस कारण, हालांकि प्रकाशित हो जाने के बाद भी इसे बहुत अधिक नहीं पढ़ा गया है। कौन झंझट में पड़े! कौन प्रयास करना चाहता है?–और 'विल टु पॉवर' को समझने के लिए अत्यधिक प्रयास चाहिए। यह फ्रेड्रिक नीत्शे की आत्मा का सारतत्व है। और वह एक दीवाना आदमी था! इसको समझ लेना, इससे पार चले जाना है।

यह पहली किताब है जिसे मैं आज शामिल करता हूं।

दूसरी: मैं फिर से पी. डी. ऑस्पेंस्की का जिक्र करने जा रहा हूं। पहले ही मैं उसकी दो पुस्तकों का उल्लेख कर चुका हूं: एक 'टर्शियम आर्गानम,' जिसे उसने अपने सदगुरु गुरजिएफ से मिलने के पहले लिखा था। 'टर्शियम आर्गानम' खासतौर पर गणितज्ञों के बीच प्रसिद्ध है, क्योंकि ऑस्पेंस्की ने जब यह पुस्तक लिखी तब वह एक गणितज्ञ था। दूसरी पुस्तक, 'इन सर्च ऑफ दि मिरेकुलस,' उसने उस समय लिखी जब वह गुरजिएफ के साथ कई वर्ष रह चुका था।

लेकिन एक तीसरी पुस्तक भी है जो इन दोनों पुस्तकों के बीच के समय में लिखी गई थी–'टर्शियम आर्गानम' के बाद और गुरजिएफ से मिलने के पहले। इस पुस्तक से बहुत कम लोग परिचित हैं, और इसका नाम है 'ए न्यू मॉडल ऑफ दि यूनिवर्स।' यह एक अदभुत पुस्तक है, बहुत ही अदभुत।

ऑस्पेंस्की ने दुनिया भर में सदगुरु की खोज की, खासकर भारत में, क्योंकि अपनी मूढ़तावश लोग सोचते हैं कि सदगुरु केवल भारत में ही मिलते हैं। ऑस्पेंस्की ने भारत में खोज की और वह कई वर्षों तक खोजता रहा। यहां तक कि बंबई में भी उसने सदगुरु की खोज की। उन दिनों में उसने यह अत्यधिक सुंदर पुस्तक, 'ए न्यू मॉडल ऑफ दि यूनिवर्स' लिखी। यह एक कवि की कल्पना है, क्योंकि उसे खुद ही पता नहीं कि वह किसकी बात कर रहा है। लेकिन वह जो भी बात कर रहा है वह सत्य के बहुत, बहुत, बहुत करीब है...लेकिन बस करीब, याद रखना, और बाल बराबर दूरी भी तुम्हें दूर रखने के लिए काफी है। वह दूर ही बना रहा। और वह खोजता ही रहा, खोजता ही रहा...

इस पुस्तक में उसने अपनी खोज का वर्णन किया है। मास्को के एक कैफेटेरिया में, जहां उसे गुरजिएफ मिलता है, वहां पहुंच कर यह पुस्तक अजीब ढंग से समाप्त हो जाती है। गुरजिएफ निश्चित ही बहुत अनूठा सदगुरु था। वह कैफेटेरिया में बैठ कर लिखा करता था। लिखने के लिए भी क्या जगह चुनी! वह कैफेटेरिया में बैठा करता था–लोग खा रहे हैं, बातें कर रहे हैं, बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे हैं, रास्ते से शोरगुल आ रहा है, हॉर्न की आवाजें आ रही हैं, और गुरजिएफ खिड़की के पास, इन सारे व्यर्थ के उपद्रवों से घिरा हुआ बैठा है, और अपनी पुस्तक 'ऑल एंड एवरीथिंग' लिख रहा है।

ऑस्पेंस्की ने इस आदमी को देखा और उसके प्रेम में पड़ गया। प्रेम को कौन रोक पाया है? सदगुरु को देख कर उसके प्रेम में न पड़ना करीब-करीब असंभव है, हां, अगर तुम बिलकुल मरे हुए हो, अगर तुम पत्थर के बने हो, या प्लास्टिक से बने हो–तो बात और है! जैसे ही उसने गुरजिएफ को देखा... आश्चर्य: उसने देखा कि यही वे आंखें हैं जिन्हें खोजते हुए वह पूरी पृथ्वी पर घूम रहा था, भारत की धूलभरी गंदी सड़कों पर भटक रहा था, और यह कैफेटेरिया तो मास्को में उसके घर के बिलकुल पास ही था! तुम जिसे खोजते हो वह कभी-कभी बिलकुल पास में ही मिल जाता है।

'ए न्यू मॉडल ऑफ दि यूनिवर्स' काव्यात्मक पुस्तक है, लेकिन यह मेरे दर्शन के बहुत करीब है; इसीलिए मैं इसे शामिल कर रहा हूं।

तीसरी: सनाई, और उनके सुंदर वक्तव्य। सनाई जैसे लोग तर्क नहीं करते, वे केवल वक्तव्य देते हैं। उन्हें तर्क करने की जरूरत नहीं है, उनका होना ही प्रमाण है; दूसरे किसी तर्क की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास आकर मेरी आंखों में देखो, तो तुम्हें पता चलेगा कि यहां कोई तर्क नहीं है, बस वक्तव्य है। वक्तव्य सदा सत्य होता है। तर्क में चालाकी हो सकती है, लेकिन सत्य शायद ही हो।

सनाई से मुझे प्रेम है। अगर मैं उनके बारे में अतिशयोक्ति करना चाहूं, तो भी नहीं कर सकता, यह असंभव है। सनाई सूफी धर्म के सारतत्व हैं।

'तसव्वुफ' के लिए अंग्रेजी भाषा में शब्द है–सूफीज्म। तसव्वुफ का अर्थ है 'शुद्ध प्रेम।' 'सूफीज्म' सूफ से आता है, जिसका अर्थ है ऊन, और सूफी का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिसने ऊनी चोगा पहन रखा हो। सनाई काली टोपी पहना करते थे–सफेद चोगा और काली टोपी। कोई तर्क नहीं, कोई कारण नहीं, वे बस मेरी तरह एक दीवाने आदमी थे। लेकिन तुम कर भी क्या सकते हो, इन लोगों को जैसे वे हैं वैसे ही उन्हें स्वीकार करना पड़ता है। चाहे तुम उन्हें प्रेम करो या घृणा। प्रेम या घृणा, वे तुम्हें और कोई दूसरा विकल्प नहीं देते हैं। तुम उनके साथ हो सकते हो या उनके विरोध में, लेकिन तुम उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते हो। संतों का यही चमत्कार होता है। मेरे निकट रहते हुए तुम अच्छी तरह से जानते हो कि मेरे पास जो भी आता है वह या तो मेरा मित्र बन जाता है या शत्रु। मेरे पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं आ सकता जो बिना मित्र या शत्रु बने वापस लौट जाए। देखो! कभी-कभी मैं भी काव्य की रचना कर सकता हूं। एक दीवाना आदमी कुछ भी कर सकता है।

सनाई बिना किसी तर्क के केवल बोलते हैं। बस वे कह देते हैं कि यह ऐसा है। तुम नहीं पूछ सकते क्यों; वे कहेंगे, "चुप रहो! वहां क्यों नहीं है!"

मैं सनाई को प्रेम करता हूं। मैं उन्हें भूल नहीं गया था; मैं उनका उल्लेख इसलिए नहीं करना चाहता था क्योंकि उन्हें मैं केवल अपने लिए अपने हृदय में रखना चाहता था। लेकिन एक पोस्टस्क्रिप्ट में भी अपने हृदय को उंडेला जा सकता है।

मेरे पिता मुझे इसी तरह पत्र लिखा करते थे। पत्र बहुत छोटा होता था–लिखने के लिए ज्यादा कुछ था नहीं–तो वे एक पोस्टस्क्रिप्ट लिखा करते थे। मुझे आश्चर्य होता था कि पत्र में क्या छूट गया था, और सचमुच वे कोई मतलब की बात ही लिखते थे। फिर पोस्टस्क्रिप्ट भी पर्याप्त नहीं होता था। एक और पोस्ट पोस्टस्क्रिप्ट होता था। "हे भगवान," मैं सोचा करता, "अब वे क्या भूल गए हैं?" फिर से वे सचमुच कोई सुंदर बात लिख देते थे जो पत्र में लिखी नहीं जा सकती थी। पोस्टस्क्रिप्ट एक ज्यादा अंतरंग घटना है, और पोस्ट पोस्टस्क्रिप्ट तो और भी अंतरंग।

मेरे पिता नहीं रहे, लेकिन ऐसे क्षणों में मुझे उनकी याद आती है, जब मैं अचानक देखता हूं कि उन्हीं की तरह व्यवहार कर रहा हूं। जब मैं उनका चित्र देखता हूं, तो मुझे ऐसा लगता है कि परमात्मा ने चाहा तो मैं भी पचहत्तर साल की उम्र में उन्हीं की तरह लगूंगा। और यह महसूस करना बहुत अच्छा है कि मैं उनसे भिन्न नहीं दिखूंगा, अपनी अंतिम श्वास तक उनका प्रतिनिधित्व करता रहूंगा।

देवराज–देवगीत के स्थान पर मैं गलती से देवराज नहीं कह रहा हूं; मेरा मतलब है देवराज... इस बात को तुम्हें याद रखना चाहिए। मेरा शरीर ठीक मेरे पिता के शरीर की तरह व्यवहार करता है, यहां तक की बीमारी में भी। मुझे इस बात पर गर्व है। मेरे पिता को अस्थमा की तकलीफ थी, इसलिए जब मैं अस्थमा से

पीड़ित होता हूं तो मैं जानता हूं कि यह शरीर मेरे पिता का अंश है, और इसमें वे सभी दोष, समस्याएं और कमजोरियां हैं जो उनमें थीं। उनको डायबिटीज थी, मुझे भी है। उन्हें बात करना अच्छा लगता था, और मैंने जीवन भर बात करने के अलावा कुछ किया नहीं है। हर तरह से मैं उनका पुत्र हूं।

वे एक महान पिता थे–इसलिए नहीं कि वे मेरे पिता थे, बल्कि इसलिए कि पिता होते हुए भी उन्होंने अपने पुत्र के चरणस्पर्श किए और वे उसके शिष्य बन गए थे। यह उनकी महानता थी। किसी भी पिता ने पहले कभी ऐसा नहीं किया है, और मैं नहीं समझता कि इस सड़ी-गली पृथ्वी पर आगे भी कभी ऐसा हो पाएगा। ऐसा हो पाना असंभव लगता है। पिता अपने ही पुत्र का शिष्य बने? बुद्ध के पिता झिझके थे; मेरे पिता एक क्षण को भी नहीं झिझके।

अब बुद्ध के पिता के लिए उनका शिष्य बन जाना बहुत आसान है, क्योंकि बुद्ध तथाकथित धर्मों की आशा के अनुरूप एक संत थे। लेकिन किसी भी पिता के लिए मेरे जैसे आदमी का शिष्य हो पाना बहुत कठिन है। मैं किसी भी स्वीकृत मापदंड से संत नहीं हूं, और इस बात से मैं खुश हूं क्योंकि किसी भी श्रेणी में रखा जाना मुझे पसंद नहीं है। अगर मुझे स्वर्ग में भी तथाकथित संत दिखाई पड़ेंगे तो मैं वहां से भी लौट आऊंगा। मैंने पृथ्वी पर बहुत सारे संतों को देख लिया है। मैं कोई संत नहीं हूं। मैं एकदम ही अलग तरह का आदमी हूं–जिसे मैं जोरबा दि बुद्धा कहता हूं।

मेरी बदनामी को जानते हुए भी, तथाकथित सम्मानित जगहों से मेरी आलोचनाओं को अच्छी तरह जानते हुए भी वे मेरे शिष्य बन गए। यह साहस है, अत्यधिक साहस। जब पहली बार उन्होंने मेरे पैर छुए तो मैं भी आश्चर्यचकित रह गया। मैं रो पड़ा–निस्संदेह अपने कमरे में ही रोया, जिससे कोई मेरे आंसू न देख सके। अपनी आंखों में उन आंसुओं को मैं अब भी महसूस कर रहा हूं। जब उन्होंने मुझसे दीक्षा लेने की बात कही तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। उस समय मैं बस मौन रहा। मैं न तो हां कह सका और न ही न, मैं बस मौन था, भौचक्का, आश्चर्यचकित। हां, तुम्हारी भाषा में सही अभिव्यक्ति है; 'आश्चर्य से भर गया था'–और बहुत अधिक आश्चर्य से भर गया था।

क्या संख्या थी? तुम मत बताना, आशु; तुम संख्याओं के पार चली जाती हो। मुझे संख्याओं में थोड़ा और उलझ जाने दो।

''अगली संख्या चार है, ओशो।''

अगली संख्या चार है–अच्छा है। होशियार हो तुम। तुमने तीसरी नहीं कहा, तुमने कहा, ''अगली संख्या चार है।'' तुम्हें पता है तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते हो। तुम इस बात को अच्छी तरह जानते हो कि अगर तुमने कहा तीसरी, तो मैं अगली तीसरी की बात करना प्रारंभ कर दूंगा। ठीक है, कभी-कभी मैं अपने शिष्यों को उनके अपने मार्ग से चलने देता हूं।

चौथी: चौथा नाम है, डायोनिसियस। उनके वक्तव्यों के बारे में मैं बोल चुका हूं, ये उनके शिष्यों द्वारा नोट किए गए कुछ अंश हैं। लेकिन मैं उन पर इसीलिए बोला कि संसार को यह पता लग जाए कि डायोनिसियस जैसे लोगों को भुलाया नहीं जाना चाहिए। वे ही असली लोग हैं।

असली आदमियों को तुम्हारी अंगुलियों पर गिना जा सकता है। असली आदमी वह है जिसने वास्तविकता का साक्षात किसी वस्तु की भांति बाहर से नहीं, बल्कि स्वयं अपने ही भीतर किया है। डायोनिसियस बुद्धपुरुषों की श्रेणी में हैं। उनके कुछ वक्तव्य मुझे फिर से याद आ रहे हैं–इन वक्तव्यों के संकलन को मैं पुस्तक नहीं कह सकता; पुस्तक कहे जाने के लिए इसमें अंशों से अधिक कुछ और भी होना चाहिए।

पांचवीं...अब मैं इस श्रृंखला के सबसे अनूठे क्षणों की ओर आ रहा हूं। 'एट दि फीट ऑफ दि मास्टर'–'श्री गुरु चरणों में' नाम की एक पुस्तक है। इसके लेखक के रूप में 'जिद्दू कृष्णमूर्ति' का नाम दिया गया है, लेकिन कृष्णमूर्ति का कहना है कि उन्हें बिलकुल भी स्मरण नहीं है कि उन्होंने इस पुस्तक को कब लिखा! यह पुस्तक पहले, बहुत पहले, जब कृष्णमूर्ति नौ या दस वर्ष के रहे होंगे, उस समय लिखी गई थी। उन्हें इतनी पुरानी बात कैसे स्मरण होगी कि यह पुस्तक किस समय प्रकाशित हुई थी। लेकिन यह एक महान रचना है।

मैं दुनिया के सामने पहली बार यह खुलासा करना चाहता हूं कि इसका असली लेखक कौन है: एनीबीसेंट! पुस्तक एनीबीसेंट ने लिखी है, कृष्णमूर्ति ने नहीं। तो फिर एनीबीसेंट ने इसे अपनी खुद की रचना क्यों नहीं बताया? इसके पीछे एक कारण था। वह चाहती थीं कि कृष्णमूर्ति को संसार एक सदगुरु के रूप में जाने। यह बस एक मां की महत्वाकांक्षा थी। उन्होंने कृष्णमूर्ति का पालन-पोषण किया था, और उन्होंने कृष्णमूर्ति को वैसा ही प्रेम किया था जैसे कोई मां अपने खुद के बच्चे से करती है। अपनी वृद्धावस्था में उनकी एक ही इच्छा थी कि कृष्णमूर्ति एक वर्ल्ड टीचर, एक जगतगुरु बन जाएं। अब कृष्णमूर्ति के पास जगत से कहने के लिए कुछ भी नहीं है, तो कैसे उन्हें जगतगुरु घोषित किया जा सकता है? इस पुस्तक 'एट दि फीट ऑफ दि मास्टर' में एनीबीसेंट ने वह उस मांग को पूरा करने की कोशिश की है।

कृष्णमूर्ति उस पुस्तक के लेखक नहीं हैं। वे स्वयं कहते हैं कि उन्हें याद नहीं है कि कभी उन्होंने इसे लिखा हो। वे एक प्रामाणिक व्यक्ति हैं, सच्चे और ईमानदार, लेकिन पुस्तक अब भी उनके नाम से बेची जा रही है। उन्हें इसे रोक देना चाहिए। उन्हें इस पुस्तक के प्रकाशकों को स्पष्ट कर देना चाहिए कि वे इसके लेखक नहीं हैं। यदि वे इसे प्रकाशित ही करना चाहते हैं, तो इसे बिना नाम के प्रकाशित करें। लेकिन उन्होंने ऐसा स्पष्ट किया नहीं है। इसीलिए मुझे कहना पड़ता है कि अब भी वे झेन के दस बैलों वाले कार्ड्स में नौवां चित्र हैं। वे इनकार नहीं कर सकते, वे सिर्फ इतना ही कहते हैं कि मुझे याद नहीं है। इसे इनकार करो! कहो कि यह मेरी रचना नहीं है।

लेकिन पुस्तक सुंदर है। सच पूछो तो इसको लिख कर किसी को भी गर्व होगा। वे सभी लोग जो इस मार्ग पर यात्रा करना चाहते हैं और गुरु के साथ लयबद्ध होना चाहते हैं, उन्हें 'एट दि फीट ऑफ दि मास्टर' का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। मैं अध्ययन करने को कह रहा हूं, पढ़ने के लिए नहीं, क्योंकि लोग उपन्यास पढ़ते हैं, या लोबसांग रम्पा की आध्यात्मिक कथाएं और उसकी दर्जनों पुस्तकें, या ऐसे अनेक काल्पनिक लोगों की पुस्तकों को पढ़ा जाता है। आजकल चारों ओर बहुत सारी पुस्तकें मिल रही हैं, क्योंकि उनकी जरूरत है, तो उनका एक बाजार है। अब कोई भी गुरु बन सकता है...

बाबा फ्रीजॉन... मुझे हंसी आती है। कैसा पतन है! फ्रीजॉन भी, जिसने अपने आप को नहीं, केवल अपना नाम बदल लिया है... अब वह अपने को 'बाबा' नहीं कहता है। वह अपने को बाबा कहता था क्योंकि वह बाबा मुक्तानंद का शिष्य था। भारत में, प्रेमवश गुरु को बाबा कहा जाता है, इसलिए उसने अपने आप को बाबा कहना शुरू कर दिया था। लेकिन फिर, यह समझ आने पर कि यह नकलची बन जाना है, उसने इसे छोड़ दिया। अब वह अपने को 'दादा फ्रीजॉन' कहता है। यह वही बात है; चाहे दादा हो या बाबा, यह सब बकवास है। लेकिन ऐसे ही लोग चारों ओर हैं। इनसे सावधान रहना। जब तक तुम्हारे भीतर स्पष्ट बोध न हो, तो इस बात की पूरी संभावना है कि तुम किसी न किसी के जाल में फंस जाओगे।

छठवीं: एक और सूफी फकीर, जुन्नैद, अल-हिल्लाज मंसूर के गुरु... अल-हिल्लाज विश्वविख्यात हो गए, क्योंकि उनकी हत्या कर दी गई थी; इस कारण जुन्नैद अज्ञात रह गए। लेकिन जुन्नैद के कुछ वाक्य, कुछ अंश,

जो बच गए हैं, वे सचमुच में श्रेष्ठ हैं। वरना अल-लिल्लाज मंसूर जैसा शिष्य वे कैसे तैयार कर सकते थे? बस उनकी कही कुछ कहानियां, सूत्र और वक्तव्य बच रहे हैं, और उनके भी कुछ अंश ही शेष हैं। रहस्यदर्शी का ढंग यही है; उन्होंने इन सबको पूरा करने की चिंता भी नहीं की। वे फूलों का हार नहीं बनाते, बल्कि बस उनका ढेर लगा देते हैं। अब यह तुम पर निर्भर है जो चाहे चुन लो।

जुन्नैद ने अल-हिल्लाज मंसूर से कहा था, "जो तूने जाना है, उसे अपने भीतर ही रख। 'अनलहक' की घोषणा इतनी जोर से मत कर! यदि तुझे घोषणा करना ही है, तो इस ढंग से कर कि कोई तुझे सुन न सके।"

जुन्नैद के प्रति कोई भी न्यायपूर्ण नहीं था। वे लोग सोचते थे कि जुन्नैद कुछ भयभीत थे। ऐसा नहीं है। सत्य जान लेना सरल है, इसे घोषित कर देना सरल है; इसे अपने हृदय में गोपनीय, गुप्त बनाए रखना बेहद मुश्किल है। जिनको तुम्हारे अस्तित्व के कुएं से, तुम्हारे मौन से अपनी प्यास बुझानी हो उन्हें अपने करीब आने दो।

सातवीं: यह पुस्तक जिन्होंने लिखी है उन्हें जुन्नैद अवश्य पसंद करते: मेहर बाबा। वे तीस वर्षों तक मौन रहे। कोई भी इतने लंबे समय तक मौन नहीं रह पाया है। महावीर केवल बारह वर्ष तक मौन रहे थे, वह एक रिकॉर्ड था। मेहर बाबा ने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए। तीस वर्षों का मौन! वे अपने हाथों की मुद्राएं बना कर भाव व्यक्त करने के लिए उनका उपयोग करते थे, जैसा कि बोलते समय मैं करता हूं। क्योंकि कुछ बातें हैं जो केवल हाव-भाव से ही कही जा सकती हैं। मेहर बाबा ने शब्दों को छोड़ दिया था, लेकिन वे हाव-भाव को नहीं छोड़ सके। और हम सौभाग्यशाली हैं कि उन्होंने हाव-भाव नहीं छोड़े। वे निकटवर्ती लोग जो उनके साथ रहते थे उन्होंने हाव-भाव के नोट्स लिखने प्रारंभ कर दिए, और मेहर बाबा के तीस वर्ष के मौन के बाद यह पुस्तक प्रकाशित हुई, इसका शीर्षक अजीब सा है, जैसा कि होना भी चाहिए। पुस्तक का शीर्षक है 'गॉड स्पीक्स।'

मेहर बाबा मौन में जीए और मौन में ही मर गए। वे कभी नहीं बोले, लेकिन उनका मौन ही अपने आप में उनका वक्तव्य, उनकी अभिव्यक्ति, उनका गीत था। इसलिए आश्चर्य नहीं है कि इस पुस्तक का शीर्षक 'गॉड स्पीक्स' रखा गया।

एक झेन पुस्तक है जिसमें कहा गया है: 'फूल नहीं बोलते।' यह गलत है, बिलकुल गलत। फूल भी बोलता है। निस्संदेह वह अंग्रेजी या जापानी या संस्कृत में नहीं बोलता; वह फूलों की भाषा में बोलता है। वह अपनी सुगंध के माध्यम से बोलता है। मैं इस बात को अच्छी तरह से जानता हूं, क्योंकि सुगंध से मुझे एलर्जी है। मैं मीलों दूर से फूल को बोलते हुए सुन सकता हूं, यह मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं। यह कोई भाषा का अलंकार नहीं है। मैं फिर से कहता हूं, फूल भी बोलता है, लेकिन उसकी भाषा वही है जो फूलों की होती है। 'गॉड स्पीक्स '–'परमात्मा बोलता है,' भले ही सुनने में कैसा भी लगे, मेहर बाबा के बारे में यही सच है। वे बिलकुल ही बिना बोले ही बोले हैं।

नंबर प्लीज, देवगीत?

"नंबर आठ, ओशो।"

हमने लंबे समय तक यात्रा की है; बस थोड़ा धैर्य और।

आठवीं एक बहुत ही अज्ञात सी पुस्तक है। इसे अज्ञात नहीं रहना चाहिए, क्योंकि इसे जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने लिखा है। पुस्तक का नाम है: 'मैक्सिम्स फॉर ए रेवोल्यूशनरी।' 'मैक्सिम्स फॉर ए रेवोल्यूशनरी' को छोड़ कर

उनकी सभी पुस्तकों से लोग अच्छी तरह से परिचित हैं। केवल मुझ जैसा दीवाना ही इसे चुन सकता है। जो भी उसने लिखा है मैं सब-कुछ भूल चुका हूं–वह सब बकवास है, बस कचरा है।

वैसे, यहां मेरे संन्यासियों में से एक का नाम है, बोधिगर्भ। 'गर्भ' का मतलब है गर्भिणी; इस नाम का अर्थ है 'गर्भ में बुद्ध है, बुद्ध की भांति जन्म लेने को तैयार।' कुछ लोग उसे बोधि-गार्बेज बुलाते हैं–यह मुझे पसंद है। काफी हद तक यह ठीक भी है: बोधि गार्बेज–हां, यदि तुम बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाओ, बोध को, तो कचरा भी दिव्य हो जाएगा; वरना पहले सब-कुछ कचरा है।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की छोटी सी पुस्तक 'मैक्सिम्स फॉर ए रिवोल्यूशनरी' मुझे प्रिय है–सभी ने इसे भुला दिया, लेकिन मैंने नहीं। मैं अनोखी चीजें, अनोखे लोग, अनोखी जगहों को चुनता हूं। ऐसा लगता है कि 'मैक्सिम्स फॉर ए रिवोल्यूशनरी' जॉर्ज बर्नार्ड शॉ पर उतरी है... अन्यथा वह तो सिर्फ एक संदेहवादी था। वह कोई संत भी नहीं था, न आत्मज्ञानी था और न ही आत्मज्ञान के बारे में उसने कभी सोचा होगा। उसने तो शायद इस शब्द को भी नहीं सुना होगा; वह एक अलग ही दुनिया का आदमी था।

वैसे, मैं यह बता दूं कि वह एक लड़की से प्रेम करता था। उसे प्रेम हो गया था और वह विवाह करना चाहता था, लेकिन वह लड़की संबोधि प्राप्त करना चाहती थी। वह सत्य की खोज करना चाहती थी, इसलिए वह भारत चली गई। वह महिला और कोई नहीं एनीबीसेंट थी। परमात्मा का शुक्र है

कि जी. बी. एस. उसे अपनी पत्नी बनने के लिए राजी नहीं कर पाया; वरना हम लोग एक अत्यंत प्रतिभावान महिला से वंचित रह जाते। उसकी अंतर्दृष्टि, उसका प्रेम, उसकी प्रज्ञा... हां, वह एक विच, एक प्रज्ञावान महिला थी। सच में ही मेरा मतलब यह है कि वह एक प्रज्ञावान महिला थी। मेरा मतलब बिच, कुतिया से नहीं है, मेरा मतलब है विच, प्रज्ञावान। 'विच' सच में ही एक सुंदर शब्द है; इसका अर्थ है: प्रज्ञावान।

यह पुरुषों की दुनिया है। जब एक पुरुष प्रज्ञा को उपलब्ध होता है, तो उसे बुद्ध, क्राइस्ट, पैगंबर कहा जाता है; जब एक स्त्री प्रज्ञा को उपलब्ध होती है, तो उसे विच कहा जाता है। यह अन्याय तो देखो। लेकिन इस शब्द का मूल अर्थ सुंदर है।

'मैक्सिम्स फॉर ए रेवोल्यूशनरी'–'क्रांतिकारी के लिए कुछ स्वर्ण-सूत्र' प्रारंभ होती है... पहला सूत्र है: कोई भी स्वर्ण-सूत्र नहीं है, यही पहला स्वर्ण-सूत्र है। अब, यह छोटा सा वक्तव्य भी अत्यंत सुंदर है। कोई भी स्वर्ण-सूत्र नहीं है... हां, कोई नियम नहीं है; यही स्वर्ण-नियम है। शेष सूत्रों के लिए तुम्हें इस किताब को पढ़ना होगा। याद रहे, जब भी मैं अध्ययन करने को कहता हूं, तो मेरा मतलब होता है, इस पर ध्यान करो। जब मैं कहता हूं, पढो, तो ध्यान करना आवश्यक नहीं है। केवल भाषा के परिचय से ही काम चल जाएगा।

नौवीं...क्या मैं सही हूं, देवगीत?

"हां, ओशो।"

कभी-कभार यह सुन कर कि मैं सही हूं कितना अच्छा लगता है। कम से कम चालीस सालों से मैंने यह नहीं सुना है। यहां तक कि मेरे परिवार में कभी किसी ने नहीं कहा। मैं हमेशा से गलत था। और मैं परमात्मा का धन्यवाद करता हूं कि मैं गलत था, उनके अनुसार मैं 'सही' नहीं था, बल्कि अपने स्वयं के अनुसार भी गलत था। मेरे किसी शिक्षक ने कभी नहीं कहा कि मैं सही था। मैं हमेशा से गलत था।

यह रोज की ही बात थी, करीब-करीब एक सामान्य प्रक्रिया थी कि मुझे हेडमास्टर के पास सजा के लिए भेजा जाता था। क्लास का मॉनिटर मुझे हेडमास्टर के पास ले जाया करता था, तब वे पूछा करते थे कि मैंने

आज क्या किया था। लेकिन धीरे-धीरे हेडमास्टर ने पूछना बंद कर दिया। मैं जाता और वे मुझे सजा दे देते, मेरे मुंह पर थप्पड़ मार देते थे, और बस मामला खत्म। वे यह भी नहीं पूछते कि मैंने गलत क्या किया था।

एक बार ऐसा हुआ–उस घटना पर मुझे अब भी हंसी आती है–मेरी क्लास के मॉनिटर ने कोई गलती की। मेरे शिक्षक ने मजाक में मेरे साथ मॉनिटर को भेज दिया। मैं मॉनिटर को सजा दिलवाने हेडमास्टर के पास गया, लेकिन इसके पहले कि मैं कुछ कह पाऊं, उन्होंने मुझे सजा दे दी। मैं हंस पड़ा, तो उन्होंने पूछा: मामला क्या है?

मैंने कहा: आज आपको इसे सजा देनी चाहिए थी। मैं इसके साथ आया हूं। यह मुझे नहीं लाया है, मैं इसे लेकर लाया हूं और आपने पहले ही मुझे थप्पड़ मार दिया।

हेडमास्टर ने कहा: मुझे खेद है।

मैंने कहा: मैं शब्दों में भरोसा नहीं करता, अब मैं आपको एक थप्पड़ मारूंगा–और मैंने सच में ही उनको एक थप्पड़ मारा।

अब तो उन बुजुर्ग का स्वर्गवास हो चुका है। मुझे दुख है कि मैंने उन्हें थप्पड़ मारा, लेकिन मैंने उन्हें थप्पड़ जोर से नहीं मारा था... बस बहुत हलके से, जैसे देवदार के वृक्षों से हवा का गुजरना।

एक बार भी सुनना कि मैं सही हूं कितना अच्छा लगता है। फिर से सुनने के लिए... क्या यह आठवीं संख्या है? अब तुम कठिनाई में पड़ गए हो। नहीं, मुझे पहले ही पता है, यह नौवीं है। ठीक है।

नौवीं: नौवीं के लिए मेरा चुनाव है, हुई नेंग, वे बोधिधर्म के चीनी उत्तराधिकारी थे। 'दि टीचिंग्स ऑफ हुई नेंग' अभी भी अज्ञात है, और जापान के बाहर अनुवादित नहीं हुई है।

हुई नेंग मानव-जाति के शिखरों में से एक हैं, वह सर्वोच्च शिखर जहां तक कोई व्यक्ति पहुंच सके। हुई नेंग ज्यादा कुछ नहीं कहते हैं, वे केवल इशारे करते हैं, बस थोड़े से इशारे। लेकिन वे इशारे काफी हैं। जैसे पदचिह्न, यदि तुम उन पर चलो तो तुम पहुंच जाओगे। वे जो कह रहे हैं वह दरअसल बुद्ध या जीसस से भिन्न नहीं है; लेकिन जिस ढंग से वे कहते हैं वह उनका अपना ढंग है, प्रामाणिक रूप से मौलिक। वे इसे अपने स्वयं के ढंग से कहते हैं, और इसी से सिद्ध होता है कि वे तोता नहीं हैं, न ही पोप और न ही पुरोहित।

हुई नेंग के संदेश को सरलता से संक्षिप्त किया जा सकता है, लेकिन उसे केवल वही लोग समझ सकेंगे जो सब-कुछ दांव पर लगा सकते हैं। उनकी बात को सरलता से संक्षिप्त किया जा सकता है, क्योंकि वे जो कह रहे हैं वह है: 'सोचो मत; हो जाओ।' लेकिन इस बात को समझने के लिए कई जन्मों की जरूरत पड़ सकती है, हां, अगर कोई अतिशय बुद्धिमान है; तब, इसी क्षण, अभी और यहीं, यह तुम्हारे भीतर की वास्तविकता बन सकती है। मुझमें यह वास्तविकता पहले से ही उपस्थित है, तो तुम्हारे भीतर यह वास्तविकता क्यों नहीं बन सकती है? सिवाय तुम्हारे, इसे कोई और नहीं रोक रहा है।

दसवीं: और अंततः अंतिम। मुझे डर है–इसीलिए मैं थोड़ा झिझक रहा हूं कि कहूं या न कहूं–मुल्ला नसरुद्दीन। वे काल्पनिक व्यक्ति नहीं हैं, वे एक सूफी थे और उनकी कब्र अभी भी है। लेकिन वे एक ऐसे आदमी थे कि अपनी कब्र से भी मजाक करने में बाज नहीं आए। उन्होंने एक वसीयत लिखवाई थी कि उसकी कब्र पर केवल एक दरवाजा रहेगा, जिस पर ताला लगा होगा, और चाबियां सागर में फेंक दी जाएं।

अब यह अजीब है! लोग उनकी कब्र देखने जाते हैं, वे दरवाजे के चारों ओर घूमते हैं, क्योंकि दीवालें हैं ही नहीं, बस एक दरवाजा खड़ा है बिना दीवालों के!–और दरवाजे पर ताला लगा है। ये महाशय मुल्ला नसरुद्दीन अपनी कब्र में हंस रहे होंगे।

नसरुद्दीन से मैंने जितना प्रेम किया है उतना प्रेम मैंने किसी से भी नहीं किया है। वे उन लोगों में से एक हैं जिन्होंने हास्य और धर्म को एक साथ कर दिया है; वरना वे दोनों एक-दूसरे की ओर पीठ किए हुए खड़े रहते हैं। नसरुद्दीन ने उनकी पुरानी शत्रुता छोड़ने के लिए उन्हें विवश किया और दोस्ती करवा दी है, और जब धर्म और हास्य मिलते हैं, जब ध्यान हंसता है, और जब हास्य ध्यान बन जाता है, तब चमत्कार घटित होता है... चमत्कारों का चमत्कार।

बस दो मिनट मेरे लिए।

जब चीर्जे अपनी चरम सीमा पर होती हैं तो रुक जाना मुझे हमेशा प्रीतिकर रहा है।

सत्र-09

अब मेरा समय है। मुझे नहीं लगता है कि किसी ने भी एक दंत-चिकित्सक की कुर्सी पर बैठ कर बोला होगा। यह मेरा विशेषाधिकार है। मैं देख रहा हूं कि संबुद्ध लोगों को भी मुझसे ईर्ष्या हो रही है।

पोस्टस्क्रिप्ट जारी है...

आज की पहली पुस्तक: हास की 'दि डेस्टिनी ऑफ दि माइंड।' मुझे पता नहीं कि उसके नाम का उच्चारण कैसे किया जाता है: एच-ए-ए-एस–मैं उसे हास कहूंगा। यह पुस्तक बहुत प्रसिद्ध नहीं है, इसका सीधा सा कारण यह है कि यह बहुत गहरी है। मुझे लगता है कि यह व्यक्ति हास जर्मन होना चाहिए; फिर भी उसने अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। वह कवि नहीं है, वह एक गणितज्ञ की तरह लिखता है। यही वह व्यक्ति है जिससे मैंने 'फिलोसिया' शब्द पाया है।

फिलॉसफी का अर्थ है: 'बुद्धिमत्ता के प्रति प्रेम;' 'फिलो' का मतलब है प्रेम, और 'सोफिया' का मतलब है बुद्धिमत्ता, लेकिन यह 'दर्शन' पर लागू नहीं होता, जो पूर्ण को देखने का पूर्वीय ढंग है। फिलॉसफी कठोर शब्द है।

अपनी पुस्तक 'डेस्टिनी ऑफ दि माइंड' में, हास ने दर्शन के लिए 'फिलॉसफी' शब्द का नहीं, बल्कि 'फिलोसिया' का प्रयोग किया है। फिलो का अर्थ यहां भी प्रेम है, लेकिन ओसिया का अर्थ है सत्य, यथार्थ, आत्यंतिक रूप से यथार्थ–ज्ञान या बुद्धिमत्ता के प्रति प्रेम नहीं, बल्कि सत्य के प्रति प्रेम, फिर चाहे वह प्रिय हो या अप्रिय, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

यह उन पुस्तकों में से एक है जो पूरब और पश्चिम को करीब ले आई हैं–लेकिन बस करीब, पुस्तकें इससे ज्यादा और कुछ कर भी नहीं सकती हैं। पूरब और पश्चिम के मिलन के लिए एक मनुष्य की जरूरत है, पुस्तक की नहीं, और हास वह व्यक्ति नहीं था। उसकी पुस्तक सुंदर है, लेकिन वह स्वयं बस एक साधारण व्यक्ति है। वास्तविक मिलन के लिए किसी बुद्ध, बोधिधर्म, जीसस, मोहम्मद या एक बाल शेम की जरूरत है। या संक्षेप में कहा जाए तो ध्यान की जरूरत है, और मैं नहीं समझता कि इस व्यक्ति हास ने कभी ध्यान किया हो। उसने एकाग्रता साध ली होगी–जर्मन लोगों को कनसनट्रेशन के बारे में ज्यादा जानकारी है, कनसनट्रेशन कैम्प। गजब! मैं मेडिटेशन कैम्प का संचालन किया करता था और वे कनसनट्रेशन कैम्प का संचालन करते थे! कनसनट्रेशन जर्मनी का है, मेडिटेशन, ध्यान नहीं। हां, कभी-कभी जर्मनी में भी कोई मेडिटेटर, ध्यानी हुआ है, लेकिन यह कोई नियम नहीं है, केवल अपवाद है, और अपवाद हमेशा नियम को सिद्ध करता है। मैं इकहार्ट को जानता हूं, और मैं बोहमे को जानता हूं...

आज के लिए मेरा दूसरा नाम है, इकहार्ट। काश, उनका जन्म पूरब में हुआ होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। जर्मनों के बीच पैदा होना और फिर परम के विषय में लिखना या बोलना एक मुश्किल कार्य है। लेकिन उन्होंने यह कार्य किया, और बहुत अच्छे से किया। जर्मन आखिर जर्मन हैं; वे जो भी करते हैं, अच्छी तरह से करते हैं। ऐसा लगता है कि एक जर्मन संन्यासी अभी भी कार्य में डूबा हुआ है। परिपूर्णता! उसकी खटखटाहट को सुनो, चारों ओर फैले इस मौन के बीच उनसे कितनी सुंदर ध्वनि आ रही है।

इकहार्ट पढ़े-लिखे नहीं थे। यह आश्चर्य की बात है कि रहस्यदर्शियों में अनेक अशिक्षित हैं। शिक्षा के साथ जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है। शिक्षित रहस्यदर्शी ज्यादा क्यों नहीं हैं? शिक्षा अवश्य ही किसी बात को नष्ट कर

रही होगी, और यही शिक्षा लोगों को रहस्यदर्शी होने से रोक देती है। हां, शिक्षा नष्ट कर देती है। पच्चीस वर्ष लगातार–किंडरगार्डन से लेकर युनिवर्सिटी के पोस्ट ग्रैजुएट तक, तुम्हारे भीतर जो भी सुंदर और संवेदनशील है उसको नष्ट करती चली जाती है। कमल का फूल पांडित्य के नीचे कुचल दिया जाता है, ये तथाकथित प्रोफेसर, शिक्षक, उपकुलपति, कुलपति गुलाब के फूल को मार डालते हैं। इन लोगों ने अपने लिए कैसे-कैसे सुंदर नाम चुन रखे हैं!

वास्तविक शिक्षा अभी तक शुरू नहीं हुई है। यह शुरू होनी चाहिए। और यह शिक्षा हृदय की शिक्षा होगी, सिर की नहीं; तुम्हारे भीतर जो स्त्रैण-चित्त है उसकी, पुरुष-चित्त की नहीं।

यह एक आश्चर्य है कि इकहार्ट जर्मनों के बीच में रहते हुए–जो कि दुनिया की सबसे ज्यादा पुरुषप्रधान जाति है–अपने हृदय में बने रहे, और वहीं से बोले हैं। अशिक्षित, गरीब, न कोई राजनैतिक हैसियत, न कोई आर्थिक हैसियत, कोई हैसियत ही नहीं–बस एक भिखारी, लेकिन इतने समृद्ध। बहुत कम लोग इतने समृद्ध हुए हैं। अपने बीइंग में समृद्ध–अपने होने में।

'बीइंग' को, 'होने' को बड़े अक्षरो में लिखना।

इन दो शब्दों को, 'बीइंग' और 'बिकमिंग' को, 'होना' और 'हो जाना' को समझ लेना चाहिए। 'हो जाना' एक प्रक्रिया है जिसका न कोई प्रारंभ है और न कोई अंत, यह एक निरंतरता है। लेकिन 'होना' कोई प्रक्रिया नहीं है, यह बस है। इसे इजनेस कहो, है-पन कहो, और तुम इसके बहुत करीब हो जाओगे।

'होना' न समय में होता है न स्थान में, यह दोनों के पार है। पार–फिर से इस शब्द 'पार' को बड़े अक्षरों में लिखना। अफसोस है कि तुम इसे स्वर्ण-अक्षरों में नहीं लिख सकते। यही वह शब्द है जिसे स्वर्ण, शुद्ध स्वर्ण में लिखा जाना चाहिए–अठारह कैरेट में नहीं, चौबीस कैरेट में, सौ प्रतिशत स्वर्ण।

इकहार्ट ने कुछ थोड़ी सी ही बातें कहीं हैं, लेकिन फिर भी उन तथाकथित धर्मगुरुओं, पोप और इनके चारों ओर रहने वाले नासमझ लोगों को भड़काने के लिए काफी थीं। उन्होंने इकहार्ट पर तुरंत पाबंदी लगा दी। उन्होंने इकहार्ट को बताया कि क्या कहना है और क्या नहीं कहना है। मेरा जैसा दीवाना आदमी होना चाहिए जो ऐसे मूर्खों की एक न सुने। लेकिन इकहार्ट एक सरल व्यक्ति थे; उन्होंने उन लोगों की, सत्ताधिकारियों की बात मान ली। जर्मन आखिरकार जर्मन ही होता है। जब तुम कहते हो कि "बाएं घूम" तो वह बाएं घूम जाता है; और जब कहते हो कि "दाएं घूम" तो वह दाहिने घूम जाता है।

मुझे विश्वविद्यालय की आर्मी ट्रेनिंग से निष्कासित कर दिया गया था, क्योंकि जब वे "दाएं घूम" कहते, तो मैं इस पर विचार करने लगता। मुझे छोड़ कर सभी तुरंत घूम जाते। मिलिट्री ऑफिसर परेशान था। उसने कहा, "तुम्हारे साथ क्या मामला है? क्या तुम सुन नहीं सकते? क्या तुम्हारे कानों में कुछ गड़बड़ है?"

मैंने कहा: "नहीं, मेरे साथ कुछ गड़बड़ है। मुझे इसमें कोई अर्थ नहीं दिखाई पड़ता। मुझे बाएं या दाएं क्यों घूमना चाहिए? इसकी कोई जरूरत नहीं, कोई कारण नहीं। और ये बेचारे मूर्ख, जो बाएं और फिर दाएं घूम रहे हैं, उसी जगह वापस आ जाएंगे जहां मैं पहले से ही खड़ा हुआ हूं।"

स्वाभाविक मुझे निष्कासित कर दिया गया–और मैं बहुत प्रसन्न था। सभी ने सोचा कि यह मेरा दुर्भाग्य है, और मैंने सोचा यह मेरा सौभाग्य है। वे फुसफुसा रहे थे कि मेरे साथ कुछ गड़बड़ है: "वह निष्कासित कर दिया गया है और फिर भी आनंदित है।" मैंने इस खुशी में एक शानदार पार्टी दी।

इकहार्ट ने उन लोगों की सुन ली। कोई जर्मन वास्तव में संबुद्ध नहीं हो सकता है, यह बहुत कठिन बात है। संभवतः विमलकीर्ति शायद पहले जर्मन होंगे जो संबुद्ध हुए। लेकिन इकहार्ट बहुत करीब थे; एक कदम और, और संसार समाप्त हो जाता... और खिलावट घट जाती, और द्वार खुल जाते, परम के द्वार खुल जाते। लेकिन

उन्होंने कहा–यद्यपि वे जर्मन थे, और पोप के दवाब के बावजूद भी–उन्होंने सुंदर बातें कही हैं। उनके वक्तव्यों में सत्य का सिर्फ एक छोटा सा अंश है, इसलिए मैं उन्हें शामिल करता हूं।

तीसरी: एक और जर्मन: बोहमे। मुझे पता नहीं कि उनके नाम का उच्चारण कैसे किया जाता है, लेकिन इसकी परवाह किसे है! लिखा तो यह ऐसे ही जाता है: बी-ओ-एच-एम-ई, बोहमे। जर्मन इसे अलग ही ढंग से उच्चारित करते होंगे, इतना मुझे पक्का है। लेकिन मैं जर्मन नहीं हूं। मुझे किसी के साथ किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं करना है। मैंने उनको हमेशा 'बूमे' कहा है। अब चाहे वे खुद भी आ जाएं और कहें कि "मेरा सही नाम यह नहीं है।" मैं कहूंगा, "रास्ता पकड़ो! मेरे लिए तो तुम्हारा नाम यही है, और तुम्हारा नाम यही रहेगा, बूमे।"

आश्चर्य की बात है, जब भी अर्पिता मेरे कमरे में प्रवेश करती है तो मुझे बोहमे का आभास होने लगता है, मुझे अचानक बोहमे की याद आ जाती है। हो सकता है कि यह सिर्फ एक ही जैसे कार्य करने के कारण हो, क्योंकि वे जूते बनाया करते थे और अर्पिता मेरे लिए जूते तैयार करती है। लेकिन अर्पिता, तुम धन्य हो कि तुम बोहमे की याद दिलाती हो, बोहमे श्रेष्ठतम जर्मनों में से एक हैं। फिर वही, वे बहुत गरीब थे। ऐसा लगता है कि बुद्धिमान होने के लिए गरीब होना जरूरी है; अब तक ऐसा ही होता आया है। लेकिन मेरे बाद ऐसा नहीं होगा। मेरे बाद तुम्हें संबुद्ध होने के लिए समृद्ध होना जरूरी होगा। फिर से दोहरा दूं: संबुद्ध होने के लिए तुम्हारा समृद्ध होना जरूरी होगा।

जीसस कहते हैं, धनी आदमी मेरे प्रभु के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेगा। वे पुराने ढंग की बातें कर रहे थे। मैं जोर देकर कहता हूं कि केवल सबसे धनी ही प्रभु के राज्य में प्रवेश कर सकेगा। और याद रखना, जो मैं कह रहा हूं वह ठीक वही है जो जीसस कह रहे थे, ये विरोधी बातें नहीं हैं। जीसस की भाषा का 'निर्धन' और मेरे शब्द 'समृद्ध' का अर्थ एक ही है। जिसने अपने आप को, अहंकार को विसर्जित कर दिया है जीसस उसे निर्धन कहते हैं; और उसी व्यक्ति को मैं समृद्ध कहता हूं। जितने तुम निर-अहंकारी हो उतने ही समृद्ध हो। लेकिन अतीत में, और खासकर पश्चिम में बोहमे जैसा व्यक्ति मुश्किल से ही धनी परिवार में जन्म लेता था।

पूरब में ऐसा नहीं हुआ है। बुद्ध राजकुमार थे, महावीर राजकुमार थे; जैनों के चौबीस तीर्थंकर राजा थे; कृष्ण राजा थे, राम राजा थे। सभी धनी थे, अत्यधिक धनी। इसमें कुछ अर्थ है। मैं जिस समृद्धि की बात कर रहा हूं यह वही है। जो व्यक्ति अहंकार को विसर्जित कर देता है वही समृद्ध है। जब वह नहीं बचता, तभी वह होता है।

बोहमे कुछ बातें, थोड़ी सी बातें कहते हैं। वे बहुत बातें नहीं कह सके, इसलिए भयभीत मत होओ। एक बात मैं बताना चाहूंगा: हृदय परमात्मा का मंदिर है। हां, बोहमे, हृदय ही उसका मंदिर है, सिर नहीं।

चौथी: एक व्यक्ति है, इदरीस शाह। मैं उसकी किसी पुस्तक का उल्लेख नहीं करूंगा, क्योंकि वे सभी सुंदर हैं। मैं इस व्यक्ति की प्रत्येक पुस्तक का समर्थन करता हूं।

घबड़ाओ मत, मैं अभी भी दीवानगी में हूं। दीवानगी से मुझे कोई डिगा नहीं सकता। लेकिन इदरीस शाह की एक पुस्तक उसकी अन्य सभी पुस्तकों से श्रेष्ठ है। सभी सुंदर हैं। मैं उन सभी का उल्लेख करना चाहूंगा, लेकिन पुस्तक 'दि सूफीज' तो बस एक कोहिनूर है। जो प्रयास उसने 'दि सूफीज' में किया है, वह बहुत बड़ा है।

हस्तक्षेप मत करो, सब ठीक चल रहा है।

मेरे लिए बात करना इतना आसान है। मैं नींद में भी बात कर सकता हूं, और वह भी बहुत तर्कपूर्ण ढंग से। ठीक है।

जब भी मैं ऐसी कोई चीज देखता हूं तो मैं हमेशा उसकी प्रशंसा करता हूं। और यह सुंदर है–अगर तुम इदरीस शाह की पुस्तक 'दि सूफीज' को समझ सके, तो मेरी यह बात भी तुम समझ जाओगे। मुल्ला नसरुद्दीन को पश्चिम से परिचित कराने का श्रेय इदरीस शाह को जाता है, और उसने यह एक अविश्वसनीय कार्य किया है। उसका ऋण चुकाया नहीं जा सकता है। पश्चिम हमेशा उसका आभारी रहेगा। इदरीस शाह ने नसरुद्दीन की छोटी-छोटी कहानियों को और भी सुंदर बना दिया है। कहानियों को ठीक-ठीक अनुवाद करने की क्षमता तो उसमें थी ही, लेकिन उसने उन्हें और भी ज्यादा सुंदर, हृदयस्पर्शी, चमकदार बना दिया है। मैं उसकी सभी पुस्तकों को शामिल करता हूं।

मेरी संख्या सही है?

"हां, ओशो।"

पांचवीं, मैं एक और व्यक्ति, एलन वाट्स, को उसकी सभी पुस्तकों के साथ शामिल करने जा रहा हूं। मैंने इस आदमी को बहुत अधिक प्रेम किया है। मैंने बुद्ध को अलग कारणों से प्रेम किया है; मैंने सोलोमन को अलग कारण से प्रेम किया है। ये बुद्धपुरुष हैं, एलन वाट्स बुद्धपुरुष नहीं है। वह एक अमरीकन है... पैदाइशी अमरीकन नहीं, यही उसकी एकमात्र आशा की किरण है; वह सिर्फ वहां रहने गया। लेकिन उसने बहुत कीमती पुस्तकें लिखी हैं। 'दि वे ऑफ झेन' को सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक गिना जाना चाहिए; 'दिस इ़ज इट' सौंदर्य एवं समझ से भरी हुई एक अदभुत पुस्तक है–और इन पुस्तकों को उस आदमी ने लिखा है जो अभी तक संबुद्ध नहीं है, इसलिए यह और भी प्रशंसनीय है।

जब तुम संबुद्ध हो जाते हो, तब तुम जो भी कहते हो वह सुंदर होता है; वह होना ही चाहिए। लेकिन जब तुम संबुद्ध नहीं हो और अंधकार में टटोल रहे हो, और फिर भी तुम्हें प्रकाश की एक झलक मिल जाती है, तो यह बहुत बड़ी बात है, यह अदभुत बात है। एलन वाट्स एक पियक्कड़ था, लेकिन फिर भी वह बुद्धत्व के बहुत करीब था। एक बार उसे विधिवत ईसाई पादरी नियुक्त किया गया था–कैसा दुर्भाग्य!–लेकिन उसने इस पद का त्याग कर दिया। धर्मगुरु का पद छोड़ने की हिम्मत बहुत कम लोगों में होती है, क्योंकि इसके साथ दुनिया की तमाम सुविधाएं मिल जाती हैं। उसने सब-कुछ त्याग दिया और करीब-करीब एक घुमक्कड़ भिक्षु की तरह हो गया। लेकिन किस तरह का भिक्षु!–यह मुझे बोधिधर्म, बाशो और रिंझाई की याद दिलाता है। एलन वाट्स संबुद्ध हुए बिना लंबे समय तक नहीं रह सकता है। उसका निधन हुए काफी समय बीत चुका है; अब तो वह दूसरा जन्म लेकर स्कूल की शिक्षा भी समाप्त कर चुका होगा... मेरे पास आने की तैयारी में होगा! मैं इस तरह के सभी लोगों की प्रतीक्षा कर रहा हूं। एलन वाट्स उनमें से एक है–मैं उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

छठवीं... अभी, यूं ही, मैंने रिंझाई का नाम लिया था। मेरी छठवीं पुस्तक है रिंझाई की 'सेइंग्स,' जिसमें रिंझाई के वचनों को संगृहीत किया गया है। क्या मेरी संख्या ठीक है?

"हां, ओशो।"

बहुत बढ़िया। तुमने आशु के कान में फुसफुसा कर कुछ कहा था, इसीलिए मुझे आश्चर्य हुआ। तुम्हें हस्तक्षेप करने के लिए मुझे क्षमा करना। तुम बहुत एकाग्रता से अपने नोट्स लिख रहे हो।

रिंझाई...चीनी भाषा में उनका नाम, लिन ची है; जापानी भाषा में रिंझाई है। मैं जापानी नाम रिंझाई को चुन रहा हूं। रिंझाई अधिक सुंदर, अधिक सुरुचिपूर्ण लगता है। 'दि सेंइग्स ऑफ रिंझाई' एकदम आग की तरह है। उदाहरण के लिए वे कहते हैं: अरे मूर्खों, बुद्ध के अनुयायियों, उनको छोड़ो! जब तक तुम उनको छोड़ोगे नहीं तब तक तुम उनको पा नहीं सकोगे। रिंझाई को बुद्ध से प्रेम था, यही कारण है कि उन्होंने यह बात कही। उन्होंने यह भी कहा: गौतम बुद्ध के नाम का प्रयोग करने से पहले यह याद रखना कि यह उनका वास्तविक नाम नहीं है। बाहर पैगोडा में बैठे हुए बुद्ध असली बुद्ध नहीं हैं। बुद्ध तुम्हारे भीतर हैं, जिनके प्रति तुम्हें जरा भी होश नहीं है, जिनके बारे में तुमने कभी सुना ही नहीं है। वही असली बुद्ध हैं। बाहर के बुद्ध से छुटकारा पा जाओ, जिससे कि तुम भीतर के बुद्ध को पा सको। रिंझाई कहते हैं: न कोई सिद्धांत है, न शिक्षा है, न बुद्ध है। और याद रखना, वे बुद्ध के शत्रु नहीं थे, बल्कि एक अनुगामी, एक शिष्य थे।

यह रिंझाई ही थे जो झेन को चीन से जापान ले गए। उन्होंने झेन की आत्मा का जापानी भाषा के साथ मिलन करवा दिया, और केवल भाषा में ही नहीं, बल्कि संस्कृति में भी–फूलों की सजावट, मिट्टी के बर्तन बनाना, बागवानी, और न जाने क्या-क्या। एक आदमी, एक अकेले आदमी ने पूरे देश का जीवन रूपांतरित कर दिया।

सातवीं: सातवां रिंझाई की तरह कोई बुद्धपुरुष नहीं है, लेकिन बहुत करीब है। हजरत इनायत खान, वह आदमी जिसने पश्चिम को सूफीइज्म से परिचित करवाया। उन्होंने कोई पुस्तक नहीं लिखी, लेकिन उनके सारे व्याख्यान बारह भागों में संगृहीत किए गए हैं। यहां-वहां कुछ सुंदर अंश हैं। क्षमा करना, मैं सभी को तो सुंदर नहीं कह सकता, लेकिन यहां-वहां, कभी-कभार, विशेषकर जब वे किसी सूफी कहानी के बारे में चर्चा कर रहे हैं, वह बहुत सुंदर है।

वे एक संगीतकार भी थे; उस विधा में वे वास्तव में एक कलाकार थे। वे आध्यात्मिक जगत के मास्टर नहीं थे, लेकिन संगीत की दुनिया के वे निश्चित ही उस्ताद थे। लेकिन कभी-कभी वे अध्यात्म के आकाश में उड़ान भरते थे, बादलों के पार उठ जाते थे, लेकिन फिर वे वापस नीचे आ गिरते थे। इससे उन्हें जरूर चोट लगी होगी... देवराज, क्या कहते हो तुम उसे? मल्टी-फ्रैक्चर? मल्टीपल फ्रैक्चर, शायद यह सही शब्द है।

आठवीं... हजरत इनायत खान के पुत्र। पश्चिम में उनके चाहने वालों के बीच उनका नाम विख्यात है: हजरत विलायत अली खान। वे एक सुंदर व्यक्ति हैं। वे अभी भी जीवित हैं। पिता तो नहीं रहे–विलायत अभी भी जीवित हैं, और जब मैं कहता हूं कि जीवित हैं, तो मेरा वास्तव में यही मतलब है कि जीवित हैं–केवल श्वास ही नहीं ले रहे हैं...निश्चित ही श्वास तो ले ही रहे हैं, लेकिन केवल श्वास ही नहीं ले रहे हैं। यहां पर उनकी सभी पुस्तकें शामिल की जा रही हैं। विलायत अली खान एक संगीतकार भी हैं, बिलकुल अपने पिता की तरह, वही एक उच्च गुणवत्ता, एक बड़ी गहराई। इनमें और अधिक गहराई है... और–इस अंतराल को सुनो–अधिक मौन भी हैं।

नौवीं: फिर से मैं खलील जिब्रान की एक और पुस्तक शामिल करना चाहता हूं, 'जीसस, दि सन ऑफ मैन।' यह उन पुस्तकों में से एक है जिसे करीब-करीब नजरअंदाज कर दिया गया है। ईसाइयों ने इसे नजरअंदाज किया, क्योंकि इसमें जीसस को आदमी का बेटा कहा गया है। वे इसे केवल नजरअंदाज ही नहीं करते, वे इसकी

निंदा भी करते हैं। और निश्चित ही, कौन जीसस की परवाह करता है? यदि ईसाई खुद ही उनकी निंदा कर रहे हैं, तो ऐसा कौन है जो उनकी परवाह करे।

खलील जिब्रान सीरिया का निवासी है जो जेरुसलम के बहुत ही निकट है। असल में, सीरिया की पहाड़ियों में, लोग–कम से कम कुछ लोग–अभी भी अरेमैक भाषा बोलते हैं, जो कि जीसस की भाषा है। आसमान छूते देवदारों के वृक्षों के बीच, किसी को भी, यहां तक कि किसी मूर्ख को भी, रहस्य और आश्चर्य की अनुभूति हो सकती है। खलील जिब्रान का जन्म सीरिया में सितारों को छूते हुए देवदारों की छाया में हुआ था। उनके चार तथाकथित शिष्यों की तुलना में काफी करीब, जिन्होंने गॉस्पेल्स लिखे हैं, खलील जिब्रान असली आदमी जीसस को समझ पाने में काफी करीब रहा है। गॉस्पेल्स के स्थान पर वे गपशप अधिक लगते हैं। खलील जिब्रान जीसस के ज्यादा करीब है, लेकिन ईसाई बहुत नाराज थे, क्योंकि उसने जीसस को मनुष्य का पुत्र कहा है। यह पुस्तक मुझे प्रिय है।

इस पुस्तक में जीसस के बारे में कई लोगों की कहानियां कही गई हैं: एक मजदूर, एक किसान, एक मछुआरा, एक टैक्स-कलेक्टर–हां, यहां तक कि एक टैक्स-कलेक्टर की भी–एक आदमी, एक औरत, कोई भी हो सकता है। ऐसा लगता है कि जैसे खलील जिब्रान जीसस के बारे में बहुत लोगों से पूछताछ कर रहा है–असली जीसस, ईसाइयों के जीसस नहीं हैं; असली जीसस, हाड़-मांस के हैं...और कहानियां इतनी सुंदर हैं। हर कहानी पर ध्यान करने की जरूरत है। 'जीसस, दि सन ऑफ मैन'; आज के लिए मेरी नौवीं पुस्तक है।

दसवीं: खलील जिब्रान की दूसरी पुस्तक है 'दि मैडमैन।' इस पुस्तक को मैं छोड़ नहीं सकता, हालांकि मैं यह स्वीकार करता हूं, मैं चाहता था कि इसे छोड़ दूं। इसे मैं छोड़ना नहीं चाहता था, क्योंकि मैं ही वह मैडमैन, पागल आदमी हूं जिसके बारे में वह बात कर रहा है। लेकिन मैं इसे छोड़ नहीं सकता। वह मैडमैन के अंतर्तम अस्तित्व के बारे में बहुत अर्थपूर्ण, बहुत प्रामाणिक ढंग से बात करता है। और यह मैडमैन साधारण मैडमैन नहीं है, बल्कि एक बुद्ध, एक रिंझाई, एक कबीर है। मुझे आश्चर्य है–मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि खलील जिब्रान यह सब कैसे कर पाया। वह स्वयं मैडमैन नहीं था, वह स्वयं संबुद्ध नहीं था। उसका जन्म सीरिया में हुआ था, लेकिन दुर्भाग्य से वह अमरीका में रहा।

लेकिन आश्चर्यों का आश्चर्य है, बिना उत्तर के प्रश्न हैं। यह वह कैसे कर पाया? शायद उसने स्वयं यह नहीं किया है...शायद कोई, कोई व्यक्ति–जिसे सूफी लोग खिज्र कहते हैं, और थियोसोफिस्ट के.एच., कूट हूमी कहते हैं–उसने इसको माध्यम बना लिया होगा। उस पर कभी-कभी अदृश्य शक्ति का अवतरण हुआ करता था, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता था। जब वह नहीं लिख रहा होता था तो वह अत्यंत सामान्य आदमी बन जाता था, वस्तुतः तथाकथित सामान्य आदमी से भी अधिक सामान्य: जो ईर्ष्या, क्रोध, सभी प्रकार की वासनाओं से भरा होता है। लेकिन कभी-कभी उस पर अदृश्य शक्ति का अवतरण हो जाता था, और तब ऊपर से कोई दिव्यता उतरती थी, और तब उसके माध्यम से...चित्र, काव्य, कहानियां अभिव्यक्त होने लगती थीं।

सत्र-10

ओ. के., मैंने पोस्टस्क्रिप्ट में कितनी किताबों के बारे में बात कर ली है–चालीस?

"मेरे खयाल से, तीस, ओशो।"

तीस? अच्छा है। कितनी राहत की बात है यह, क्योंकि बहुत सारी पुस्तकें अभी भी प्रतीक्षा कर रही हैं। जो राहत मुझे मिली है उसको तुम केवल तभी समझ सकते हो जब तुम्हें हजार में से एक पुस्तक को चुनना हो। और ठीक यही कार्य मैं कर रहा हूं। पोस्टस्क्रिप्ट जारी है...

पहली पुस्तक, ज्यां पाल सार्त्र की 'बीइंग एंड नथिंगनेस।' यह मैं पहले ही बता दूं कि यह आदमी मुझे पसंद नहीं है। मैं इसे इसलिए पसंद नहीं करता, क्योंकि यह आदमी अभिमान से भरा हुआ है। यह इस सदी के सबसे अभिमानी लोगों में से एक है। इसे मैं अभिमानी इसलिए कहता हूं, क्योंकि बिना यह जाने कि अस्तित्ववाद का मतलब क्या है, वह अस्तित्ववाद का नेता बन गया है। लेकिन पुस्तक अच्छी है–मेरे शिष्यों के लिए नहीं, लेकिन उन लोगों के लिए है जो थोड़े से पागल हैं, बस थोड़े से ही। यह पढ़ने में कठिन है।

यदि तुम थोड़े से पागल हो, तो यह पुस्तक तुम्हें होश में ला देगी। इस अर्थ में यह एक श्रेष्ठ रचना है–औषधि का काम करेगी। देवराज, इसे नोट करो: औषधीय। इस पुस्तक को सभी पागलखानों में भेज दिया जाना चाहिए। प्रत्येक पागल आदमी के लिए इसे पढ़ना, इसका अध्ययन करना अनिवार्य किया जाना चाहिए। अगर यह तुम्हें होश में नहीं ला सकती, तो कुछ नहीं ला सकता। लेकिन केवल थोड़े से पागलों के लिए–जैसे कि दर्शनशास्त्री, प्रोफेसर, गणितज्ञ, वैज्ञानिक आदि–जो थोड़े से पागल हैं, वे नहीं जो पूरे पागल हैं।

ज्यां पाल सार्त्र जिस अस्तित्ववाद का प्रतिनिधित्व करता है, वह एक मजाक है। ध्यान के बारे में कुछ भी जाने बिना वह 'बीइंग' की, 'होने' की बात करता है, और 'नथिंगनेस' की, 'शून्यता' की बात करता है। अफसोस, कि ये दो बातें नहीं हैं: बीइंग ही नथिंगनेस है; इसीलिए बुद्ध ने बीइंग को अनत्ता कहा है–अनात्मा, नो-सेल्फ। गौतम बुद्ध इतिहास में अकेले व्यक्ति हैं जो आत्मा को 'अनात्मा' कहते हैं। बुद्ध से मैं एक हजार एक कारणों से प्रेम करता हूं; उनमें से एक कारण यह भी है। समय की कमी की वजह से यहां मैं एक हजार कारणों की बात नहीं कर रहा हूं। शायद किसी दिन मैं उन एक हजार कारणों पर भी चर्चा करूंगा...

लेकिन ज्यां पाल सार्त्र को मैं नापसंद करता हूं–बस नापसंद, घृणा भी नहीं करता, क्योंकि 'घृणा' एक भारी शब्द है; इसे मैंने दूसरी पुस्तक के लिए बचा रखा है। ज्यां पाल सार्त्र अस्तित्व के विषय में कुछ भी नहीं जानता है, लेकिन उसने एक शब्दजाल पैदा कर दिया है, एक दार्शनिक शब्दजाल, बौद्धिक कसरत। और यह सच में कसरत ही है। अगर 'बीइंग एंड नथिंगनेस' के दस पेज भी तुम पढ़ सके, तो या तो तुम्हारे होश ठिकाने आ जाएंगे, या पागल हो जाओगे। लेकिन दस पेज पढ़ना एक कठिन काम है। जब मैं प्रोफेसर था, तो मैंने अपने कई विद्यार्थियों को इसे पढ़ने के लिए दिया, लेकिन कभी भी किसी ने इसे पूरा नहीं पढ़ा। कोई भी दस पेज से ज्यादा नहीं पढ़ सका–एक पेज ही बहुत ज्यादा था; सच में तो एक पैराग्राफ ही अपने आप में बहुत ज्यादा था। इसके सिर-पैर का कुछ पता ही नहीं चलता। और फिर इसमें हजार से भी ज्यादा पेज हैं। यह एक मोटी पुस्तक है।

मैं इसे अपनी पोस्टस्क्रिप्ट में याद कर रहा हूं क्योंकि भले ही मुझे आदमी पसंद नहीं है, मुझे उसकी फिलॉसफी भी पसंद नहीं है... हां, मैं इसे फिलॉसफी कहता हूं, हालांकि वह चाहता था कि उसे एंटी-फिलॉसफी

कहना चाहता था। मैं इसे एंटी-फिलॉसफी नहीं कह सकता, इसका सीधा सा कारण है कि हर एंटी-फिलॉसफी अंत में दूसरी फिलॉसफी सिद्ध होती है। अस्तित्व न तो दर्शनशास्त्रीय है और न ही गैर-दर्शनशास्त्रीय है। वह है।

मैं इस पुस्तक को शामिल कर रहा हूं, क्योंकि उसने एक तरह से अदभुत काम किया है। यह अब तक लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है, जिसमें एक तरह का कौशल भी है और तर्क भी। और आदमी बिलकल साधारण था, एक कम्युनिस्ट–यह भी एक कारण है कि मैं उसे नापसंद करता हूं। वह व्यक्ति जो अस्तित्व को जानता है वह कभी कम्युनिस्ट, साम्यवादी नहीं हो सकता है, क्योंकि उसे पता है कि समानता असंभव है। असमानता ही वस्तुओं के होने का ढंग है। कुछ भी समान नहीं है और न ही कोई चीज कभी समान हो सकती है। समानता बस एक सपना है, मूर्ख लोगों का सपना। अस्तित्व एक बहुआयामी असमानता है।

दूसरी: मैं प्रतीक्षा करूंगा... देवगीत के पेन की स्याही खत्म हो गई है। तुम्हारे पास कैसा फाउंनटेन पेन है! हे भगवान, लगता है यह आदम और हव्वा के जमाना का है! लिखते समय इससे कितनी आवाज आती है! लेकिन नूह की इस किश्ती में और क्या उम्मीद की जाए।

दूसरी है–क्योंकि आवाज बंद हो गई है–दूसरी पुस्तक है मार्टिन हाईडेगर की 'टाइम एंड बीइंग।' मुझे यह आदमी बिलकुल पंसद नहीं है। वह न केवल एक कम्युनिस्ट था, बल्कि एक फासीवादी भी था, एडोल्फ हिटलर को मानने वाला। मुझे भरोसा नहीं होता कि जर्मन लोग क्या-क्या कर सकते हैं! वह इतना बुद्धिमान आदमी था, प्रतिभाशाली, और फिर भी उस मंदबुद्धि, मूर्ख एडोल्फ हिटलर का समर्थक था। इस बात पर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। लेकिन पुस्तक अच्छी है–फिर वही बात, मेरे शिष्यों के लिए नहीं, लेकिन जो पागलपन में बहुत आगे निकल चुके हैं उनके लिए। अगर तुम सच में ही पागलपन में बहुत आगे निकल चुके हो, तो 'टाइम एंड बीइंग' पढ़ो। यह बिलकुल समझ में नहीं आती है। यह तुम्हारे सिर पर हौथोड़े की तरह चोट करेगी। लेकिन इसमें कुछ सुंदर झलकें हैं। हां, जब कोई तुम्हारे सिर पर हथौड़े से चोट करता है, तो दिन में भी तारे नजर आने लगते हैं। यह पुस्तक भी ऐसी ही है: इसमें कुछ तारे हैं।

पुस्तक अधूरी है। मार्टिन हाइडेगर ने दूसरा भाग प्रकाशित करने का वादा किया था। वह बार-बार अपने पूरे जीवन भर वादा करता रहा, लेकिन वह दूसरा भाग कभी तैयार नहीं कर पाया, शुक्र है परमात्मा का! मुझे ऐसा लगता है कि वह खुद ही नहीं समझ पाया होगा कि उसने क्या लिखा है, तो वह इसके आगे क्या लिखता, दूसरा भाग कैसे प्रकाशित करता? और दूसरा भाग उसके दर्शनशास्त्र का शिखर होने वाला था। यह तो अच्छा हुआ कि पुस्तक नहीं लिखी गई, और वह हंसी का पात्र नहीं बना। दूसरा भाग लिखने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। लेकिन फिर भी पहला भाग पहुंचे हुए पागलों के लिए अच्छा है–और पहुंचे हुए पागल बहुत हैं; और यही कारण है कि मैं इन पुस्तकों के बारे में बात कर रहा हूं और अपनी सूची में शामिल कर रहा हूं।

तीसरी: यह पुस्तक उन लोगों के लिए है जो सच में ही पूरी तरह से पागलपन में उतर चुके हैं, जो मन की सभी चिकित्साओं, मनोविश्लेषण के पार जा चुके हैं, जो लाइलाज हैं। तीसरी पुस्तक भी एक जर्मन ने लिखी है, लुडविग विटगिंस्टीन। जरा इस पुस्तक का नाम तो सुनो: 'ट्रैक्टेटस लॉजिको फिलॉसॉफिक्स।' हम बस इसे 'ट्रैक्टेटस' कहेंगे। यह अस्तित्व में मौजूद सबसे कठिन पुस्तकों में से एक है। यहां तक कि जी. ई. मूर जैसा आदमी, एक महान अंग्रेज दार्शनिक, और बर्ट्रेंड रसल, एक और महान दार्शनिक–जो न केवल इंग्लैंड के, बल्कि पूरी दुनिया के एक महान दार्शनिक माने जाते हैं–दोनों ही इस बात पर सहमत हैं कि विटगिंस्टीन उन दोनों से श्रेष्ठ था।

लुडविग विटगिंस्टीन सचमुच एक प्यारा आदमी था। मैं उससे घृणा नहीं करता, लेकिन नापसंद भी नहीं करता। मैं उसे पसंद करता हूं और प्रेम भी करता हूं, लेकिन उसकी पुस्तक से नहीं। उसकी पुस्तक केवल जिम्नास्टिक, दिमागी कसरत है। कभी-कभार पन्ने पर पन्ने पलटने के बाद सिर्फ तब कहीं कोई एकाध वाक्य ऐसा मिलता है जो अर्थपूर्ण होता है। उदाहरणार्थ के लिए: 'दैट व्हिच कैन नॉट बी स्पोकन, शुड नॉट बी स्पोकन। जो नहीं कहा जा सकता, उसे नहीं कहना चाहिए; व्यक्ति को उसके संबंध में चुप ही रह जाना चाहिए।' अब यह एक सुंदर वक्तव्य है। यहां तक कि संतों, रहस्यवादियों, कवियों को इस वाक्य से बहुत कुछ सीखना चाहिए। जो नहीं कहा जा सकता, उसे कहना ही नहीं चाहिए।

विटगिंस्टीन एक गणितीय ढंग से लिखता है, छोटे-छोटे वाक्यों में, यहां तक कि पैराग्राफ भी नहीं–सिर्फ सूत्रों में। लेकिन पागलपन में बहुत आगे निकल चुके आदमी के लिए यह बहुत मददगार साबित हो सकती है। यह न केवल उसके सिर पर, बल्कि ठीक उसकी आत्मा पर चोट कर सकती है। यह उसके अंतर्तम अस्तित्व में एक कांटे की तरह चुभ जाती है। यह उसे उसके दुखस्वप्न से जगा सकती है।

लुडविग विटगिंस्टीन प्यारा आदमी था। उसे ऑक्सफोर्ड में फिलॉसफी के सबसे प्रतिष्ठित पद के लिए निमंत्रित किया गया था। उसने इंकार कर दिया। यही कारण है कि मैं उससे प्रेम करता हूं। उसने किसान और मछुआरे का जीवन चुन लिया। इस आदमी में यही बात प्यारी है। यह ज्यां पाल सार्त्र की तुलना में ज्यादा अस्तित्ववादी है, हालांकि विटगिंस्टीन ने अस्तित्ववाद की कभी बात नहीं की। वैसे भी अस्तित्ववाद के बारे में बात नहीं की जा सकती है; तुम्हें इसे जीना होगा, और कोई रास्ता नहीं है।

यह पुस्तक तब लिखी गई थी जब वह जी. ई. मूर और बर्ट्रेंड रसल के मार्गदर्शन में अध्ययन कर रहा था। ब्रिटेन के दो महान दार्शनिक, और एक जर्मन...'ट्रैक्टेटस लॉजिको फिलॉसॉफिक्स' लिखने के लिए काफी थे। अनुवाद करने पर इसका अर्थ होगा: विटगिंस्टीन, मूर और रसल। अपनी तरफ से मेरी यही इच्छा थी कि काश, मूर और रसल के साथ अध्ययन के बजाय विटगिंस्टीन गुरजिएफ के चरणों में बैठ गया होता। यही उसके लिए सही जगह थी, लेकिन वह चूक गया। शायद अगली बार, मेरा मतलब है अगले जन्म में...उसके लिए कह रहा हूं, मेरे लिए नहीं। मेरे लिए यह काफी है, यह आखिरी जन्म है। लेकिन उसके लिए, कम से कम एक बार उसे गुरजिएफ या च्वांगत्सु, बोधिधर्म जैसे लोगों के साथ की आवश्यकता है–लेकिन मूर, रसल या व्हाइटहेड जैसे लोगों की नहीं। वह इन लोगों से, गलत लोगों के साथ जुड़ा था। गलत लोगों के साथ एक सही आदमी, और यही साथ उसे ले डूबा।

मेरा अनुभव है, सही सोहबत में गलत आदमी भी सही हो जाता है, और इससे उलटा भी सच है: गलत सोहबत में, यहां तक कि सही आदमी भी गलत हो जाता है। लेकिन यह सिर्फ अज्ञानियों पर लागू होता है, सही या गलत, दोनों। बुद्धपुरुष इससे प्रभावित नहीं होता। वह किसी के भी साथ उठ-बैठ सकता है–जीसस तो मेग्दलीन, एक वेश्या के साथ उठे-बैठे; बुद्ध का एक हत्यारे के साथ संपर्क हुआ, एक ऐसा हत्यारा जो नौ सौ निन्यानबे लोगों की हत्या कर चुका था। उसने एक हजार लोगों की हत्या करने का व्रत लिया था, और वह बुद्ध को भी मारने जा रहा था; इस तरह वह बुद्ध के साथ संपर्क में आया।

हत्यारे का नाम तो मालूम नहीं है। लोगों ने उसे अंगुलीमाल नाम दिया था, जिसका मतलब है, 'जो आदमी अंगुलियों की माला पहनता है।' यही उसका ढंग था। जब वह एक को मारता, तो उसकी अंगुलियां काट लेता और अपनी माला में लगा लेता था, सिर्फ संख्या की गिनती रखने के लिए कि उसने कितने लोगों की हत्या कर दी है। केवल दस अंगुलियां बाकी थी एक हजार में; दूसरे शब्दों में केवल एक आदमी और... फिर उसे बुद्ध

दिखाई दिए। वे बस अपने रास्ते एक गांव से दूसरे गांव जा रहे थे। अंगुलीमाल ने चिल्ला कर कहा: "रुक जाओ!"

बुद्ध ने कहा: 'कमाल है, यही तो मैं लोगों से कहता फिर रहा हूं: रुक जाओ! लेकिन, मेरे मित्र, सुनता कौन है?"

अंगुलीमाल आश्चर्यचकित हो गया: यह आदमी पागल है क्या? और बुद्ध अंगुलीमाल की ओर चलते रहे। अंगुलीमाल फिर चिल्लाया, "रुक जाओ! लगता है तुम्हें पता नहीं कि मैं हत्यारा हूं, और मैंने एक हजार आदमियों को मारने का व्रत लिया है, अब तो मेरी मां भी मेरे पास नहीं आती है, क्योंकि मारने के लिए एक ही व्यक्ति बाकी है। मैं तुम्हें मार डालूंगा...लेकिन तुम इतने सुंदर लगते हो कि यदि रुक जाओ और वापस लौट जाओ तो मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।"

बुद्ध ने कहा: "इसके बारे में भूल जाओ। अपने जीवन में मैं कभी पीछे नहीं लौटा हूं, और जहां तक रुकने का सवाल है, मैं चालीस साल पहले ही रुक चुका हूं; तब से चलने वाला कोई नहीं बचा है। जहां तक मेरी हत्या का प्रश्न है, वह तुम कर सकते हो। जो भी पैदा हुआ है उसे मरना ही है।

अंगुलीमाल ने बुद्ध को देखा, उनके चरणों पर गिर पड़ा, और रूपांतरित हो गया। अंगुलीमाल बुद्ध को नहीं बदल सका, बल्कि बुद्ध ने अंगुलीमाल को बदल दिया। मेग्दलीन नाम की वेश्या जीसस को नहीं बदल सकी, बल्कि जीसस ने उस स्त्री को बदल दिया।

तो मैंने जो कहा है वह तथाकथित सामान्य मानवता के लिए लागू होता है, यह उन पर लागू नहीं होता जो संबुद्ध हैं। विटगिंस्टीन संबुद्ध हो सकता था; वह अपने इसी जीवन में संबुद्ध हो सकता था। दुख की बात है कि वह गलत लोगों की संगत में पड़ गया। लेकिन जो लोग तीसरे तल के पागल हैं, उनके लिए यह पुस्तक बहुत सहायक हो सकती है। यदि वे इसे समझ पाएं, तो उनका मानसिक स्वास्थ्य वापस आ सकता है।

चौथी: चौथी पुस्तक का नाम लेने से पहले मैं अस्तित्व के प्रति अत्यधिक आभार अनुभव कर रहा हूं... अब मैं एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करने जा रहा हूं जो संख्याओं के पार है, विमलकीर्ति। उनकी पुस्तक का नाम है: 'निर्देश-सूत्र।' अपने संन्यासी विमलकीर्ति ही अकेले विमलकीर्ति नहीं थे; सच तो यह है कि जिनकी मैं बात करने जा रहा हूं उन्हीं विमलकीर्ति के कारण मैंने उसे यह नाम दिया था। उनके वक्तव्यों को 'विमलकीर्ति निर्देश-सूत्र' कहा जाता है। 'निर्देश-सूत्र' का मतलब है 'गाइडलाइंस, दिशा-निर्देश।'

विमलकीर्ति सबसे अदभुत लोगों में से एक थे; यहां तक कि बुद्ध को भी उनसे ईर्ष्या हो सकती थी। वे बुद्ध के शिष्य थे, लेकिन कभी भी औपचारिक रूप से शिष्य नहीं हुए, बुद्ध ने बाह्य रूप से उन्हें कभी दीक्षा नहीं दी। और वे इतने तेजस्वी थे कि बुद्ध के सभी शिष्य उनसे डरते थे। वे कभी नहीं चाहते थे कि विमलकीर्ति बुद्ध के शिष्य हो जाएं। बस रास्ते में भेंट हो जाए, या कोई उनसे अभिवादन करे, उसी समय ही वे कोई ऐसी बात कह देते थे कि सुनने वाला हिल जाता था। झकझोरना ही उनकी विधि थी। गुरजिएफ उनको बहुत पसंद करता–या कौन जाने, गुरजिएफ भी चौंक गया होता। वे सचमुच खतरनाक आदमी थे, एक असली आदमी।

कहा जाता है कि वे बीमार थे और बुद्ध ने सारिपुत्र से कहा कि जाओ और उन वृद्ध व्यक्ति से भेंट करो और उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछो। सारिपुत्र ने कहा, "मैंने कभी आपकी किसी बात से इनकार नहीं किया, लेकिन इस बार मैं इनकार करता हूं, और पूरे प्राणों से इनकार करता हूं: नहीं! मैं जाना नहीं चाहता। किसी और को भेज दें। वह आदमी सच में खतरनाक है। यहां तक कि अपनी मृत्युशय्या पर भी वे मेरे लिए मुसीबत खड़ी कर देंगे। मैं जाना नहीं चाहता।"

बुद्ध ने हर किसी से पूछा, और कोई भी जाने के लिए तैयार नहीं हुआ सिवाय एक आदमी के, मंजुश्री, जो बुद्ध के शिष्यों में सबसे पहले बुद्धत्व को उपलब्ध हुए। वे गए, और इस तरह इस पुस्तक की रचना हुई। यह एक संवाद है। इन्हीं विमलकीर्ति के नाम पर मैंने अपने विमलकीर्ति को यह नाम दिया। असली विमलकीर्ति अपनी मृत्युशय्या पर थे, और मंजुश्री उनसे प्रश्न पूछ रहे थे, या यूं कहें कि उनके प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। इस तरह 'विमलकीर्ति निर्देश-सूत्र' का जन्म हुआ–यह सच में एक महान रचना है।

लगता है किसी ने भी इस पुस्तक की परवाह नहीं की, क्योंकि यह किसी भी धर्म विशेष की पुस्तक नहीं है। यह बौद्धों की पुस्तक भी नहीं है, क्योंकि वे कभी भी बुद्ध के औपचारिक शिष्य नहीं रहे। लोग बाहरी रूप को इतना सम्मान देते हैं कि आत्मा को भूल ही जाते हैं। मैं सभी सच्चे साधकों को इस पुस्तक को पढ़ने का सुझाव देता हूं। उन्हें इसमें हीरों की एक खान मिल जाएगी।

पांचवीं: मैं फिर से जे. कृष्णमूर्ति की तुम्हें याद दिलाना चाहता हूं। पुस्तक का नाम है: 'कॉमेंट्रीज ऑन लिविंग।' यह कई भागों में है। यह उसी तत्व से बनी है जिससे सितारे बने हैं।

'कॉमेंट्रीज ऑन लिविंग' कृष्णमूर्ति की डायरी है। कभी-कभार वे अपनी डायरी में कुछ लिखते हैं... एक सुंदर सूर्यास्त, एक प्राचीन पेड़, या सिर्फ एक संध्या...पक्षियों का घर वापस लौटना...कुछ भी...एक सरिता का सागर की ओर दौड़ना...जो कुछ भी उन्हें महसूस होता है, वे कभी-कभी उसे लिख लेते हैं। इस तरह इस पुस्तक का जन्म हुआ। यह व्यवस्थित रूप से नहीं लिखी गई है, यह एक डायरी है। फिर भी, सिर्फ इसे पढ़ना ही तुम्हें किसी और ही लोक में पहुंचाने के लिए काफी है–सौंदर्य का जगत, या इससे भी अच्छा, धन्यता का जगत। क्या तुम मेरे आंसुओं को देख सकते हो?

कुछ समय से मैंने पढ़ा नहीं है, लेकिन सिर्फ इस पुस्तक का उल्लेख मेरी आंखों में आंसू लाने के लिए पर्याप्त है। मुझे इस पुस्तक से प्रेम है। यह अब तक की लिखी गई श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक है। मैंने पहले कहा था कि कृष्णमूर्ति की 'फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम' उनकी सबसे अच्छी पुस्तक है, जिससे श्रेष्ठ वे कभी नहीं लिख पाए–निस्संदेह कोई भी पुस्तक नहीं, क्योंकि 'कॉमेंट्रीज' केवल डायरी है, यह कोई पुस्तक नहीं है, लेकिन फिर भी मैं इसे शामिल करता हूं।

छठवीं...क्या मेरा नंबर सही है?

"हां, ओशो।"

कितना अच्छा लगता है "हां, ओशो।" सिर्फ हां सुनना इतना अच्छा लगता है, कितना पुष्टिदायी, कितना जीवनदायक। इसके लिए मैं पर्याप्त रूप से आभार भी प्रकट नहीं कर सकता हूं। संसार भर में मेरे हजारों संन्यासी हैं जो 'यस ओशो यस' गाते रहते हैं। इस पृथ्वी पर या अन्य ग्रह पर हुए व्यक्तियों में मैं अपने आप को सबसे अधिक सौभाग्यशाली मानता हूं।

छठवीं है...छठवीं किताब को भी 'कॉमेंट्रीज' कहा जाता है, यह मॉरिस निकल की पांच भागों वाली विशाल पुस्तक है। याद रहे, मैंने उसके नाम को हमेशा 'मोरिस निक्कोल' ही बोला है। बस इसी शाम मैंने गुड़िया से पूछा कि उसका असली, सही, और उचित अंग्रेजी उच्चारण क्या है, क्योंकि वह अंग्रेज था। गुड़िया ने बताया, "निकल।"

मैंने कहा, "हे भगवान! जीवन भर मैं उसको 'निक्कोल' कहता रहा, सिर्फ स्पेलिंग की वजह से: एन-आइ-सी-ओ-एल-एल। मुझे आश्चर्य होता है कि इसको 'निकल' कैसे बोला जाता होगा। 'निक्कोल' ही सही उच्चारण

लगता है। लेकिन सही हो या गलत, अब गुडिया कह रही है तो–वह स्वयं अंग्रेज है–तब मैं भी कहूंगा ठीक है। मैं भी उसे मॉरिस निकल कहूंगा...और उसकी 'कॉमेंट्रीज।'

निकल गुरजिएफ का शिष्य था, और ऑस्पेंस्की के विपरीत, उसने कभी धोखा नहीं दिया, वह जुदास नहीं था। अपनी अंतिम श्वास और उसके बाद भी वह पक्का शिष्य बना रहा। निकल की 'कॉमेंट्रीज' बहुत विस्तृत है। मैं नहीं सोचता कि कोई उसे पढ़ता भी होगा–हजारों हजार पेज हैं। लेकिन यदि कोई उसको पढ़ने का कष्ट उठा सके तो बहुत लाभान्वित होगा। मेरी राय में निकल की 'कॉमेंट्रीज' को संसार की श्रेष्ठम पुस्तकों में गिना जाना चाहिए।

सातवीं: फिर से गुरजिएफ के एक दूसरे शिष्य हार्टमैन की पुस्तक। पुस्तक है 'अवर लाइफ विद गुरजिएफ।' हार्टमैन–पता नहीं इसका सही उच्चारण क्या है...क्योंकि मुझे कहीं से खिलखिलाने की आवाज सुनाई पड़ रही है, लेकिन उच्चारण के बारे में चिंता मत करो। हार्टमैन और उसकी पत्नी दोनों गुरजिएफ के शिष्य थे। हार्टमैन एक संगीतकार था और गुरजिएफ के नृत्य के कार्यक्रमों के लिए संगीत बजाया करता था। गुरजिएफ नृत्य का उपयोग ध्यान की तरह करते थे; न केवल अपने शिष्यों के लिए बल्कि उन लोगों के लिए भी जो शिष्यों को नृत्य करते हुए देखते थे।

न्यूयार्क में, जब गुरजिएफ ने पहली बार नृत्य का कार्यक्रम प्रस्तुत किया, तो उसमें हार्टमैन पियानो बजा रहा था, शिष्य नृत्य कर रहे थे, और जिस क्षण गुरजिएफ चिल्लाया "स्टॉप!"–यह एक स्टॉप एक्सरसाइज थी। देवगीत, तुम मत रुको, तुम लिखना जारी रखो। जब गुरजिएफ चिल्लाया "स्टॉप!" नर्तक सच में रुक गए, नृत्य के मध्य में! वे स्टेज के एकदम किनारे पर थे। वे सभी जमीन पर एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़े, लेकिन फिर भी कोई हिला नहीं! दर्शक तो अवाक रह गए। वे भरोसा ही नहीं कर सके कि लोग इतने आज्ञाकारी हो सकते हैं। हार्टमैन ने 'अवर लाइफ विद गुरजिएफ' पुस्तक लिखी है, और यह एक शिष्य द्वारा लिखा गया सुंदर वर्णन है। वे सभी लोग जो इस पथ पर हैं उनके लिए यह सहायक होगी।

कौनसा नंबर है?

"यह नंबर सात था, ओशो।"

ठीक है, तुम सुन रहे हो।

आठवीं...और सिखाने का मेरा तरीका देखते हो? और तुम देखते हो यहां तक कि जब मैं तुम्हें चिढ़ाने की कोशिश करता हूं तो वह सिर्फ तुम्हें सिखाने के लिए है जिसके बारे में तुम्हें अभी होश भी न होगा? लेकिन किसी दिन तुम कृतज्ञता अनुभव करोगे।

सातवीं...ठीक है न?

"यह नंबर आठवां है, ओशो।"

एक शिष्य द्वारा सुधारा जाना कितना अच्छा लगता है, बहुत ही अच्छा। एक सदगुरु हमेशा धन्य अनुभव करता है यदि एक शिष्य सदगुरु की गलती में सुधार कर दे। और यह तो सिर्फ नंबरों का प्रश्न है। जब मैं तुम सभी को सुधारने का प्रयास कर रहा हूं, तो जहां तक नंबरों का संबंध है कम से कम वहां तो मैं तुम्हें थोड़ा सा खुश होने की अनुमति दे सकता हूं। तो अब कौन सा नंबर है?

"यह नंबर आठ है, ओशो।"

ठीक है। कभी-कभी मैं हंसना चाहता हूं... आठवां? ठीक है।

आठवीं पुस्तक जिसके बारे में मैं बात करने जा रहा हूं उसे एक हिंदू रहस्यदर्शी रामानुज ने लिखा है। पुस्तक का नाम है 'श्री पाश।' यह 'ब्रह्मसूत्र' पर लिखा गया एक भाष्य है। ब्रह्मसूत्र पर कई भाष्य लिखे गए हैं– बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर मैं पहले ही बात कर चुका हूं। रामानुज ने उस पर जो भाष्य लिखा है वह एक तरह से अनूठा है।

मौलिक पुस्तक बहुत रूखी-सूखी है, बिलकुल मरुस्थल जैसी। निस्संदेह मरुस्थल का अपना सौंदर्य और अपनी सच्चाई है, लेकिन रामानुज ने अपने 'श्री पाश' में इसे एक उपवन बना दिया है, एक मरूद्यान। उन्होंने इसे दिलचस्प बना दिया है। जो पुस्तक रामानुज ने लिखी है मुझे पसंद है। स्वयं रामानुज तो मुझे पसंद नहीं हैं, क्योंकि वे एक परंपरावादी थे। परंपरावादी, रूढ़िवादी लोगों से मुझे सख्त घृणा है, मैं उन्हें कट्टरपंथी मानता हूं– लेकिन मैं कर क्या सकता हूं, पुस्तक सुंदर है; कभी-कभार यहां तक कि एक कट्टरपंथी भी कुछ सुंदर कर सकता है। इसलिए इस पुस्तक को शामिल करने के लिए मुझे माफ करना।

नौवीं: पी. डी. ऑस्पेंस्की की पुस्तकें मुझे हमेशा अच्छी लगी हैं, हालांकि वह स्वयं मुझे कभी प्रसंद नहीं आया। वह एक स्कूल मास्टर की तरह लगता था, एक सदगुरु की तरह नहीं, और क्या तुम एक स्कूल मास्टर से प्रेम कर सकते हो? मैंने प्रयास किया था जब मैं स्कूल में था और विफल रहा; कॉलेज में, और विफल; युनिवर्सिटी में, और विफल। मैं यह नहीं कर पाया, और मैं नहीं समझता कि कोई भी स्कूल मास्टर को प्रेम कर सकता है–खासकर अगर स्कूल मास्टर एक महिला हो; तब तो यह असंभव है! कुछ बेवकूफ तो ऐसी महिलाओं से विवाह भी कर लेते हैं जो स्कूल मास्टर हैं! वे जरूर उसी रोग से पीड़ित होने चाहिए जिसे मनोवैज्ञानिक 'मैसोचिज्म'–'स्वयं को सताने वाला' कहते हैं; वे जरूर स्वयं को सताने के लिए किसी को खोज रहे होंगे।

मुझे ऑस्पेंस्की पसंद नहीं है। वह सच में स्कूल मास्टर जैसा था, यहां तक कि गुरजिएफ की देशना पर व्याख्यान देते समय भी। वह हाथ में एक चाक लेकर ब्लैक-बोर्ड के सामने खड़ा होता, सामने एक मेज और कुर्सी के साथ, बिलकुल एक स्कूल मास्टर की तरह... साथ में चश्मा लगाए और सब, कुछ भी छूटा नहीं था। और जिस तरह से वह सिखाता था–मैं समझ सकता हूं क्यों बहुत ही कम लोग उसके प्रति आकर्षित हुए, यद्यपि वह एक स्वर्णिम संदेश ला रहा था।

दूसरी बात, मैं उससे घृणा करता हूं इसलिए कि वह एक जुदास था। जो भी धोखा देता है उसे मैं प्रेम नहीं कर सकता हूं। धोखा देना आत्महत्या करने जैसा है, आध्यात्मिक आत्महत्या। जुदास को भी जीसस के सूली लगने के चौबीस घंटे के भीतर आत्महत्या करनी पड़ी। ऑस्पेंस्की से मुझे कोई प्रेम नहीं है, लेकिन मैं कर भी क्या सकता हूं?–वह एक सक्षम लेखक था, एक बुद्धिमान, एक प्रतिभाशाली। यह पुस्तक जिसका में उल्लेख करने जा रहा हूं वह उसके मरणोपरांत प्रकाशित हुई है। अपने जीवनकाल में वह इसे प्रकाशित करना नहीं चाहता था। शायद वह भयभीत था। शायद उसने सोचा हो कि यह पुस्तक उसकी आशा के अनुरूप न सिद्ध हो पाए।

यह एक छोटी सी पुस्तक है, इसका नाम हैं 'दि फ्यूचर साइकोलॉजी ऑफ मैन।' अपनी वसीयत में उसने लिखा था कि इस पुस्तक को मेरे मरने के बाद ही प्रकाशित किया जाए। मुझे यह आदमी पसंद नहीं है, लेकिन अपनी नापसंदगी के बावजूद मैं कहूंगा इस पुस्तक में उसने करीब-करीब मेरे और मेरे संन्यासियों के बारे में भविष्यवाणी की है। उसने भविष्य के मनोविज्ञान की भविष्यवाणी की है, और यही कार्य मैं यहां कर रहा हूं,

भविष्य का मनुष्य, नया मनुष्य। मेरे सभी संन्यासियों को इस छोटी सी पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

दसवीं...क्या मैं अब भी सही हूं?

"हां, ओशो।"

ठीक है।

जिस पुस्तक के बारे में मैं बात करने जा रहा हूं वह एक सूफी पुस्तक है, 'दि बुक ऑफ बहाउद्दीन।' मौलिक सूफी रहस्यदर्शी बहाउद्दीन ने सूफी परंपरा निर्मित की। उनकी इस छोटी सी पुस्तक में सभी कुछ समाहित है। यह एक बीज की तरह है। प्रेम, ध्यान, जीवन, मृत्यु... उन्होंने कुछ भी नहीं छोड़ा है। इस पर ध्यान करो।

आज इतना ही।

सत्र-11

ओ. के.। पोस्टस्क्रिप्ट में अब तक मैंने कितनी पुस्तकों के बारे में बताया होगा?

"अब तक चालीस पुस्तकें पोस्टस्क्रिप्ट में हो गई हैं, ओशो।"

ठीक है। मैं एक जिद्दी आदमी हूं।

पहली: कॉलिन विलसन की 'दि आउटसाइडर।' यह इस सदी की सबसे प्रभावशाली पुस्तकों में से एक है–लेकिन आदमी साधारण है। वह अदभुत क्षमतावानविद्वान है, और हां, यहां-वहां कुछ अंतर्दृष्टियां हैं–लेकिन पुस्तक सुंदर है।

जहां तक कॉलिन विलसन का सवाल है, वह खुद आउटसाइडर, बाहरी व्यक्ति नहीं है; वह एक सांसारिक आदमी है। मैं एक आउटसाइडर हूं, इसीलिए यह पुस्तक मुझे अच्छी लगती है। मुझे यह अच्छी लगती है क्योंकि–हालांकि वह जिस आयाम की बात करता है वह खुद उसको नहीं जानता है–उसका लेखन सत्य के बहुत, बहुत निकट है। लेकिन ध्यान रहे, भले ही तुम सत्य के निकट होओ तुम अभी भी हो असत्य ही। या तो तुम सत्य हो या असत्य, बीच में कुछ भी नहीं होता है।

विलसन ने अपनी तरफ से आउटसाइडर के संसार को बाहर से समझने का जो भरसक प्रयास किया है, यह पुस्तक 'दि आउटसाइडर' उसका प्रतिनिधित्व करती है; वह बाहर रह कर आउटसाइडर के भीतर झांकने का प्रयास करता है, जैसे कि कोई तुम्हारे दरवाजे के की-होल से भीतर झांके। वह थोड़ा सा देख सकता है–और कॉलिन विलसन ने देखा है। पुस्तक पढ़ने योग्य है–सिर्फ पढ़ने योग्य, अध्ययन के लिए नहीं। इसे पढ़ो और कचरे के डिब्बे में फेंक दो, क्योंकि जब तक कोई पुस्तक वास्तविक आउटसाइडर से नहीं आती है तब तक वह सिर्फ दूर, बहुत दूर की प्रतिध्वनि मात्र है... प्रतिध्वनि की प्रतिध्वनि, परछाई की परछाई।

दूसरी: 'दि एनालेक्ट्स ऑफ कनफ्यूशियस। कनफ्यूशियस को मैं बिलकुल पसंद नहीं करता, और इसके लिए मुझे कोई अपराध-भाव भी महसूस नहीं होता कि मैं उसे पसंद नहीं करता हूं। इस बात को लिखवा कर मुझे वास्तव में हलकापन महसूस हो रहा है। कनफ्यूशियस और लाओत्सु समसामयिक थे। लाओत्सु उम्र में थोड़े से बड़े थे; कनफ्यूशियस लाओत्सु से मिलने भी गया था और कांपते हुए वापस लौटा था, उसकी जड़ें हिल गई थीं, पसीना-पसीना हो गया था। उसके शिष्यों ने पूछा: "गुफा में क्या हुआ? ...क्योंकि आप दोनों ही वहां थे और कोई नहीं था।"

कनफ्यूशियस ने कहा: "यह अच्छा हुआ कि किसी ने नहीं देखा। हे भगवान, वह आदमी है या ड्रैगन! वह तो मुझे मार ही डालता, लेकिन मैं भाग निकला। वह सच में ही खतरनाक है।"

कनफ्यूशियस सही कह रहा है। लाओत्सु जैसा आदमी तुम्हें पुनर्जीवित करने के लिए मार भी सकता है; और जब तक कोई मरने के लिए तैयार न हो तब तक उसका पुनर्जन्म भी नहीं हो सकता है। कनफ्यूशियस अपने ही पुनर्जन्म से भाग निकला।

मैंने पहले से ही लाओत्सु को चुन लिया है, और सदा के लिए। कनफ्यूशियस बहुत साधारण, सांसारिक दुनिया का आदमी था। परंतु यह नोट कर लो कि मैं उसे पसंद नहीं करता; वह एक पाखंडी है। आश्चर्य है कि वह इंग्लैंड में पैदा नहीं हुआ। लेकिन वैसे भी, उन दिनों का चीन इंग्लैंड जैसा ही था। उन दिनों इंग्लैंड बिलकुल जंगली, बर्बर था, वहां कुछ भी मूल्यवान नहीं था।

कनफ्यूशियस एक राजनीतिज्ञ था, चालाक, होशियार, लेकिन वह सच में बुद्धिमान नहीं था; वरना वह लाओत्सु के चरणों में झुक गया होता, भाग खड़ा नहीं होता। वह केवल लाओत्सु से ही भयभीत नहीं था, वह मौन से भी भयभीत था...क्योंकि लाओत्सु और मौन एक ही हैं।

लेकिन मैं कनफ्यूशियस की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक को शामिल करना चाहता था, सिर्फ उसे उचित ठहराने के लिए। 'एनालेक्ट्स' उसकी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है। मेरे लिए यह सिर्फ एक वृक्ष की जड़ों की भांति है, कुरूप लेकिन बहुत अनिवार्य–जिसे तुम अनिवार्य बुराई कहते हो। 'एनालेक्ट्स' एक अनिवार्य बुराई है। इसमें वह संसार और सांसारिक मामलों, राजनीति और इसी तरह के विषयों के बारे में बात करता है। एक शिष्य ने उससे पूछा: "मास्टर, मौन के बारे में क्या?"

कनफ्यूशियस चिढ़ गया, नाराज हो गया। वह शिष्य पर चिल्लाया और कहा: "चुप रहो! मौन?–मौन की जरूरत तुम्हें कब्र में होगी। जीवन में इसकी जरूरत नहीं है, करने के लिए और भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण काम हैं।"

उसका यह दृष्टिकोण था। तुम समझ सकते हो मैं उसे पसंद क्यों नहीं करता। मुझे उस पर दया आती है। वह एक अच्छा आदमी था। कितने दुख की बात है कि वह श्रेष्ठतम व्यक्तियों में से एक लाओत्सु के बहुत करीब आया था, लेकिन फिर भी चूक गया। उसके लिए मैं बस आंसू बहा सकता हूं।

तीसरी: खलील जिब्रान ने कई पुस्तकें अपनी मातृभाषा में लिखी हैं। जिन पुस्तकों को उसने अंग्रेजी में लिखा है वे बहुत विख्यात हुई हैं: जिनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हैं 'दि प्रोफेट' और 'दि मैडमैन'...और भी कई हैं। लेकिन, उसने कई पुस्तकें अपनी खुद की भाषा में लिखी हैं, जिनमें से कुछ का ही अनुवाद हुआ है। स्वभावतः अनुवाद हूबहू तो हो नहीं सकता, लेकिन खलील जिब्रान इतना महान है कि अनुवाद में भी तुम्हें कुछ न कुछ मूल्यवान मिल जाता है। आज मैं कुछ अनुवाद का जिक्र करने जा रहा हूं। तीसरी है खलील जिब्रान की 'दि गार्डन ऑफ दि प्रोफेट।' यह अनुवाद है, लेकिन यह मुझे महान एपिकुरस की याद दिलाती है।

मुझे नहीं पता कि मेरे अलावा किसी और ने भी एपिकुरस को महान कहा हो। सदियों से उसकी निंदा ही की गई है। लेकिन मैं जानता हूं कि जब भीड़ किसी व्यक्ति की निंदा करती है तो निश्चित ही उसमें कुछ श्रेष्ठ होगा। खलील जिब्रान की पुस्तक 'दि गार्डन ऑफ दि प्रोफेट' मुझे एपिकुरस की याद दिलाती है, क्योंकि वह अपने कम्यून को 'उपवन' कहता था। व्यक्ति जो भी करता है उसमें उसकी छवि छलकती है। प्लेटो अपने कम्यून को 'दि एकेडेमी' कहता था–स्वाभाविक है; वह एक शिक्षाविद, एक महान बुद्धिवादी दार्शनिक था।

एपिकुरस अपने कम्यून को 'उपवन' कहता था। वे लोग वृक्षों के तले, सितारों के नीचे रहते थे। एक बार सम्राट एपिकुरस को देखने आया, क्योंकि उसने सुना था कि ये लोग बहुत आनंदित रहते हैं। वह जानना चाहता था, वह यह जानने में उत्सुक था कि ये लोग इतने आनंदित क्यों हैं: इसका क्या कारण हो सकता है?–क्योंकि उनके पास कुछ भी नहीं था। वह हैरान था, क्योंकि वे सचमुच आनंदित थे, वे गा रहे थे और नाच रहे थे।

सम्राट ने कहा: "मैं आप और आपके लोगों के साथ बहुत खुशी महसूस कर रहा हूं, एपिकुरस। क्या आप मुझसे कोई भेंट लेना पंसद करेंगे?"

एपिकुरस ने सम्राट से कहा: "अगर आप फिर से आते हैं, तो थोड़ा सा मक्खन लेते आना, क्योंकि कई सालों से मेरे लोगों ने मक्खन नहीं देखा है। वे मक्खन के बिना रोटी खा रहे हैं। और एक बात और: अगर फिर से आते हैं तो कृपया एक बाहरी व्यक्ति की तरह खड़े मत रहिएगा; कम से कम जब तक आप यहां हैं हमारे

हिस्से बन जाएं। सम्मिलित हों, हमारे साथ एक हो जाएं। नाचें, गाएं। आपको देने के लिए हमारे पास और कुछ भी नहीं है।

खलील जिब्रान की पुस्तक मुझे एपिकुरस की याद दिलाती है। मुझे अफसोस है कि मैंने एपिकुरस का जिक्र नहीं किया, लेकिन मैं इसके लिए जिम्मेवार नहीं हूं। उसकी पुस्तक जला दी गई थी, ईसाइयों द्वारा नष्ट कर दी गई। जितनी भी प्रतियां उपलब्ध थीं उन सभी को सैकड़ों साल पहले जला दिया गया था। इसलिए मैं उसकी पुस्तक का जिक्र नहीं कर सकता, परंतु मैं खलील जिब्रान और उसकी पुस्तक 'दि गार्डन ऑफ दि प्रोफेट' के द्वारा उसको ले आया हूं।

चौथी...अच्छा...खलील जिब्रान की एक और पुस्तक का अनुवाद 'दि वाइस ऑफ दि मास्टर।' यह पुस्तक मूल रूप में बहुत सुंदर रही होगी, क्योंकि अनुवाद में भी यहां और वहां सुंदरता के निशान, पदचिह्नों की छाप है। परंतु ऐसा होगा ही। जो भाषा जो खलील जिब्रान बोलता था वह जीसस की भाषा के बहुत करीब है। वे पड़ोसी हैं। खलील जिब्रान का घर लेबनान में था। उसका जन्म लेबनान की पहाड़ियों में, देवदार के वृक्षों की छाया में हुआ था। वे संसार में सबसे बड़े वृक्ष हैं। लेबनान के देवदार के वृक्षों को देख कर तुम्हें वानगॉग पर भरोसा आ जाएगा कि पृथ्वी की सितारों को छू लेने की आकांक्षा ही वृक्ष हैं। वे सैकड़ों फीट ऊंचे हैं और हजारों वर्ष पुराने हैं।

खलील जिब्रान एक तरह से जीसस का प्रतिनिधित्व करता है; वह उसी आयाम से संबंधित है, हालांकि वह कोई मसीहा नहीं था। वह हो सकता था। कनफ्यूशियस की तरह वह भी चूक गया। जिब्रान के जीवनकाल में ही ऐसे लोग जीवित थे जिनके पास वह जा सकता था, लेकिन वह बेचारा न्यूयार्क की गंदी गलियों में ही घूमता रहा। वह महर्षि रमण के पास जा सकता था, जो उस समय जीवित थे, जो एक मसीहा थे, एक बुद्धपुरुष थे।

पांचवीं है रमण महर्षि की पुस्तक। यह कोई पुस्तक जैसी नहीं है, बस एक छोटी सी पुस्तिका, जिसका शीर्षक है: 'हू एम आइ?–मैं कौन हूं?'

रमण न तो विद्वान थे न ही बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे थे। उन्होंने केवल सत्रह वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया था और फिर वे कभी नहीं लौटे। जब असली घर मिल जाए तो कौन लौट कर साधारण घर में आता है? उनकी विधि एक सरल जिज्ञासा है अपने अंतर्तम केंद्र में पूछने की कि "मैं कौन हूं?" वे वास्तव में एनलाइटनमेंट इंटेंसिव, गहन संबोधि के रचियता हैं, न कि कोई अमरीकन व्यक्ति–या कोई महिला–जो इसके आविष्कारक होने का दावा करते हैं।

मैंने कहा कि यह कोई महान पुस्तक नहीं है, लेकिन वे महान व्यक्ति हैं। कभी-कभी मैं ऐसी पुस्तकों जिक्र का करता हूं जो कि श्रेष्ठ हैं, लेकिन बहुत ही साधारण और औसत दर्जे के लोगों द्वारा लिखी गई हैं। अब मैं एक व्यक्ति का जिक्र कर रहा हूं जो कि वास्तव में महान है, जिसने एक बहुत ही छोटी पुस्तक लिखी है, बस कुछ पन्नों की, एक छोटी पत्रिका। वरना वे सदा मौन रहते थे। वे बहुत कम बोलते थे, बस कभी-कभार। अगर खलील जिब्रान रमण महर्षि के पास गया होता तो वह बहुत ही लाभान्वित हुआ होता। तब उसने 'दि वाइस ऑफ दि मास्टर–सदगुरु की वाणी' सुनी होती। रमण महर्षि भी खलील जिब्रान से लाभान्वित हुए होते। क्योंकि उसके जैसी लेखन क्षमता किसी और में नहीं थी। रमण एक मामूली लेखक थे और खलील जिब्रान एक मामूली व्यक्ति था, लेकिन एक महान लेखक। दोनों मिल कर विश्व के लिए एक वरदान साबित होते।

छठवीं: मूरहेड और राधाकृष्णन की 'दि माइंड ऑफ इंडिया।' न तो मूरहेड को भारत का कुछ पता था न राधाकृष्णन को, लेकिन आश्चर्य कि उन्होंने एक सुंदर पुस्तक लिखी, जो पूरी भारतीय विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। बस इस पुस्तक में ऊंचाइयों की कमी है, जैसे कि एक बुलडोजर सतत चलते हुए हिमालय की चोटियों को नष्ट करते हुए उसे एक सपाट मैदान बनाता जा रहा हो। हां, इन दोनों व्यक्तियों ने एक बुलडोजर का काम किया है। यदि कोई भारत की आत्मा को जानता है–मैं इसे माइंड नहीं कह सकता–तो इस पुस्तक का शीर्षक होना चाहिए 'दि नो-माइंड ऑफ इंडिया।'

यद्यपि यह पुस्तक श्रेष्ठतम का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, यह अभी भी निम्नतम का प्रतिनिधित्व करती है, और निम्नतम की ही संख्या बहुत ज्यादा है, निन्यानबे दशमलव नौ प्रतिशत। तो यह सचमुच पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। यह सुंदर ढंग से लिखी गई है, लेकिन केवल एक अनुमान से। एक अंग्रेज था, दूसरा भारतीय राजनेता–गजब का मेल! और दोनों ने मिल कर 'दि माइंड ऑफ इंडिया' को लिखा।

सातवीं: अब अपनी लंबी सूची के अंत में मैं दो पुस्तकों का परिचय दे रहा हूं, मुझे लगता है कि उनका स्वाद तुम पहले ही चख चुके होगे: लुइस कैरोल्स की 'एलिस इन वंडरलैंड' और आठवीं है 'एलिस थ्रू दि लुकिंग ग्लास।' दोनों ही गैर-गंभीर हैं, इसीलिए मुझे प्रिय हैं। दोनों पुस्तकें बच्चों के लिए लिखी गई हैं, इसीलिए मैं इन पुस्तकों का बहुत आदर करता हूं। दोनों सौंदर्य, भव्यता, और रहस्य की छोटी-छोटी कहानियों से भरी हुई हैं, जिन्हें कि अनेक स्तरों पर समझा जा सकता है। एक कहानी मुझे सदा ही प्रिय रही है, उदाहरण के लिए...

एलिस राजा के पास आती है–या शायद रानी के पास, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता–और राजा एलिस से पूछता है: "क्या मेरा दूत तुम्हें मिला था रास्ते में मेरी तरफ आता हुआ?"

एलिस कहती है: "मुझे 'कोई नहीं' मिला, सर।"

राजा फिर कहता है: "तो उसको अब तक यहां आ जाना चाहिए था।"

एलिस को अपने कानों पर भरोसा न आया, लेकिन उसके प्रति सम्मान के कारण, हैरान थी, फिर भी एलिस चुप रही, एक अंग्रेज महिला की तरह शांत रही।

गुडिया, क्या तुम यहां हो? अभी कुछ दिन पहले तुम पूछ रही थी: "क्या मेरे भीतर अभी भी अंग्रेज महिला है, ओशो?" बस थोड़ी सी बची है, ज्यादा नहीं–चिंता की कोई बात नहीं। और थोड़ा सा बचा रहना अच्छा है।

एलिस पक्की अंग्रेज महिला रही होगी। औपचारिकता के कारण वह दबे मुंह हंसी भी नहीं। उसने कहा था कि उसे 'कोई नहीं' मिला, और राजा समझा कि वह 'कोई नहीं' नाम के किसी आदमी से मिली थी। हे भगवान, वह समझा कि 'कोई नहीं' कोई आदमी है, कि 'कोई नहीं' कोई व्यक्ति है...! फिर एलिस कहती है, "सर, मैंने आपसे कहा न कि मुझे कोई नहीं मिला? 'कोई नहीं' का अर्थ कोई भी नहीं!"

राजा हंसा और बोला: "हां, निश्चित ही 'कोई नहीं' का अर्थ कोई भी नहीं, लेकिन वह अब तक आया क्यों नहीं?"

इसी तरह की छोटी-छोटी सुंदर कहानियां, 'एलिस इन वंडरलैंड' और 'एलिस थ्रू दि लुकिंग ग्लास' दोनों पुस्तकों में भरी पड़ी हैं। स्मरण रखने जैसी सबसे अजीब बात यह है कि लुइस कैरोल्स लेखक का असली नाम नहीं है...क्योंकि वह एक गणितज्ञ और एक अध्यापक था; इसीलिए उसने एक झूठे नाम का उपयोग किया। लेकिन यह कितने दुख की बात है वह झूठा नाम पूरी दुनिया के लिए एक वास्तविकता बन गया और असली

आदमी पूरी तरह से भुला दिया गया है। यह अजीब बात है कि एक गणितज्ञ और अध्यापक इतनी सुंदर पुस्तकें लिख सकता है।

तुम्हें आश्चर्य होगा कि मैं इन पुस्तकों को क्यों शामिल कर रहा हूं। मैं शामिल कर रहा हूं क्योंकि मैं दुनिया को यह कहना चाहता हूं कि मेरे लिए ज्यां पाल सार्त्र की 'बीइंग एंड नथिंगनेस' और लुइस कैरोल्स की 'एलिस इन वंडरलैंड' दोनों ही समान हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। असल में, यदि मुझे दोनों के बीच चुनाव करना हो तो मैं 'एलिस इन वंडरलैंड' को चुनूंगा और 'बीइंग एंड नथिंगनेस' को समुद्र में फेंक दूंगा, प्रशांत महासागर में इतनी दूर फेंकूंगा कि कोई उसे दुबारा न पा सकेगा। मेरे लिए ये दो छोटी पुस्तकें अत्यधिक आध्यात्मिक मूल्य रखती हैं। हां, मैं मजाक नहीं कर रहा हूं...मैं सच कह रहा हूं।

नौवीं... बार-बार मैं खलील जिब्रान पर लौट आता हूं। खलील जिब्रान से मुझे प्रेरम है और मैं उसकी सहायता करना चाहूंगा। मैंने उसकी प्रतीक्षा भी की है, लेकिन अभी उसका जन्म नहीं हुआ है। उसे भविष्य में किसी और सदगुरु की तलाश करनी होगी। नौवें नबंर के लिए मेरी पसंदीदा पुस्तक है 'दि वांडरर'–'खानाबदोश।'

खलील जिब्रान की 'दि वांडरर' कहानियों का एक संग्रह है। किसी भी गहरी बात को कहने के लिए कहानी सबसे पुरानी पद्धति है। वह जिसे नहीं कहा जा सकता उसे हमेशा कहानियों के द्वारा कहा जा सकता है। यह छोटी-छोटी कहानियों का एक सुंदर संग्रह है।

मैं भी कितना होशियार हूं! बंद आंखों से भी मैं देख रहा हूं कि देवगीत न केवल कुछ कहना चाहता है–वह तो अपने पैरों का भी उपयोग कर रहा है, जो बहुत शिष्ट बात नहीं है, और वह भी एक सदगुरु की पीठ के पीछे...! क्या कर सकते हैं, संसार ऐसा ही है।

यह सुंदर है, आशु। जरा नंबर तो बताना।

''नौवें नंबर की चर्चा चल रही थी, ओशो।''

दसवीं: खलील जिब्रान की दूसरी पुस्तक है 'दि स्प्रिचुअल सेइंग्स'–'आध्यात्मिक कहावतें।' अब मुझे आपत्ति है, हालांकि यह आपत्ति खलील जिब्रान के विरुद्ध है जिसे मैं प्रेम करता हूं। उसे 'स्प्रिचुअल सेइंग्स' लिखने की अनुमति नहीं दी जा सकती। आध्यात्मिक?–यद्यपि पुस्तक सुंदर है, लेकिन अच्छा होता अगर उसने इस पुस्तक का नाम 'ब्यूटीफुल सेइंग्स' –'सुंदर कहावतें' रखा होता, सुंदर न कि आध्यात्मिक। इसे आध्यात्मिक कहना बिलकुल बेतुकी बात है। लेकिन फिर भी यह पुस्तक मुझे प्रिय है, उसी तरह जैसे मुझे सारी बेतुकी बातें प्रिय हैं।

मुझे तर्तूलियन का स्मरण आ रहा है, जिसकी पुस्तक–मुझे क्षमा करना–जिसकी पुस्तक को मैंने शामिल नहीं किया है। सभी को शामिल करना तो मेरे लिए असंभव था। लेकिन कम से कम मैं उनके नाम का उल्लेख तो कर ही सकता हूं। तर्तूलियन का प्रसिद्ध कथन है: 'मेरा परमात्मा में भरोसा है क्योंकि वह तर्कातीत है।' मैं नहीं समझता कि संसार में किसी अन्य भाषा में इससे अधिक सारगर्भित कथन होगा। और तर्तूलियन एक ईसाई संत है! हां, जहां मुझे सौंदर्य दिखाई पड़ता है मैं उसकी प्रशंसा करता हूं–यहां तक कि एक ईसाई संत की भी।

'मेरा परमात्मा में भरोसा है क्योंकि वह तर्कातीत है'–इसे हीरों से लिखा जाना चाहिए, स्वर्ण अक्षरों से नहीं। स्वर्ण बहुत सस्ता है। यह कथन: 'मुझे परमात्मा में भरोसा है क्योंकि वह तर्कातीत है,' कितना मूल्यवान है। तर्तूलियन 'स्प्रिचुअल सेइंग्स' नाम की पुस्तक लिख सकता था लेकिन खलील जिब्रान नहीं।

खलील जिब्रान को ध्यान में उतरना चाहिए। अब समय आ गया है कि वह ध्यान करे। जैसे कि मेरे लिए समय आ गया है कि मैं बोलना बंद कर दूं। लेकिन मैं बंद नहीं कर सकता, क्योंकि कारण सीधा साफ है, मुझे पचास की संख्या पूरी करनी है।

दसवीं...क्या मैं सही हूं, देवगीत?

''असल में हम पचास पूरी कर चुके हैं। अभी नंबर दस था, ओशो।''

तब मुझे इक्यावनवीं करनी होगी, क्योंकि मैं इसे बाहर नहीं रख सकता। यह असंभव है, चाहे नंबर हो या न हो। जैसा मैंने किया वैसा ही तुम कर सकते हो: कहीं पर नंबर उलट-पुलट कर दो, और फिर उसी नंबर पर आ जाओ जैसे कि मैं आता हूं।

ग्यारहवीं: सैमुअल बेकेट्स की 'वेटिंग फॉर गोडोट।' अब किसी को पता नहीं कि 'गोडोट' का क्या अर्थ है, जैसे किसी को यह नहीं पता कि 'गॉड' का क्या अर्थ है। दरअसल, बेकेट ने एक महान काम किया है 'गॉड' के स्थान पर 'गोडोट' का आविष्कार करके। हर व्यक्ति निरर्थक की प्रतीक्षा कर रहा है क्योंकि 'गॉड', ईश्वर तो है ही नहीं। हर व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहा है–प्रतीक्षा प्रतीक्षा प्रतीक्षा...और निरर्थक की प्रतीक्षा। इसलिए, हालांकि संख्या पूरी हो गई थी, फिर भी इस पुस्तक 'वेटिंग फॉर गोडोट' को मैं शामिल करना चाहता था।

अब सिर्फ दो मिनट प्रतीक्षा करो... धन्यवाद।

आज इतना ही

सत्र-12

ओ. के., अब यह पोस्ट-पोस्टस्क्रिप्ट है। मेरी परेशानी समझना मुश्किल है। जहां तक मुझे याद है मैं हमेशा से पढ़ता ही रहा हूं और दिन हो कि रात हो मैंने पढ़ने के सिवाय और कुछ भी नहीं किया है, लगभग आधी शताब्दी मैं पढ़ता ही रहा हूं। इसलिए स्वभावतः, किसी पुस्तक का चुनाव करना करीब-करीब एक असंभव सा कार्य है। लेकिन मैंने इन सत्रों में यह काम जारी रखा है, इसलिए जिम्मेवारी तुम्हारी है।

पहली: मार्टिन बूबर... यदि मार्टिन बूबर को शामिल न करता तो मैं अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाता। प्रायश्चित के रूप मैं उनकी दो पुस्तकें शामिल कर रहा हूं: पहली है, 'टेल्स ऑफ हसीदिज्म।' डी. टी. सुजुकी ने झेन के लिए जो किया है, वही बूबर ने हसीद धर्म के लिए किया है। दोनों ने साधकों के लिए अदभुत कार्य किया है, लेकिन सुजुकी बुद्धत्व को उपलब्ध हो गए; पर अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि बूबर नहीं हो सके।

बूबर एक महान लेखक, दार्शनिक, विचारक थे, लेकिन ये सब खेलने के लिए खिलौने हैं। फिर भी, उनका नाम शामिल करके मैं उन्हें सम्मान दे रहा हूं। क्योंकि उनके बिना संसार को 'हसीद' शब्द का पता भी न चलता।

बूबर का जन्म हसीद परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे हसीदों के बीच पल कर बड़े हुए। यह उनकी हड्डी-मांस-मज्जा में था, इसलिए जब वे उसका वर्णन करते हैं तो यह सत्य प्रतीत होता है, हालांकि वे वही वर्णन कर रहे हैं जो उन्होंने उसके बारे में सुना है, और अधिक कुछ भी नहीं। उन्होंने सही सुना है; इसे रिकॉर्ड में लिखा जाना चाहिए। सही-सही सुनना तो बहुत कठिन है ही, और फिर बड़े पैमाने पर पूरी दुनिया को बताना तो और भी कठिन है, लेकिन उन्होंने इसे सुंदर ढंग से किया है।

सुजुकी बुद्धपुरुष हैं, बूबर नहीं हैं–लेकिन सुजुकी महान लेखक नहीं हैं, बूबर हैं। सुजुकी एक सामान्य लेखक हैं। जहां तक लेखन की कला का संबंध है बूबर का स्थान बहुत ऊंचा है। लेकिन सुजुकी को सत्य का पता है, और बूबर को नहीं है; वे केवल अपनी परंपरा का वर्णन कर रहे हैं जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ है... निस्संदेह, उनका वर्णन प्रामाणिक है।

'टेल्स ऑफ हसीदिज्म' सत्य के सभी खोजियों को पढ़ना चाहिए। इन कहानियों में, इन छोटी-छोटी कहानियों में एक तरह की सुगंध है। यह झेन से अलग है। यह सूफीज्म से भी अलग है। इसमें अपनी स्वयं की ही सुगंध है, जो किसी से उधार नहीं ली गई है, न कोई नकल, न कोई अनुकरण। हसीद प्रेम करते हैं, हंसते हैं, नृत्य करते हैं। उनका धर्म दमन का नहीं, बल्कि उत्सव का है। यही कारण है कि मेरे लोगों में और हसीदों के बीच एक सेतु है। यह संयोगवश नहीं है कि इतने सारे यहूदी मेरे पास आए हैं; वरना, जहां तक बन पड़ता है मैं हमेशा यहूदियों के सिर पर चोट करने से बाज नहीं आता हूं...और फिर भी वे जानते हैं कि मैं उन्हें प्रेम करता हूं। यहूदी धर्म के सारतत्व से मुझे प्रेम है, और वह हसीद धर्म है। मूसा ने निश्चित ही इसके बारे में सुना भी न होगा, लेकिन वे एक हसीद थे; चाहे वे इस बात को जानते हों या न जानते हों इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। मैं उन्हें हसीद घोषित करता हूं–और इसी तरह मैं बुद्ध, कृष्ण, नानक और मोहम्मद को हसीद घोषित करता हूं। हसीद धर्म बाल शेम के बाद अस्तित्व में आया। शब्द से कोई फर्क नहीं पड़ता, असली बात आत्मा है।

मार्टिन बूबर की दूसरी पुस्तक: 'आइ एंड दाउ'–'मैं और तू।' यह उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है, जिसके लिए उन्हें नोबल प्राइज दिया गया था। मुझे क्षमा करना, लेकिन मैं इससे पूरी तरह से असहमत हूं। मैं इसका उल्लेख कर रहा हूं, क्योंकि यह एक सुंदर पुस्तक है, कलात्मक ढंग से, बहुत गहराई और ईमानदारी के साथ लिखी गई है, लेकिन फिर भी इसमें आत्मा नहीं है, क्योंकि स्वयं बूबर में ही आत्मा नहीं थी। तो बेचारा बूबर अपनी पुस्तक में इसे कैसे ला सकता था, अपनी श्रेष्ठ रचना में?

'आइ एंड दाउ' का यहूदी लोग बहुत ज्यादा सम्मान करते हैं, क्योंकि वे सोचते हैं कि यह पुस्तक उनके धर्म का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन यह किसी भी धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, न यहूदी धर्म, न हिंदू धर्म। यह केवल उस आदमी के अज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है जिसे मार्टिन बूबर कहा जाता है। लेकिन निश्चित ही बूबर एक कलाकार थे, एक महान प्रतिभाशाली व्यक्ति। और जब कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति उसके बारे में लिखना प्रारंभ करता है जिसके बारे में वह कुछ भी न जानता हो, तो भी वह श्रेष्ठतम कृति की रचना कर सकता है।

'आइ एंड दाउ' अपने मूल रूप में ही गलत है, क्योंकि बूबर कहते हैं कि यह व्यक्ति और परमात्मा के बीच एक संवाद है। 'मैं और तू'...! बकवास! व्यक्ति और परमात्मा के बीच कोई संवाद नहीं हो सकता, बस केवल मौन हो सकता है। संवाद? किस विषय में बातचीत करोगे तुम परमात्मा से? डॉलर के अवमूल्यन के विषय में? या अयातुल्ला रूहोल्लाह खोमैनी के विषय में? तुम परमात्मा के साथ किस विषय में संवाद कर सकते हो? वहां कुछ भी नहीं है जिसके विषय में तुम संवाद कर सको। तुम बस एक विस्मय की स्थिति में हो सकते हो... निपट मौन।

उस मौन में न कोई 'मैं' बचता है और न कोई 'तू' बचता है; इसलिए मैं न केवल पुस्तक को बल्कि शीर्षक को भी मैं नकारता हूं। 'आइ एंड दाउ'...? इसका मतलब है कि अभी भी कुछ अलगाव है। नहीं, यह तो ऐसा ही है जैसे एक कमल की पंखुड़ी से ओस की बूंद लुढक कर सागर में जा गिरे। ओस की बूंद खो जाती है, या दूसरे शब्दों में सागर हो जाती है, लेकिन वहां कोई मैं-तू नहीं रह जाता है। या तो वहां केवल मैं होता है या केवल तू होता है। लेकिन जब वहां मैं नहीं है, तो कोई तू भी नहीं हो सकता है, इसका कोई अर्थ ही न होगा। यदि वहां तू नहीं है, तो मैं भी नहीं हो सकता, वास्तव में तो केवल मौन है...यह विराम... मेरा क्षण भर का मौन उससे कहीं अधिक कह जाता है जो मार्टिन बूबर 'आइ एंड दाउ' में कहने का प्रयास करते हैं और असफल रहते हैं। लेकिन यह भले ही असफलता हो, यह एक अति उत्तम रचना है।

तीसरी...मार्टिन बूबर एक यहूदी थे, और अन्य यहूदी लाइन में खड़े हैं। हे भगवान, कितनी लंबी लाइन है, और बेचारे देवगीत और आशु... आखिरकार इन्हें भी तो भोजन की जरूरत है, ये सिर्फ मेरे शब्दों पर तो जिंदा रह नहीं सकते हैं। इसलिए मैं जल्दी करूंगा। जितना मुझसे संभव हो सकेगा ज्यादा से ज्यादा को मैं निपटाने की कोशिश करूंगा। लेकिन कुछ तो बहुत ही जिद्दी हैं, और मुझे पता है कि जब तक मैं उनके बारे में कुछ न कहूंगा तब तक वे जाने वाले नहीं हैं।

मार्टिन बूबर के बाद जो दूसरा आदमी है वह सबसे जिद्दी में से एक है–मुझसे ज्यादा जिद्दी नहीं। शायद किसी पिछले जन्मों में मैं यहूदी था; जरूर रहा होऊंगा। यह आदमी कार्ल मार्क्स है। पुस्तक वह जो अपने हाथ में थामे हुए हैं 'दास कैपिटल' है।

यह अब तक की लिखी गई सबसे निकृष्टतम पुस्तकों में से एक है। लेकिन एक तरह से यह एक बहुत बढ़िया पुस्तक है, क्योंकि लाखों लोगों पर इसका वर्चस्व है। लगभग आधी दुनिया कम्युनिस्ट है, और शेष आधे

के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। यहां तक कि जो लोग कम्युनिस्ट नहीं हैं, भीतर गहरे में उन्हें लगता है कि कम्युनिज्म में कुछ तो अच्छा है। इसमें कुछ भी अच्छा नहीं है। यह बस एक महान स्वप्न का शोषण भर है। कार्ल मार्क्स सपनों का सौदागर था–कोई अर्थशास्त्री नहीं, बिलकुल नहीं–सिर्फ सपने देखने वाला; एक कवि, वह भी तीसरे दर्जे की गुणवत्ता वाला कवि। वह एक महान लेखक भी नहीं है। 'दास कैपिटल' को कोई भी नहीं पढ़ता है। मैं अनेक प्रसिद्ध कम्युनिस्टों से मिला हूं, और उनकी आंखों में आंखें डाल कर मैंने उसने पूछा है, "आपने दास कैपिटल को पढ़ा है?" किसी एक ने भी हां नहीं कहा।

उन्होंने कहा, "केवल कुछ ही पन्ने... हमारे पास करने को और भी बहुत सारे काम हैं, हम इतनी बड़ी पुस्तक नहीं पढ़ सकते हैं?" हजारों पन्ने, और सब बकवास, न तो उसे कोई तर्कबद्ध रूप से लिखा गया है और न ही उसमें कोई सुसंगति है, वह ऐसे ही है जैसे कि कोई पागल हो गया हो। कार्ल मार्क्स के मन में जो कुछ भी आया वह वही लिखता चला गया। ब्रिटिश म्यूजियम में बैठे, हजारों किताबें चारों ओर फैलाए हुए, वह बस लिखता चला गया, लिखता ही चला गया। तुम्हें पता है, म्यूजियम बंद होने के समय यह रोज का कार्य होता था कि उसे खींच कर बाहर कर दिया जाता था। उसे निकालने के लिए बल का प्रयोग करना पड़ता था; वरना वह निकलता ही नहीं था। कभी-कभी तो उसे बेहोश ही उठाना पड़ता था।

अब यह आदमी एक भगवान बन गया है! यह एक अपवित्र त्रिमूर्ति की तरह है: कार्ल मार्क्स, फ्रेड्रिक एंजिल्स, और निस्संदेह लेनिन–ये तीनों व्यक्ति पृथ्वी पर लाखों लोगों के लिए लगभग देवताओं जैसे हो गए हैं। यह एक विपदा है, लेकिन फिर भी मैं इस पुस्तक का उल्लेख कर रहा हूं–इसलिए नहीं कि इसे पढ़ो, बल्कि इसलिए कि इसे मत पढ़ना। इसे रेखांकित करना मैंने जो कहा है: 'इसे मत पढ़ना।' तुम पहले ही एक झंझट में हो, वही काफी है। 'दास कैपिटल' को पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है।

चौथी: याद रखना कि मार्क्स भी एक यहूदी है। यह पूरी कतार यहूदियों की है। चौथी है: सिग्मंड फ्रायड, एक और यहूदी। उसकी श्रेष्ठ कृति है 'लेक्चर्स ऑन साइकोएनालिसिस।' एनालिसिस, विश्लेषण शब्द मुझे पसंद नहीं है, न ही मैं इस आदमी को पसंद करता हूं, लेकिन इसने कार्ल मार्क्स की तरह एक बड़ा आंदोलन चलाया। यह भी दुनिया के प्रभावशाली लोगों में से एक है।

यहूदियों ने हमेशा दुनिया पर अपना वर्चस्व बनाए रखने का सपना देखा है। और वास्तव में उनका वर्चस्व रहा भी है। तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति जिनके बारे में कहा जा सकता है कि इस आधुनिक युग में उनका वर्चस्व है: कार्ल मार्क्स, सिग्मंड फ्रायड, और अलबर्ट आइंस्टीन। ये तीनों यहूदी हैं। यहूदियों ने अपना सपना साकार कर लिया है, उनका वर्चस्व है। लेकिन जहां तक अर्थशास्त्र का संबंध है मार्क्स गलत है; फ्रायड गलत है, क्योंकि मन का विश्लेषण नहीं किया जाता है, बल्कि उसे हटा दिया जाए, जिससे कि तुम अ-मन की दुनिया में प्रवेश कर सको।

अपने सापेक्षवाद के सिद्धांत के बारे में अलबर्ट आइंस्टीन निश्चित ही सही है, लेकिन जब उसने प्रेसीडेंट रूजवेल्ट को एक पत्र लिख कर एटम बम बनाने का प्रस्ताव भेजा, तो उसने अपने आप को पूरी तरह से मूर्ख साबित कर दिया। हिरोशिमा और नागासाकी–हजारों लोग जो वहां थे मारे गए, जिंदा ही जला दिए गए, सभी अलबर्ट आइंस्टीन की ओर इशारा कर रहे हैं। वह आइंस्टीन का पत्र ही था जिससे अमरीका में एटम बम बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। आइंस्टीन अपने आप को कभी क्षमा नहीं कर पाया; यह उस आदमी की अच्छी बात है। कम से कम उसने महसूस तो किया कि उससे कितना बड़ा पाप हो गया है। उसकी मृत्यु अत्यंत निराशा में हुई।

मरने से पहले उसने कहा था: ''मैं कभी भी, कभी भी, कभी भी फिर से एक भौतिकशास्त्री की भांति पैदा होना नहीं चाहूंगा, बल्कि बस एक प्लंबर होना चाहूंगा।''

और आइंस्टीन मनुष्य के पूरे इतिहास में श्रेष्ठतम प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से एक था। एक भौतिकशास्त्री होने के साथ क्यों वह इतना निराश था? क्यों? कारण सीधा साफ है कि उसे होश ही नहीं था कि वह क्या कर रहा है। जब तक वह होश में आता है बहुत देर हो चुकी थी... यही बेहोश आदमी का लक्षण है: उसे होश तभी आता है जब बहुत देर हो चुकी होती है। होश वाले आदमी पहले ही सावधान रहते हैं।

पांचवीं...इतने सारे यहूदी प्रतीक्षा कर रहे हैं, मेरे लिए यह इतना मुश्किल है कि किसको चुना जाए और किसको नहीं? और तुम्हें पता है कि यहूदियों सेपार पाना कितना कठिन है। इसलिए झंझट से बचने के लिए मैं पूरी लाइन को ही छोड़ रहा हूं। तो अब और कुछ शुरू करता हूं। कम से कम इस समय तो यहूदियों को जाने दो। आप सभी लोग जाओ! मैं यहूदियों से बात कर रहा हूं, तुमसे नहीं।

पांचवीं: मैं चिंतित था कि शायद मैं गुरजिएफ की पुस्तक 'मीटिंग्स विद दि रिमार्केबल मेन' का उल्लेख न कर पाऊं। इस पी.पी.एस. के लिए परमात्मा को धन्यवाद। यह एक महान रचना है।

गुरजिएफ ने दुनिया भर की यात्रा की, विशेष रूप से मध्य पूर्व और भारत की। वे ऊपर तिब्बत तक गए, सिर्फ इतना ही नहीं, वे स्वर्गीय दलाईलामा के शिक्षक भी रहे थे...वर्तमान दलाईलामा के नहीं–यह तो बुद्धू आदमी है–बल्कि पहले वाले के। तिब्बती भाषा में गुरजिएफ का नाम 'दोरजेब' लिखा जाता है, और कई लोगों ने समझा कि 'दोरजेब' कोई और है। वे कोई और नहीं बल्कि जॉर्ज गुरजिएफ हैं। क्योंकि यह तथ्य ब्रिटिश सरकार को मालूम था कि गुरजिएफ कई सालों तक तिब्बत में रहे हैं; सिर्फ यही नहीं, बल्कि कई वर्षों तक ल्हासा के महल में रहे थे–इसलिए उन्होंने गुरजिएफ को इंग्लैंड में रहने से रोक दिया। वे असल में इंग्लैंड में रहना चाहते थे, लेकिन उन्हें अनुमति नहीं मिली।

गुरजिएफ ने यह पुस्तक 'मीटिंग्स विद दि रिमार्केबल मेन' एक संस्मरण के रूप में लिखी है। यह पुस्तक उन सभी अदभुत लोगों के प्रति एक अति आदरणीय स्मृतिग्रंथ है जो उन्हें अपने जीवन में मिले थे–सूफी, भारतीय रहस्यदर्शी, तिब्बती लामा, जापानी झेन भिक्षु। मैं तुम्हें यह जरूर बताना चाहूंगा कि उन्होंने सभी के बारे में नहीं लिखा; उन्होंने बहुत से लोगों को इस पुस्तक से बाहर रखा, उसका सीधा सा कारण यह था कि पुस्तक बाजार में बिकने जाने वाली थी और यह बाजार की मांग को पूरा करने के लिए करना पड़ा।

मुझे किसी की मांग पूरी नहीं करनी है। मैं वह आदमी नहीं हूं जो बाजार की जरा भी चिंता करता हो, इसलिए मैं कह सकता हूं कि उन्होंने अपनी इस पुस्तक में सचमुच में सबसे उल्लेखनीय महत्वपूर्ण लोगों को बाहर छोड़ दिया है। लेकिन उन्होंने जो भी लिखा है वह बहुत ही सुंदर है। उससे अभी भी मेरी आंखों में आंसू भर आते हैं। जब भी कोई बात सुंदर लगती है मेरी आंखें भर आती हैं; सम्मान प्रकट करने का इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है।

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसका अध्ययन किया जाना चाहिए, यह सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं है। अंग्रेजी में तुम्हारे पास 'पाठ' के लिए कोई शब्द नहीं है; यह हिंदी शब्द है जिसका अर्थ है पढ़ना, और एक ही चीज को रोज-रोज जीवन भर पढ़ना। इसका अनुवाद 'पढ़ना' नहीं हो सकता है, विशेषकर पश्चिम में जहां तुम कोई पुस्तक पढ़ते हो और एक बार पढ़ कर फेंक देते हो या ट्रेन में छोड़ देते हो। इसका अनुवाद 'अध्ययन' भी नहीं हो सकता है, क्योंकि अध्ययन एकाग्र होकर शब्द के अर्थ को, या शब्दों के अर्थ को समझने का प्रयास है। 'पाठ' न तो पढ़ना है और न ही अध्ययन है, बल्कि कुछ और ज्यादा है। यह है आनंदपूर्वक दोहराना, इतने आनंदपर्वक कि

वह तुम्हारे हृदय में प्रवेश कर जाए, वह तुम्हारी श्वास ही बन जाए। इसके लिए पूरा जीवन चाहिए, और अगर तुम गुरजिएफ की 'मीटिंग्स विद दि रिमार्केबल मेन' जैसी वास्तविक पुस्तकों को समझना चाहते हो तो यह जरूरी है।

यह 'डान जुआन' की तरह कोई उपन्यास नहीं है–एक काल्पनिक आदमी जिसे एक अमरीकी कार्लोस कैस्टेनेडा द्वारा निर्मित किया गया था। इस आदमी ने मनुष्य-जाति का बहुत अहित किया है। आध्यात्मिक उपन्यास नहीं लिखे जाना चाहिए, इसका सरल सा कारण यह है कि फिर लोग यह सोचने लगते हैं कि आध्यात्मिकता भी बस एक उपन्यास से ज्यादा नहीं है।

'मीटिंग्स विद दि रिमार्केबल मेन' एक असली पुस्तक है। गुरजिएफ ने जिन लोगों का उल्लेख किया है उनमें से कुछ अभी भी जीवित हैं; मैं खुद उनमें से कई लोगों से मिल चुका हूं। मैं इस बात का गवाह हूं कि वे लोग काल्पनिक नहीं हैं, हालांकि मैं गुरजिएफ को भी माफ नहीं कर सकता क्योंकि उन्होंने कुछ सबसे उल्लेखनीय महत्वपूर्ण लोगों को छोड़ दिया।

बाजार से समझौता करने की कोई जरूरत नहीं है; समझौता करने की कोई भी जरूरत नहीं है। वे एक बहुत शक्तिशाली आदमी थे, मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने समझौता क्यों किया, क्यों उन्होंने असली महत्वपूर्ण लोगों को छोड़ दिया। मैं उनमें से कुछ लोगों से मिल चुका हूं जिन्हें गुरजिएफ ने इस पुस्तक में छोड़ दिया है, उन्होंने खुद मुझे बताया कि गुरजिएफ उनके साथ रह चुके हैं। वे लोग अब बहुत वृद्ध हो चुके हैं। लेकिन फिर भी पुस्तक अच्छी है–आधी, अधूरी है, पर मूल्यवान।

छठवीं: मैंने एक पुस्तक को हमेशा ही पसंद किया है, इसके लेखक का पता नहीं है, वह अज्ञात है, हालांकि ऐसा जाना जाता है कि यह कबीर के किसी शिष्य द्वारा लिखी गई है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि किसने लिखी है, लेकिन जिसने भी लिखी है, इतना बिना किसी झिझक के कहा जा सकता है कि वह जरूर संबुद्ध रहा होगा।

यह छंदों की एक छोटी सी पुस्तक है, बहुत ही साधारण ढंग से लिखी गई है। हो सकता है लिखने वाला आदमी बहुत पढ़ा-लिखा नहीं रहा होगा, लेकिन उससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता। असली बात यह है कि उसके अंदर क्या है। हां, असली बात अर्थ रखती है–और वह है विषय-वस्तु। पुस्तक को कभी प्रकाशित भी नहीं किया गया है। जिन लोगों के पास यह पुस्तक है वे इसे प्रकाशित करने के खिलाफ हैं, और मैं उनकी भावनाओं को समझ सकता हूं और पूरी तरह से उनके साथ सहमत हूं।

वे कहते हैं कि जब कोई पुस्तक प्रकाशित हो जाती है तो वह बाजार का हिस्सा हो जाती है, और इसीलिए वे इसे प्रकाशित नहीं करना चाहते हैं। यदि किसी को पुस्तक चाहिए तो वह आए और अपने हाथों से इसकी नकल उतार ले। तो इसकी बहुत सी हस्तलिखित प्रतियां भारत में चारों ओर उपलब्ध हैं, लेकिन उन सभी ने वादा कर रखा है कि इसे प्रकाशित नहीं करेंगे। प्रकाशन निश्चित ही पुस्तक के साथ कुछ करता है; यह यांत्रिक हो जाती है, प्रेस में जाकर उसका कुछ खो जाता है। उसकी आत्मा खो जाती है; वहां से वह एक मुर्दा लाश होकर बाहर निकलती है।

इस पुस्तक का कोई नाम नहीं था; क्योंकि यह कभी प्रकाशित नहीं हुई इसलिए किसी शीर्षक की आवश्यकता भी न थी। जिन लोगों के पास मूल प्रति थी मैंने उनसे पूछा: "आप इसे किस नाम से बुलाते हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया: "ग्रंथ।"

अब, 'ग्रंथ' का अर्थ तुम्हें समझना पड़ेगा। यह एक प्राचीन शब्द है, जब पुस्तकें कागज पर नहीं, पत्तों पर लिखी जाती थीं। कुछ विशेष पत्तों का लिखने के लिए उपयोग किया जाता है, और जब आप उन पत्तों को एक साथ बांधते हैं तो वह एक 'ग्रंथ' कहलाता है। 'ग्रंथ' का सही अर्थ है–'पत्तों का एक साथ बंधा होना।'

पुस्तक में कुछ अत्यंत मूल्यवान वक्तव्य हैं। मैं कुछ का परिचय तुम्हें करवाता हूं। एक, यह कहता है: जो कहा जा सकता है, उसके बारे में चिंता मत करो, वह सत्य नहीं होता। सत्य कहा नहीं जा सकता। दूसरा: 'ईश्वर' केवल एक शब्द है–महत्वपूर्ण है, लेकिन उसका अस्तित्व नहीं है। 'ईश्वर' सिर्फ एक प्रतीक है जो एक अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है, किंतु वह कोई वस्तु या व्यक्ति नहीं है। तीसरा: ध्यान मन की गतिविधि नहीं है, वह मन का हिस्सा नहीं है। इसके विपरीत, मन का छूट जाना ध्यान है। और इसी तरह इत्यादि, इत्यादि।

मैं 'ग्रंथ' का उल्लेख करना चाहता था, क्योंकि कहीं इसका उल्लेख नहीं हुआ है और कभी इसका अनुवाद भी नहीं हुआ है।

सातवीं...क्या मैं अब भी संख्या में सही हूं?

"हां, ओशो।"

मैं कार्ल मार्क्स और फ्रेड्रिक एंजिल्स के विरुद्ध हूं, लेकिन मुझे इन दोनों लोगों के द्वारा लिखी गई पुस्तक 'दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' की तारीफ करनी चाहिए–और याद रखना, मैं कम्युनिस्ट नहीं हूं! तुम मुझसे अधिक कम्युनिस्ट विरोधी आदमी कहीं नहीं पाओगे, लेकिन फिर भी मैं इस छोटी सी पुस्तक 'दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' को प्रेम करता हूं। जिस ढंग से यह लिखी गई है उससे मुझे प्रेम है–इसकी विषय-वस्तु से नहीं, बल्कि इसकी शैली से।

तुम्हें पता है कि मेरी पसंद बहुआयामी है और मैं शैली की भी तारीफ करूंगा। बुद्ध ने तो अपनी आंखें और कान बंद कर लिए होते, महावीर तो भाग खड़े होते: शैली...? लेकिन मैं अपनी श्रेणी खुद हूं। हां, जिस शैली में 'दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' लिखी गई है वह मुझे प्रिय है, और उसकी विषय-वस्तु से मुझे घृणा है। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो? कोई वेशभूषा से प्रेम कर सकता है और व्यक्ति से घृणा! क्योंकि असल में यही स्थिति मेरे साथ है। 'दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' में अंतिम वचन है: 'दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ! तुम्हारे पास खोने के लिए सिवाय जंजीरों के और कुछ भी नहीं है, और जीतने के लिए सारी दुनिया है।'

क्या तुम यह शैली देखते हो? बात को किस ताकत से कहा गया है: एक हो जाओ! तुम्हारे पास खोने के लिए सिवाय जंजीरों के और कुछ भी नहीं है, और जीतने के लिए सारी दुनिया है। यही मैं अपने संन्यासियों से कहता हूं, हालांकि मैं 'एक हो जाने' के लिए नहीं कहता, मैं कहता हूं: 'मात्र होना, जस्ट बी'–और तुम्हारे पास खोने के लिए सिवाय जंजीरों के और कुछ भी नहीं है।

और मैं यह नहीं कहता कि तुम्हें दुनिया जीतनी है–किसे परवाह है, कौन चिंता करता है! क्या तुम मुझे राजी कर सकते हो कि मैं महान सिकंदर बन जाऊं, या नेपोलियन बोनापार्ट, या एडोल्फ हिटलर, या जोसफ स्टैलिन, या माओत्से तुंग? इन सभी बेवकूफों की लंबी लाइन है और मेरा इनके साथ कुछ भी लेना-देना नहीं है। मैं अपने संन्यासियों से नहीं कहता कि जीतो–जीतने के लिए कुछ भी नहीं है। 'मात्र होना'–यही मेरा घोषणा-पत्र है। होना, क्योंकि होने में ही तुम्हें सब-कुछ मिल जाता है।

आठवीं...क्या मैं अब भी सही हूं?

"हां, ओशो।"

अच्छा। क्या तुमने अभी भी व्यवस्था बनाई हुई है? क्या तुमने पहले से ही कोई योजना बना ली है?...क्योंकि आज मुझे तुम्हारी फुसफुसाने की आवाज नहीं सुनाई दे रही है। थोड़ा-बहुत फुसफुसाओ, यह अच्छा लगता है।

आठवीं है: मार्सेल की पुस्तक 'दि मिथ ऑफ सिसिफस'–'सिसिफस की कथा।' मैं साधारण अर्थ में कोई धार्मिक आदमी नहीं हूं; मैं अपने ही ढंग का धार्मिक आदमी हूं। इसलिए लोग आश्चर्य करते होंगे कि मैं उन पुस्तकों को क्यों शामिल कर रहा हूं जो धार्मिक नहीं हैं। वे धार्मिक हैं, लेकिन तुम्हें गहरी खुदाई करनी होगी, और तब तुम्हें उनमें धार्मिकता मिलेगी। 'दि मिथ ऑफ सिसिफस' एक प्राचीन पुराण-कथा है, और मार्सेल ने अपनी पुस्तक के लिए इसका उपयोग किया है। मैं तुम्हें इसकी कहानी सुनाता हूं।

सिसिफस, जो कि एक देवता थे, उन्हें स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था, क्योंकि उन्होंने सर्वशक्तिमान परमात्मा की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया और उन्हें सजा दी गई थी। सजा यह थी कि उन्हें एक बड़ी चट्टान घाटी से उठा कर पहाड़ के शिखर तक ले जानी थी, और शिखर इतना छोटा था कि हर बार जब भी वे उस भारी चट्टान को लेकर वहां पहुंचते और उसे वहां रखने की कोशिश करते, चट्टान फिर से घाटी की ओर नीचे लुढ़कना शुरू कर देती। सिसिफस हैं कि फिर जाते हैं घाटी में, फिर उठाते हैं चट्टान को, हांफते हुए, पसीने से लथपथ–एक अर्थहीन काम–अच्छी तरह से यह जानते हुए भी कि चट्टान फिर से फिसल जाएगी, लेकिन क्या कर सकते हैं?

आदमी की पूरी कहानी यही है। इसीलिए मैं कहता हूं कि यदि तुम खुदाई करोगे तो तुम्हें इनमें शुद्ध धर्म मिलेगा। यह स्थिति है आदमी की, और हमेशा से ऐसी ही रही है। तुम क्या कर रहे हो? बाकी सब लोग क्या कर रहे हैं? तुम एक चट्टान एक बिंदु तक ढोते हो जहां से वह बार-बार उसी घाटी में वापस फिसल जाती है, शायद हर बार और भी गहरे में। और अगली सुबह, निश्चित ही नाश्ते के बाद, तुम इसे फिर से ढोने लगते हो। और जब ढो रहे हो तुम्हें पता है कि क्या होने वाला है। यह फिर से फिसल जाएगी।

यह कहानी सुंदर है। मार्सेल ने फिर से इससे परिचित करा दिया है। वह एक बहुत धार्मिक व्यक्ति था। वास्तव में, वह असली अस्तित्ववादी था, ज्यां पाल सात्र नहीं, लेकिन वह प्रसिद्धि पाने के लिए कोई शोर-शराबा नहीं करता था, इसलिए वह कभी भी प्रसिद्ध नहीं हुआ। वह चुप रहा, चुपचाप लिखता रहा, और चुपचाप विदा हो गया। दुनिया में बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि वह अब नहीं रहा। वह इतना शांत व्यक्ति था–लेकिन उसने जो लिखा है, 'दि मिथ ऑफ सिसिफस' वह बहुत ही अर्थपूर्ण है। 'दि मिथ ऑफ सिसिफस' आज तक की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है।

नौवीं: मुझे बार-बार खयाल आता है, पता नहीं क्यों, मुझे लगता है कि बर्ट्रेंड रसल को शामिल करना चाहिए। मैंने सदा उसे प्रेम किया है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि हम दो अलग ध्रुव हैं–बल्कि एक-दूसरे से बिलकुल विपरीत हैं। शायद यही कारण है। विपरीत ध्रुव एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं। क्या तुम फिर से मेरी आंखों में आंसू देख रहे हो? ये बर्ट्रेंड रसल के लिए हैं–अपने मित्रों के बीच वह 'बर्टी' नाम से जाना जाता था। नौवीं पुस्तक है: बर्ट्रेंड रसल की: 'दि हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसफी'–'पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का इतिहास।'

जहां तक पाश्चात्य दर्शन का संबंध है पहले किसी ने भी इस तरह का कार्य नहीं किया है। केवल एक दर्शनशास्त्री ही ऐसा कर सकता है। इतिहासकारों ने कोशिश की है, और दर्शनशास्त्र के कई इतिहास हैं, लेकिन इतिहासकारों में एक भी दर्शनशास्त्री नहीं था। यह पहली बार बर्ट्रेंड रसल की कोटि के दार्शनिक ने इतिहास भी लिखा है–'दि हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसफी।' और वह इतना ईमानदार है कि वह इसे 'दर्शनशास्त्र का इतिहास'

–'दि हिस्ट्री ऑफ फिलॉसफी' नहीं कहता, क्योंकि उसे अच्छी तरह पता है कि वह पूरब के दर्शनशास्त्र के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। वह बस, विनम्रतापूर्वक कहता है कि वह क्या जानता है, और वह यह भी कहता है कि यह दर्शनशास्त्र का पूरा इतिहास नहीं है, बल्कि केवल एक अंश है अरस्तू से लेकर बर्ट्रेंड रसल तक के पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का।

मुझे दर्शनशास्त्र पसंद नहीं है, लेकिन रसल की पुस्तक न सिर्फ एक इतिहास है, बल्कि एक कलाकृति है। यह इतनी व्यवस्थित है, इतनी सौंदर्यपूर्ण है, एक ऐसी सुंदर रचना है, शायद इसलिए कि मूल रूप से रसल एक गणितज्ञ था।

भारत को भी एक बर्ट्रेंड रसल की जरूरत है जो भारतीय दर्शन और उसके इतिहास के बारे में लिख सके। इतिहास तो कई हैं, लेकिन वे इतिहासकारों द्वारा लिखे गए हैं, दर्शनशास्त्रियों के द्वारा नहीं, और साफ जाहिर है कि एक इतिहासकार केवल एक इतिहासकार होता है; वह एक विचारक की आंतरिक लय और गहराई को नहीं समझ सकता है। राधाकृष्णन ने 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी'–'भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास' लिखा है, शायद इस आशा में कि यह पुस्तक भी बर्ट्रेंड रसल की पुस्तक जैसी बन जाएगी, लेकिन यह एक चोरी है। पुस्तक राधाकृष्णन द्वारा नहीं लिखी गई थी, यह एक गरीब विद्यार्थी की थीसिस थी, जिसके राधाकृष्णन परीक्षक थे, और उन्होंने पूरी थीसिस चुरा ली। अदालत में उनके खिलाफ मुकदमा चला था, लेकिन विद्यार्थी इतना गरीब था कि वह मुकदमा नहीं लड़ सकता था। उस विद्यार्थी को चुप रहने के लिए राधाकृष्णन ने काफी पैसे दिए थे।

अब इस तरह के लोग भारतीय दर्शन के साथ न्याय नहीं कर सकते हैं। भारत को एक बर्ट्रेंड रसल की जरूरत है, चीन को...विशेषकर इन दोनों देशों को। पश्चिम सौभाग्यशाली है कि उसके पास बर्ट्रेंड रसल जैसा एक क्रांतिकारी विचारक है, उसने बहुत सुंदर इतिहास लिखा था जिसमें वह अरस्तू से लेकर अपने स्वयं तक के पश्चिमी विचार के पूरे विकास का वर्णन कर सका।

दसवीं: दसवीं पुस्तक जिसके बारे में अब मैं बात करने जा रहा हूं यह भी एक तथाकथित धार्मिक पुस्तक नहीं है। यदि तुम इस पर ध्यान करो...यदि तुम इसे पढ़ते नहीं हो, लेकिन इस पर ध्यान करते हो, तभी यह धार्मिक है। यह मूल रूप में हिंदी में है और अभी तक इसका अनुवाद नहीं हुआ है: 'दि सांग्स ऑफ दयाबाई'–'दयाबाई के गीत।'

मुझे थोड़ा अपराध-भाव अनुभव हो रहा था, क्योंकि मैंने राबिया, मीरा, लल्ला, सहजो का उल्लेख किया है, और मैंने सिर्फ एक स्त्री जो उल्लेख के लायक है: दया, उसको छोड़ दिया है। अब मैं निर्भार अनुभव कर रहा हूं।

'दि सांग्स ऑफ दया'–'दया के गीत।' वह मीरा और सहजो की समकालीन थी, लेकिन दोनों की तुलना में कहीं अधिक गहरी। वह वास्तव में संख्या के पार है। दया थोड़ी सी कुक्कु है, पगली है–लेकिन चिंता मत करो... असल में, भारत में कुक्कु को 'कोयल' कहा जाता है, और इसका अर्थ पागल होना नहीं है। दया वास्तव में एक कोयल है–पागल नहीं, बल्कि एक मधुर गायिका भारतीय कोयल की तरह। भारत में गर्मियों की किसी रात में, दूर से आती कोयल की पुकार; ऐसी है दया...संसार की तपती गर्मी में एक दूर की पुकार।

मैं दया पर बोल चुका हूं; शायद किसी दिन उसका अनुवाद संभव हो सके। लेकिन मुझे डर है कि यह संभव नहीं हो सकता है, क्योंकि कोई कैसे इन कवियों और गायकों का अनुवाद कर सकता है? पूरब शुद्ध काव्य है, और पश्चिम और उसकी सभी भाषाएं सब गद्य हैं, शुद्ध गद्य हैं। अंग्रेजी में मुझे कभी वास्तविक काव्य नहीं मिला। कभी-कभी मैं महान क्लासिकल पश्चिमी संगीतकारों को सुनता हूं... उस दिन मैं बीथोवन को सुन रहा

था, लेकिन मुझे बीच में ही रोक देना पड़ा। एक बार तुम पूर्वीय संगीत सुन लो तो किसी अन्य से उसकी तुलना नहीं हो सकती है। एक बार तुम भारतीय बांस की बांसुरी सुन लो तो उसके बाद बाकी सब साधारण लगने लगता है।

इसलिए मुझे पता नहीं इन गायकों, कवियों और दीवानों जिन पर मैं हिंदी में बोल चुका हूं, कभी उनका अनुवाद होगा, लेकिन उनके नाम का उल्लेख करने से मैं अपने आप को नहीं रोक पा रहा हूं। शायद उनके नाम का उल्लेख ही अनुवाद की स्थिति पैदा करेगा।

आज इतना ही

सत्र-13

आज की पहली पुस्तक है: इरविंग स्टोन की 'लस्ट फॉर लाइफ'–'जीवेषणा।' यह विनसेंट वानगॉग के जीवन पर आधारित एक उपन्यास है। स्टोन ने इतना अदभुत कार्य किया है कि मुझे याद नहीं आता कि किसी और ने इस तरह का कार्य किया हो। किसी ने भी किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में इतनी अंतरंगता से नहीं लिखा है, जैसे कि वह अपने ही खुद के अस्तित्व के बारे में लिख रहा हो।

'लस्ट फॉर लाइफ' मात्र एक उपन्यास नहीं है, यह एक आध्यात्मिक पुस्तक है। मेरे अर्थ में यह आध्यात्मिक है, क्योंकि मेरी दृष्टि में कोई केवल तभी आध्यात्मिक हो सकता है जब जीवन के सभी आयाम एक साथ संयुक्त हों। यह पुस्तक इतनी खूबसूरती से लिखी गई है कि इरविंग स्टोन स्वयं कभी इससे बेहतर लिख पाएगा इसकी दूर-दूर तक कोई संभावना नहीं है।

इस पुस्तक के बाद उसने कई और पुस्तकें लिखी हैं, और आज की मेरी दूसरी पुस्तक भी इरविंग स्टोन की ही है। मैं इसे दूसरी गिन रहा हूं, क्योंकि यह दूसरे दर्जे की है, 'लस्ट फॉर लाइफ' की गुणवत्ता की नहीं है। यह है 'दि एगोनि एंड एक्सटेसी'–'पीड़ा और आनंद', यह भी उसी तरह की है–दूसरे व्यक्ति के जीवन पर आधारित। शायद स्टोन सोच रहा था कि वह 'लस्ट फॉर लाइफ' जैसी एक और पुस्तक रचने में सक्षम हो जाएगा, लेकिन वह असफल रहा। हालांकि वह असफल रहा है, परंतु पुस्तक दूसरे नंबर पर है–किसी दूसरे की तुलना में नहीं, बल्कि उसकी अपनी ही तुलना में। कलाकारों, कवियों, चित्रकारों के जीवन पर लिखित उपन्यास सैकड़ों हैं, लेकिन उनमें से कोई भी इस दूसरी पुस्तक की ऊंचाई छू नहीं सकता, फिर पहली पुस्तक की तो बात ही क्या करना। दोनों ही सुंदर हैं, लेकिन पहली की सुंदरता श्रेष्ठतम है।

दूसरी पुस्तक थोड़ी छोटे दर्जे की है, लेकिन इसमें इरविंग स्टोन की कोई गलती नहीं है। जब तुम्हें पता हो कि तुम 'लस्ट फॉर लाइफ' जैसी किताब लिख चुके हो, तो साधारण मानव प्रवृत्ति यह होती है कि वह उसकी ही नकल करे, उसी जैसी कुछ और बनाए, लेकिन जब तुम नकल करते हो, तब वह उसी जैसी नहीं हो सकती है। जब उसने 'लस्ट' लिखी थी तब वह नकल नहीं कर रहा था, वह निर्दोष, नया-नया था। जब उसने 'दि एगोनी एंड एक्सटेसी' लिखी थी, वह अपनी ही नकल कर रहा था, और यह सबसे खराब नकल थी। सभी लोग अपने बाथरूम में यह करते हैं, आईने में देखते हुए... उसकी दूसरी पुस्तक के बारे में ऐसा ही लगता है। लेकिन मैं कहता हूं, हालांकि यह आईने में एक प्रतिबिंब भर है, फिर भी यह वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती है; इसलिए मैं इसे शामिल कर रहा हूं।

बस मैं गुडिया से पूछ रहा था कि 'दि एगोनी एंड एक्सटेसी' में इरविंग स्टोन ने किसके बारे में लिखा था, क्योंकि जहां तक मेरा संबंध है मैं पूरी तरह भूल गया हूं। जो कि यह बहुत दुर्लभ है, मैं आसानी से भूलता नहीं हूं। मैं आसानी से क्षमा कर देता हूं, लेकिन मैं आसानी से भूलता नहीं हूं। किसके जीवन के बारे में उसने लिखा था, क्या तुम्हें पता है, देवराज? क्या गौगुइन के जीवन के बारे में?

"यह माइकलएंजलो के जीवन के बारे में है, ओशो।"

माइकलएंजलो? एक महान जीवन। तब तो स्टोन बहुत कुछ चूक गया है। यदि गौगुइन के बारे में होता तब तो ठीक था, लेकिन यदि माइकलएंजलो के बारे में है, तब तो मुझे दुख है; मैं भी उसे क्षमा नहीं कर सकता। लेकिन वह सुंदरता से लिखता है। उसका गद्य काव्य की तरह है, हालांकि दूसरी पुस्तक 'लस्ट फॉर लाइफ' जैसी गुणवत्ता की नहीं है। यह हो नहीं सकती, उसका सीधा सा कारण है कि वानगॉग जैसा कोई दूसरा आदमी कभी

हुआ ही नहीं। यह डच आदमी तो बस अपने आप में अनोखा था! वह अकेला खड़ा है। सितारों भरे पूरे आकाश में वह अकेला चमकता है–बिलकुल अलग, अनोखे रूप में अपने ही ढंग से। उस पर महान पुस्तक लिखना सरल है, और माइकलएंजलो के बारे में भी ऐसा ही है, लेकिन स्टोन खुद की नकल करने की कोशिश कर था; इसलिए वह चूक गया। कभी भी नकल मत करना। किसी के पीछे मत चलना...अपने पीछे भी नहीं।

बेचारी चेतना, मैंने उससे कह रखा है कि मेरे कपड़े बर्फ जैसे सफेद होने चाहिए। वह मेरे कपड़े धोती है। जो भी वह कर सकती है करती है, जो भी संभव है।

आज मैं बहुत प्रसन्न हूं जैसे कि मैं फिर से हिमालय में हूं। मैं हिमालय में मरना चाहता था, जैसा कि लाओत्सु ने किया। हिमालय का जीवन तो अदभुत है ही, हिमालय में मरना तो और भी अदभुत है। बर्फ, जहां कहीं भी है, हिमालय की पवित्रता का प्रतिनिधित्व करती है, उसके कुंआरेपन का... कल कभी नहीं आता है, इसलिए चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। मेरे साथ हमेशा आज है, और इस क्षण हम हिमालय की दुनिया में हैं।

माइकलएंजलो को सफेद संगमरमर जरूर पसंद होगा; उसने इसी से जीसस की एक प्रतिमा बनाई है। कोई अन्य व्यक्ति इस तरह की सुंदर प्रतिमा नहीं बना पाया है, इसलिए स्टोन के लिए माइकलएंजलो के बारे में एक सुंदर कहानी लिखना कठिन नहीं था। लेकिन वह बात को चूक गया, सिर्फ इसलिए कि वह अपनी ही नकल कर रहा था। काश, वह अपनी पहली पुस्तक को भूल गया होता, तो वह एक और 'लस्ट फॉर लाइफ' जैसी पुस्तक की रचना कर सकता था।

तीसरी: लियो टाल्सटाय की 'रिसरेक्शन।' अपने पूरे जीवन भर लियो टाल्सटाय जीसस से प्रभावित रहा, अत्यधिक प्रभावित रहा, उसी वजह से यह शीर्षक 'रिसरेक्शन' आया। और लियो टाल्सटाय ने वास्तव में कला की एक अदभुत रचना प्रस्तुत की है। मेरे लिए यह बाइबिल की तरह है। मुझे अभी भी याद है, जब मैं युवा था तो सदा टाल्सटाय की 'रिसरेक्शन' अपने साथ लिए रहता था। मेरे पिता भी चिंतित हो गए। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा: "पुस्तक पढ़ना तो ठीक है, लेकिन पूरे दिन इस पुस्तक को अपने साथ क्यों लिए रहते हो? तुम तो इसे पढ़ चुके हो?"

मैंने कहा: "हां, मैं इसे पढ़ चुका हूं, और केवल एक बार नहीं, बल्कि कई बार, लेकिन फिर भी मैं इसे अपने साथ रखता हूं।"

मेरा पूरा गांव इस बात को जानता था कि मैं 'रिसरेक्शन' नाम की एक खास पुस्तक हमेशा अपने साथ रखता हूं। वे सब समझते थे कि मैं पागल हो गया हूं–और एक पागल आदमी कुछ भी कर सकता है। लेकिन मैं पूरे दिन 'रिसरेक्शन' क्यों लिए रहता था?–और न केवल दिन भर, लेकिन रात के दौरान भी यह पुस्तक मेरे बिस्तर के पास रखी रहती थी। मुझे यह बहुत पसंद थी... जिस तरह से लियो टाल्स्टाय ने जीसस के पूरे संदेश को प्रकट किया है। लियो टाल्स्टाय जीसस के मुख्य शिष्यों की तुलना में किसी से भी कहीं अधिक सफल रहा है, थॉमस को छोड़ कर–और उसके बारे में मैं 'रिसरेक्शन' के तुरंत बाद चर्चा करने वाला हूं।

जिन चार गॉस्पल्स को, जिन चार उपदेशों को बाइबिल में विशेष रूप से शामिल किया गया है उनमें जीसस की आत्मा नहीं है, बिलकुल खो गई है। 'रिसरेक्शन' कहीं बेहतर है। टाल्सटाय सचमुच जीसस से प्रेम करता था और प्रेम जादू है, विशेषकर इसलिए, क्योंकि जब तुम किसी के प्रेम में होते हो तो समय मिट जाता है। टाल्सटाय ने जीसस से इतना प्रेम किया कि वे दोनों समकालीन हो गए हैं। अंतर बड़ा है, दो हजार साल का, लेकिन जीसस और टाल्सटाय के बीच वह मिट जाता है। ऐसा मुश्किल से ही होता है, बहुत, बहुत मुश्किल से,

इसीलिए मैं यह पुस्तक अपने हाथ में लिए रहता था। हालांकि अब मैं इसे अपने हाथ में नहीं रखता, लेकिन यह अभी भी मेरे हृदय में है।

चौथी: पांचवां गॉस्पल। यह बाइबिल में शामिल नहीं है; अभी कुछ समय पहले ही मिश्र में इसे खोजा गया: थॉमस द्वारा लिखित 'नोट्स ऑन जीसस।' मैं इस पर बोल चुका हूं, क्योंकि मैं एकदम इसके प्रेम में पड़ गया था। थॉमस, अपनी 'नोट्स ऑन जीसस' में इतना सरल है कि वह गलत नहीं हो सकता। वह इतना सुस्पष्ट है, इतना सहजस्फूर्त, कि वह है ही नहीं, बस जीसस ही हैं।

क्या तुम्हें पता है कि थॉमस भारत पहुंचने वाला जीसस का पहला शिष्य था? भारतीय ईसाइयत दुनिया में सबसे पुरानी है, वेटिकन से भी पुरानी। और थॉमस का शरीर अभी भी गोवा में सुरक्षित रखा हुआ है–अजीब जगह है, लेकिन सुंदर है, बहुत सुंदर। इसीलिए बाहर से आने वाले सभी हिप्पीस गोवा की ओर आकर्षित होते हैं। दूसरी कोई जगह नहीं है...कोई और समुद्र-तट गोवा की तरह साफ और सुंदर नहीं हैं।

थॉमस का शरीर अभी भी सुरक्षित रखा हुआ है, और यह एक चमत्कार है कि यह कैसे सुरक्षित है। अब हम जानते हैं कि कैसे एक शरीर को बर्फ की भांति जमा कर सुरक्षित रखा जाता है, लेकिन थॉमस का शरीर फ्रोजन, जमा हुआ नहीं है; कोई पुरानी विधि है जिसका उपयोग मिस्र में, तिब्बत में किया जाता था, लगता है यहां पर भी उसी विधि का उपयोग किया गया है। ऐसे रसायनों का उपयोग किया गया है–वैज्ञानिक जिन्हें अभी तक खोजने में सफल नहीं हुए हैं...या फिर पता नहीं किन्हीं रसायनों का उपयोग किया गया भी है या नहीं। वैज्ञानिक तो महान हैं! वे चांद तक पहुंच सकते हैं, लेकिन वे एक ऐसा फाउंटेन पेन नहीं बना सकते जो लीक न करता हो! छोटी-छोटी चीजों में वे असफल होते हैं।

मैं कोई वैज्ञानिक नहीं हूं। कल, जब मैंने कहा कि "ठीक है," वह ठीक नहीं था। मैंने बस यूं ही कह दिया था, क्योंकि मुझे तुमसे प्रेम है और मैं किसी परेशानी का कारण नहीं बनना चाहता था। मैं मशीनरी या रसायन विज्ञान के बारे में कुछ भी नहीं जानता हूं, मैं बस स्वयं को जानता हूं। जब मेरे चारों ओर सब-कुछ पूरी तरह से अच्छा चल रहा होता है तो मैं समाधि में रहता हूं। उस समाधि के माध्यम से मैं जानता हूं कि सब-कुछ पूरी तरह से अच्छा चल रहा है। अगर कुछ गलत है, मुझे फिर से नीचे आना पड़ता है।

नीचे आने की पूरब की पूरी धारणा मैं तुम्हें समझाता हूं। कोई व्यक्ति केवल तभी जन्म लेता है जब कुछ गलत है...अगर उसके साथ कुछ गलत है। यदि कुछ भी गलत नहीं है, वह जन्म नहीं लेता; वह मूलस्रोत में लौट जाता है, ब्रह्मांड में विलीन हो जाता है।

परसों सारा काम पूरी तरह से अच्छा चल रहा था। कल ऐसा नहीं हुआ था। पहले मैंने कहा "ठीक है;" वह सच नहीं था। लेकिन मैं झूठ बोल सकता हूं क्योंकि मुझे तुमसे प्रेम है–मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता था। अंत में भी मैंने कहा, "बहुत अच्छा, अब इसे खत्म कर सकते हो।" लेकिन खत्म करने के लिए कुछ था ही नहीं, क्योंकि यह शुरू भी नहीं हुआ था। यह मैं तुमसे कहना चाहता हूं इसलिए कि फिर से इसे दोहराना न पड़े। कृपया मुझे झूठ बोलने के लिए मजबूर मत करो। मैं ब्रिटिश नहीं हूं, न ही एक अंग्रेज हूं; शिष्टाचारवश भी मेरे लिए झूठ बोलना मुश्किल है, सचमुच में झूठ बोलना मुश्किल है। मेरी सहायता करो ताकि मैं सच बोल सकूं। इस क्षण वास्तव में सब-कुछ सुंदर चल रहा है, और मैं एक अंग्रेज की तरह नहीं कह रहा हूं–वास्तव में सुंदर... तुम मुझे जानते ही हो, फुसलाने वाला।

पांचवीं–लियो टाल्स्टाय द्वारा लिखित एक और पुस्तक। दुनिया की सभी भाषाओं में श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक: 'वॉर एंड पीस'–'युद्ध और शांति।' न केवल श्रेष्ठतम बल्कि बहुत बड़ी भी...हजारों पेज। मुझे नहीं पता कि मुझे छोड़ कर कोई भी इस तरह की पुस्तकें पढ़ता हो। वे इतनी बड़ी हैं, इतनी विशाल कि तुम्हें डरा ही देती हैं।

लेकिन टाल्सटाय की पुस्तक को विशाल होना ही है, यह उसकी गलती नहीं है। 'वॉर एंड पीस' मानव चेतना का पूरा इतिहास है...पूरा इतिहास; यह कुछ पेजों पर नहीं लिखा जा सकता है। हां, हजारों पेजों को पढ़ना मुश्किल है, लेकिन यदि कोई पढ़ सके तो वह किसी और ही दुनिया में पहुंच जाता है। उसे एक अति उत्तम रचना का स्वाद मिल जाएगा। हां, यह एक अति उत्तम रचना है।

छठवीं: ऐसा लगता है आज मैं रूसी लोगों से घिरा हुआ हूं। छठवीं है मैक्सिम गोर्की की 'दि मदर।' मुझे गोर्की पसंद नहीं है; वह एक कम्युनिस्ट है, और कम्युनिस्टों से मुझे घृणा है। जब मैं घृणा करता हूं तो बस घृणा ही करता हूं, लेकिन यह पुस्तक 'दि मदर'–भले ही गोर्की द्वारा लिखी गई हो, मुझे यह पसंद है। अपनी पूरी जिंदगी मैंने इसे पसंद किया है। इस पुस्तक की इतनी प्रतियां मेरे पास थीं कि मेरे पिता कहा करते थे: "क्या तुम पागल हो। पुस्तक की एक प्रति काफी है, और तुम हो कि लगातार मंगवाते ही चले जाते हो! बार-बार मैं देखता हूं कि पार्सल में और कुछ भी नहीं बल्कि मैक्सिम गोर्की की 'दि मदर' की ही एक और प्रति है। तुम पागल हो या क्या हो?"

मैंने उनसे कहा: "हां, जहां तक गोर्की की 'दि मदर' का संबंध है, मैं पागल हूं, बिलकुल पागल।"

जब मैं अपनी मां को देखता हूं तो मुझे गोर्की की याद आती है। गोर्की को पूरी दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कलाकार के रूप में गिना जाना चाहिए। विशेषकर 'दि मदर' में उसने लेखन-कला का उच्चतम शिखर छू लिया है। न ही उसके पहले और न ही उसके बाद... वह बस हिमालय के शिखर की तरह है। 'दि मदर' का अध्ययन किया जाना चाहिए, और बार-बार अध्ययन किया जाना चाहिए; तभी वह धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर प्रकाशित होती है। फिर धीरे-धीरे तुम उसे महसूस करने लगते हो। हां, यही शब्द है: महसूस करना–सोचना नहीं, पढ़ना नहीं, बल्कि महसूस करना। तुम उसे स्पर्श करने लगते हो, वह तुम्हें स्पर्श करने लगती है। वह जीवंत हो उठती है। तब वह एक पुस्तक नहीं रह जाती, बल्कि एक व्यक्तित्व...एक व्यक्ति।

सातवीं है एक और रूसी, तुर्गनेव, और उसकी पुस्तक 'फादर्स एंड संस'–'पिता और पुत्र।' यह मेरी सबसे प्रिय पुस्तकों में से एक है। मुझे कई पुस्तकें प्रिय रही हैं, हजारों पुस्तकें, लेकिन तुर्गनेव की 'फादर्स एंड संस' के मुकाबले कोई नहीं। मैं इसे पढ़ने के लिए बेचारे अपने पिता पर जोर डालता था। वे अब नहीं रहे; वरना मैं उनसे क्षमा मांग लेता। पुस्तक पढ़ने के लिए मैं क्यों उन पर जोर डालता था? उनके खुद के और मेरे बीच के फासले को समझने का उनके पास यही एक रास्ता था। लेकिन वे वास्तव में एक कमाल के आदमी थे; वे पुस्तक को बार-बार पढ़ते थे, सिर्फ इसलिए कि मैंने कहा था। ऐसा नहीं कि उन्होंने इसे एक बार पढ़ा, लेकिन कई बार पढ़ा। और न केवल उन्होंने पुस्तक को पढ़ा, बल्कि उनके और मेरे बीच के फासले को भी मिटा दिया। अब हम दोनों पिता और पुत्र नहीं रह गए थे। पिता और पुत्र के कुरूप रिश्ते, मां और बेटी के, और इसी तरह के... मेरे पिता ने कम से कम मेरे साथ यह फासला गिरा दिया था, हम दोनों मित्र बन गए थे। मित्र होना मुश्किल है अपने ही पिता के साथ, या अपने खुद के पुत्र के साथ; इसका सारा श्रेय उनको जाता है, मुझे नहीं।

तुर्गनेव की पुस्तक 'फादर्स एंड संस' सभी को पढ़नी चाहिए, क्योंकि हर कोई किसी न किसी तरह के रिश्तों में उलझा हुआ है–पिता और पुत्र, पति और पत्नी, भाई और बहिन, इतने कि चक्कर आ जाए। हां, इनसे चक्कर आने लगते हैं। मेरे शब्दकोष में 'परिवार' का पूरा धंधा ही 'चक्कर आने' का प्रतीक है। और हर कोई दिखा रहा है कि संबंध "कितने मधुर हैं..." हर कोई ब्रिटिश जेंटलमैन होने का दिखावा कर रहा है।

आठवीं: डी. एच. लारेंस। मैं हमेशा उसकी पुस्तक के बारे में बोलना चाहता था, लेकिन मुझे हमेशा डर लगा रहता था कि मेरा उच्चारण सही है या नहीं। कृपया इस पर हंसना मत। अपनी सारी जिंदगी मैंने इसे "दि फोनिक्स" कहा है, क्योंकि इसकी स्पेलिंग ही ऐसी है। आज सुबह ही मैंने गुड़िया से पूछा, "मुझे ठीक करो, गड़िया"–जो कि मुश्किल है! "इस शब्द का उच्चारण क्या है?"

उसने कहा: "फीनिक्स!"

मैंने कहा: "हे भगवान! फीनिक्स? और सारी जिंदगी मैं इसे व्यर्थ ही फोनिक्स कहता रहा...!" यह मेरी आठवीं पुस्तक है: "दि फीनिक्स।" ठीक है, मैं अपना उच्चारण ठीक कर लूंगा, जिससे कि वह कम से कम अंग्रेजी जैसा मालूम पड़े।

'दि फीनिक्स।' यह एक अदभुत पुस्तक है, ऐसी जो कभी-कभार ही लिखी जाती है... दशकों में कभी, या यहां तक कि सदियों में।

नौवीं: डी. एच. लारेंस द्वारा लिखित एक और पुस्तक। 'दि फीनिक्स' बहुत बढ़िया है, सुंदर है, लेकिन मेरा अंतिम चुनाव नहीं है। मेरा अंतिम चुनाव है उसकी 'साइकोएनालिसिस एंड दि अनकांशस,' इसे कभी-कभार ही कोई पढ़ता है। अब, कौन इस पुस्तक को पढ़ेगा? जो लोग उपन्यास पढ़ते हैं वे इसे पढ़ेंगे नहीं, और जो लोग मनोविज्ञान पढ़ते हैं उन्होंने इसे पढ़ा नहीं होगा, क्योंकि वे लारेंस को मनोवैज्ञानिक नहीं मानते। लेकिन मैंने इसे पढ़ा है। मैं न तो उपन्यासकारों का प्रशंसक हूं, न ही मनोविश्लेषकों के पीछे पागल हूं। मैं दोनों से मुक्त हूं। मैं पूरी तरह से मुक्त हूं। यह मेरी प्रिय पुस्तक है।

मेरी आंखें ओस की बूंदें इकट्ठा करने लगी हैं। कृपया बीच में बाधा मत डालो।

'साइकोएनालिसिस एंड दि अनकांशस' मेरी सबसे प्रिय और मनपसंद पुस्तकों में से एक रही है और रहेगी। हालांकि अब मैं पढ़ता नहीं हूं, यदि फिर से मुझे पढ़ना हो तो यह पहली किताब होगी जिसे मैं पढ़ूंगा। न वेद, न बाइबिल, लेकिन 'साइकोएनालिसिस एंड दि अनकांशस'... और तुम्हें पता है, यह पुस्तक मनोविश्लेषण के खिलाफ है।

डी. एच. लारेंस सचमुच एक क्रांतिकारी व्यक्ति था, एक विद्रोही। सिग्मंड फ्रायड की तुलना में वह कहीं अधिक क्रांतिकारी था। सिग्मंड फ्रायड मध्यम दर्जे का है। उसके बारे में इससे ज्यादा नहीं कहूंगा, इसलिए प्रतीक्षा मत करो। 'मध्यम दर्जे' का कह कर मैंने कह दिया कि सब-कुछ साधारण है। मध्यम दर्जे का यही अर्थ है: एकदम मध्य में। सिग्मंड फ्रायड सही अर्थों में विद्रोही नहीं है; लारेंस है।

अच्छा। मेरे और मेरे आंसुओं के बारे में चिंता न करो। कभी-कभार आंसुओं का आना अच्छा है, और काफी लंबे समय से मैं रोया भी नहीं हूं।

दसवीं: अर्नाल्ड की 'लाइट ऑफ एशिया।'

मुझे और दो पुस्तकों के बारे में चर्चा करनी है, और चाहे मैं मर ही क्यों जाऊं मैं अपनी चर्चा पूरी करूंगा।

ग्यारहवीं: मेरी ग्यारहवीं पुस्तक है 'बीजक।' बीजक में कबीर के गीतों का संग्रह है। बीजक का अर्थ है 'बीज'–और निश्चित ही बीज सूक्ष्म है, बहुत सूक्ष्म, अदृश्य। जब तक कि वह अंकुरित होकर वृक्ष न बन जाए वह दिखाई नहीं पड़ता है।

बीच में हस्तक्षेप मत करो। सवाल यह है–क्या तुम इस कार्य को जारी रखना चाहते हो? मुझसे कभी मत पूछो, अपने आप से पूछो। यदि तुम जारी रखना नहीं चाहते हो, तो बस मुझे बता दो, कि बस बहुत हुआ। असल में दो घोड़ों पर सवारी करना बहुत मुश्किल है, और यही मैं कर रहा हूं। और तो और एक घोड़ी है और एक बिगड़ैल घोड़ा है। अब क्या किया जाए–दो अलग-अलग दिशाएं...

बारहवीं: इस परिस्थिति के कारण मैं हर्बर्ट मारक्यूस की पुस्तक 'वन डाइमेन्शनल मैन'–'एक आयामी मनुष्य' चुन रहा हूं। मैं उसके विरोध में हूं, लेकिन उसने एक सुंदर पुस्तक लिखी है। मैं उसके विरोध में हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि एक आदमी केवल तभी आनंदित हो सकता है जब वह बहुआयामी हो, जब वह सभी संभव आयामों में फैला हुआ हो, एक आयाम में सिकुड़ा हुआ नहीं। 'वन डाइमेन्शनल मैन' आधुनिक मनुष्य की कहानी है; यह मेरा बारहवां चुनाव है।

तेरहवीं पुस्तक है: चीन की रहस्यमय पुस्तक 'आइ चिंग।'

चौदहवीं, और अंतिम। यह पुस्तक एक हिंदी उपन्यास है जिसका अभी तक अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है। अजीब बात है मुझ जैसे आदमी के द्वारा इसका उल्लेख किया जा रहा है, लेकिन यह उल्लेख के लायक है। हिंदी शीर्षक है 'नदी के द्वीप,' जिसका कि अनुवाद होगा 'आइलैंड्स ऑफ ए रिवर,' और यह सच्चिदानंद वात्स्यायन द्वारा लिखा गया था। यह उपन्यास उन लोगों के लिए है जो ध्यान करना चाहते हैं; यह ध्यानियों का उपन्यास है। इस उपन्यास की तुलना किसी अन्य से नहीं कर सकते हैं–न टाल्सटाय और न चेखव से। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसे हिंदी में लिखा गया है।

थोड़ी प्रतीक्षा करो। यह इतना सुंदर है कि कुछ भी कहने के बजाय मैं इसका आनंद लेना चाहता हूं। इस ऊंचाई पर बात करना कितना मुश्किल है। कृपया कोई रुकावट मत डालो...

आज इतना ही

सत्र-14

मुझे पता चला है, देवगीत, सुबह तुम बहक कर आपे से बाहर हो गए थे। कभी-कभी बहक जाना एक अच्छा व्यायाम है, लेकिन आपे से बाहर होने का मैं समर्थन नहीं करता हूं। यह एक सामान्य बात है–जिसे गार्डन वैरायटी भी कह सकते हैं। बहको भीतर की ओर! यदि तुम्हें बहकना ही है, तो आपे से बाहर क्यों? स्वयं के भीतर क्यों नहीं? यदि तुम भीतर की ओर बहक जाओ तो ओशो दीवाने बन जाओ, और यह मूल्यवान है। तुम ओशो दीवाना होने के मार्ग पर हो, लेकिन तुम बहुत सावधानीपूर्वक चल रहे हो; कहना चाहिए वैज्ञानिक ढंग से, तर्कसंगत उपाय से।

मैं तुम्हें नोट्स भी नहीं लिखने देता हूं, बीच में ही बोल पड़ता हूं। क्षमा मांगने के बजाय मैं तुम पर चिल्लाता हूं, और जब तुम बीच में बोल भी नहीं रहे होते हो, तब भी मैं कहता हूं, "बीच में मत बोलो, देवगीत!" मैं जानता हूं कि इससे कोई भी बहक सकता है। लेकिन तुम तो जानते ही हो कि मैं एक पागल आदमी हूं, और जब तुम एक पागल आदमी के साथ काम कर रहे हो तो तुम्हें वास्तव में उदार होना चाहिए–मात्र विनम्र ही नहीं, बल्कि सचमुच में ही प्रेमपूर्ण।

जब तुम बीच में नहीं बोल रहे होते हो, और मैं कहता हूं, "बीच में मत बोलो!" तो अवश्य ही मेरा कोई अभिप्राय होगा। तुम्हारे मन में अवश्य ही कोई विचार आया होगा। शायद तुम्हें स्वयं भी अपने बीच में बोलने के विचार के बारे में पता नहीं होगा। बीच में हस्तक्षेप करना कितना सुखदायी होता है। और निश्चित ही, तुम यहां पर मालिक हो। कम से कम इस कैबिन में तुम नूह हो। मैं तो बस एक यात्री हूं और वह भी बिना टिकट। लेकिन मैं तुम्हारे अचेतन में भी झांक सकता हूं, और जब मैं कहता हूं, "बीच में मत बोलो," तो निश्चित ही यह अपमानजनक लगता है। किसी ने भी तुम्हें मेरे काम में बाधा डालते नहीं सुना है, खुद तुमने भी नहीं–लेकिन मैंने इसे सुना है। मैंने तुम्हारे अचेतन में होने वाली फुसफुसाहट सुनी है।

आज मुझे एक से एक विचार सूझ रहे हैं; वरना मैं एक गरीब आदमी हूं, मेरे पास बड़े विचार नहीं हैं। कृपया बाहर की ओर मत बहक जाना। संक्षेप में कहूं, सदा बहकने का उपयोग भीतर की यात्रा के लिए करो।

पोस्ट-पोस्टस्क्रिप्ट जारी है; यह सिर्फ एक पूर्वकथन था।

आज की पहली पुस्तक है लिन युतांग की 'दि आर्ट ऑफ लिविंग'–'जीने की कला।' यह एक चीनी नाम है। मुझे अपनी पुस्तकों में से एक पुस्तक 'दि आर्ट ऑफ डाइंग' की याद आ रही है। लिन युतांग को जीवन के बारे में कुछ नहीं मालूम है, क्योंकि उसे मृत्यु के बारे में कुछ नहीं मालूम है। हालांकि वह एक चीनी है, वह एक बिगड़ा हुआ चीनी है, एक क्रिश्चियन। इसी को तो भ्रष्ट हो जाना कहते हैं। भ्रष्ट हो जाना तुमको एक ईसाई बना देता है। भ्रष्ट होना तुम्हें बिगाड़ देता है, और तुम एक ईसाई बन जाते हो।

लिन युतांग ने अपनी पुस्तक 'दि आर्ट ऑफ लिविंग' में बहुत सी बातों के बारे में सुंदरतापूर्वक लिखा है–बस मृत्यु को छोड़ कर। इसका अर्थ है कि जीवन को शामिल नहीं किया गया है। जीवन केवल तभी घटित हो सकता है जब तुम मृत्यु को स्वीकार करते हो, उसके बिना नहीं। वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि तुम एक पक्ष को स्वीकार करो और दूसरे पक्ष को अस्वीकार। लेकिन उसने सुंदरतापूर्वक लिखा है, कलात्मक ढंग से–वह निश्चित ही आधुनिक युग के महानतम लेखकों में से एक है–लेकिन जो कुछ भी उसने

लिखा है वह सिर्फ कोरी कल्पना मात्र है, शुद्ध, शुद्ध कल्पना... बस सुंदर चीजों के बारे में सपना देख रहा है। कभी-कभी सपने सुंदर हो सकते हैं। सभी सपने बुरे सपने नहीं होते हैं।

'दि आर्ट ऑफ लिविंग' का जीवन से कुछ लेना-देना नहीं है और न ही कला से कुछ लेना-देना है, लेकिन फिर भी यह एक बहुत अच्छी पुस्तक है। बहुत अच्छी इस अर्थ में कि तुम इसमें खो सकते हो। तुम इसमें ऐसे खो सकते हो, जैसे कोई घने जंगल में खो जाए: आसमान में चमकते हुए तारे, चारों ओर वृक्ष ही वृक्ष, कोई पगडंडी नहीं, कोई मार्ग नहीं, कहीं जाना नहीं। यह तुम्हें कहीं ले नहीं जाती है। फिर भी यह बहुत अच्छी पुस्तकों में से एक है। क्यों?–क्योंकि पढ़ते समय तुम भूत और भविष्य को भूल जाते हो और वर्तमान के हिस्से हो जाते हो।

मुझे नहीं मालूम कि लिन युतांग को ध्यान के बारे में कभी भी कुछ पता था। दुर्भाग्य से वह एक ईसाई था; इसलिए वह न कभी किसी ताओ मठ में और न ही बौद्ध मंदिर में गया। काश, उसे पता होता कि वह क्या चूक रहा है। इसके बजाय वह बस 'बाइबिल' पढ़ता रहा था, जो दुनिया की सबसे घटिया पुस्तकों में से एक है–सिवाय दो छोटे अंशों को छोड़ कर: 'दि ओल्ड टेस्टामेंट' का 'दि सांग्स ऑफ सोलोमन;' और 'दि न्यू टेस्टामेंट' का 'दि सरमन ऑन दि माउंटेन।' अगर इन दोनों अंशों को निकाल दिया जाए तो बाइबिल सिर्फ कचरा है। काश, वह कुछ जान लेता बुद्ध, च्वांग्त्सु, नागार्जुन, कबीर, अल-हिल्लाज मंसूर के बारे में... इन दीवानों के बारे में कुछ भी जान लेता; तभी उसकी पुस्तक प्रामाणिक हो सकती थी। यह कलात्मक है, लेकिन प्रामाणिक नहीं है। इसमें वास्तविकता नहीं है।

दूसरी–लिन युतांग की दूसरी पुस्तक 'दि व्रिजडम ऑफ चाइना।' लिन युतांग के पास लिखने की कला है इसलिए वह कुछ भी लिख सकता है, यहां तक कि 'दि व्रिजडम ऑफ चाइना' भी, हालांकि वह लाओत्सु के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, वह लाओत्सु जिसके भीतर न केवल चीन की बल्कि पूरे विश्व की प्रज्ञा समाई हुई है। लिन युतांग ने जरूर लाओत्सु के कुछ वाक्यों को शामिल तो किया है, लेकिन वे वही वाक्य हैं जो उसकी ईसाई मनोदशा के साथ मेल खाते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वे वाक्य लाओत्सु के हैं ही नहीं। उसने च्वांग्त्सु के वचनों को शामिल किया है, लेकिन स्वाभाविक है कि उसका चुनाव बहुत तर्कसंगत होगा, और च्वांग्त्सु तर्कसंगत आदमी नहीं हैं; च्वांग्त्सु से ज्यादा अतार्किक व्यक्ति आज तक कभी नहीं हुआ।

च्वांग्त्सु मेरे सबसे प्रिय व्यक्तियों में से एक हैं, और जब तुम अपने किसी प्रिय के बारे में बात कर रहे होते हो तो अवश्य ही अति, अतिशयोक्ति कर देते हो, लेकिन मेरे लिए वे ऐसे नहीं प्रतीत होते। च्वांग्त्सु द्वारा लिखी गई किसी भी बोधकथा के लिए मैं उन्हें पूरी दुनिया का राज्य दे सकता हूं–और उन्होंने सैकड़ों बोधकथाएं लिखी हैं। उनकी हर बोधकथा सरमन ऑन दि माउंटेन, दि सांग ऑफ सोलोमन, भगवद्गीता है। प्रत्येक बोधकथा इतना संदेश देती है, और इतने बड़े पैमाने पर देती है कि उसको नापा नहीं जा सकता।

लिन युतांग च्वांग्त्सु का उल्लेख करता है, लेकिन वह एक ईसाई की तरह उल्लेख करता है, उस व्यक्ति की तरह नहीं जो समझता है। लेकिन वह निश्चित रूप से एक अच्छा लेखक है, और 'दि व्रिजडम ऑफ चाइना' उन थोड़ी सी पुस्तकों के साथ रखी जानी चाहिए जो पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है, जैसे बर्ट्रेंड रसल की 'हिस्ट्री ऑफ वेस्टर्न फिलॉसफी,' या मूरहेड और राधाकृष्णन की 'माइंड ऑफ इंडिया।' यह इतिहास है, रहस्यवाद नहीं, लेकिन सुंदर ढंग से लिखी गई है, सही तरीके से लिखी गई है, व्याकरण और सब।

वह न केवल एक ईसाई है बल्कि उसकी शिक्षा-दीक्षा भी एक कॉनवेंट स्कूल में हुई है। अब, तुम क्या सोच सकते हो कि किसी बच्चे के साथ होने वाली दुर्घटना में कॉनवेंट स्कूल के अलावा और बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? इसलिए ईसाइयों के अनुसार लिन युतांग हर ढंग से ठीक है, और इस पागल आदमी के अनुसार जो

उसके बारे में बोल रहा है हर प्रकार से गलत है। लेकिन फिर भी मैं उसे पसंद करता हूं। वह प्रतिभाशाली है। मैं नहीं कह सकता कि वह कोई अपूर्व बुद्धि का मनुष्य है, मुझे क्षमा करना, लेकिन वह प्रतिभाशाली है, बहुत प्रतिभाशाली है। इससे अधिक मत पूछो। वह अपूर्व बुद्धि का मनुष्य नहीं है, और मैं विनम्र नहीं हो सकता, मैं बस सच्चा हो सकता हूं। मैं पूरी तरह सच्चा हो सकता हूं।

तीसरी: मैं इस पुस्तक से बचना चाहता था, लेकिन ऐसा लगता है बच नहीं सकता। यह बार-बार अपनी नाक भीतर घुसाती है। निस्संदेह यह एक यहूदी पुस्तक है; वरना इसकी नाक इतनी लंबी कैसे हो सकती है? 'दि तालमुद।'

क्यों मैं इससे बचना चाहता था? अगर मैं यहूदियों के खिलाफ कुछ भी कहता हूं–जैसा कि मैंने हमेशा किया है और आगे भी करता रहूंगा... लेकिन इस क्षण मैं यहूदियों के खिलाफ कुछ भी नहीं कहना चाहता हूं; सिर्फ इस क्षण के लिए, ऐसे ही जैसे कि कोई छुट्टी पर है। यही कारण है कि मैं इस पुस्तक से बचना चाहता था।

इसमें केवल एक ही सुंदर वचन है, बस इतना ही, इसलिए मैं इसका उल्लेख कर रहा हूं। यह कहता है: ईश्वर भयानक है। वह तुम्हारा चाचा नहीं है, वह भला नहीं है। केवल यही वचन: 'ईश्वर भला नहीं है, और तुम्हारा चाचा नहीं है–यही मुझे पसंद है। यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। वरना पूरी किताब बकवास है। यह बिलकुल आदिम युग की है, फेंकने के काबिल। जब तुम इसे फेंको तो बस इस एक वचन को बचा लेना। अपने शयनकक्ष में लिख लो: ईश्वर तुम्हारा चाचा नहीं है, वह भला नहीं है–याद रखना! जब तुम अपनी पत्नी या अपने पति, या बच्चे, या नौकर–या अपने ही प्रति कुछ बेहूदगी करोगे तो यह वचन तुम्हें होश में ला देगा।

चौथी: मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जो जैन धर्म के एक छोटे से समुदाय के अंतर्गत आता है। यह समुदाय एक दीवाने का अनुयायी है, जो मुझसे थोड़ा कम दीवाना रहा होगा। मैं नहीं कह सकता मुझसे ज्यादा दीवाना!

मैं उनकी दो पुस्तकों के बारे में चर्चा करने जा रहा हूं, जिनका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है, हिंदी में भी नहीं हुआ है, क्योंकि उनका अनुवाद हो ही नहीं सकता। मैं नहीं समझता कि उनको कभी भी अंतर्राष्ट्रीय श्रोता मिल सकेंगे–असंभव है। उन्हें किसी भी भाषा, व्याकरण में विश्वास नहीं है, किसी में भी नहीं। वे एकदम दीवाने आदमी की भांति बोलते हैं। आज की चौथी पुस्तक है: 'शून्य स्वभाव'–'दि नेचर ऑफ एंप्टीनेस।'

इसमें केवल कुछ ही पेज हैं, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण। एक-एक वाक्य में शास्त्र समाहित हैं, लेकिन समझना बहुत मुश्किल है। स्वभावतः तुम पूछोगे कि मैं उन्हें कैसे समझ सका। जैसे मार्टिन बूबर का जन्म हसीद परिवार में हुआ था, वैसे ही मैं भी इस दीवाने आदमी की परंपरा में पैदा हुआ। उनका नाम है, तारण तरण। यह उनका यथार्थ नाम नहीं है, लेकिन किसी को भी उनका असली नाम ज्ञात नहीं है। 'तारण तरण' का सीधा अर्थ है 'तारणहार।' और यही उनका नाम हो गया।

मैंने अपने बचपन से ही उन्हें अपनी श्वास-श्वास में बसा लिया, उनके गीतों को सुनता, और जानने को उत्सुक होता कि उनका अर्थ क्या है। लेकिन एक बच्चे को अर्थ की कोई फिकर नहीं होती। गीत सुंदर थे, लय सुंदर थी, नृत्य सुंदर था, और यह काफी है। यदि कोई प्रौढ़ हो गया है तो ही उसे ऐसे लोगों को समझने की जरूरत पड़ती है; अन्यथा, अगर वे लोग जो बचपन से ही ऐसे वातावरण से घिरे रहे हैं, तो उन्हें समझने की जरूरत नहीं पड़ती है और फिर भी अपने चित्त की गहराई में वे समझ लेंगे।

मैं तारण तरण को समझता हूं–बौद्धिक रूप से नहीं, बिल्क अस्तित्वगत रूप से। और साथ ही साथ मैं यह भी जानता हूं कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। और भले ही अगर उनके अनुयायियों के परिवार में मेरा जन्म न भी हुआ होता तो भी मैं उन्हें समझ लेता। मैंने कितनी ही विभिन्न परंपराओं को समझा है–और ऐसा नहीं है कि उन सभी में मेरा जन्म हुआ है। मैंने इतने सारे दीवानों को समझा है कि कोई भी सिर्फ उन्हें समझने के प्रयास में ही पागल हो सकता है! लेकिन मेरी ओर देखो: उन्होंने मुझे बिलकुल प्रभावित नहीं किया। वे कहीं न कहीं मुझसे निचले तल पर ठहर गए हैं। मैं उन सभी के पार चला गया हूं।

फिर भी मैं तारण तरण को समझा होता। हो सकता है मैं उनके संपर्क में न आ पाया होता, यह असंभव सा है, क्योंकि उनके अनुयायी बहुत कम हैं, बस कुछ हजार, और केवल मध्य भारत में ही पाए जाते हैं। और अल्पसंख्यक होने के कारण वे इतना डरते हैं कि वे अपने आप को तारण तरण का अनुयायी भी नहीं बताते, वे अपने को जैन कहते हैं। वे लोग गोपनीय ढंग से अपने संप्रदाय के संस्थापक तारण तरण पर श्रद्धा रखते हैं, महावीर पर नहीं, जैसा कि अन्य जैन लोग महावीर पर रखते हैं।

जैन धर्म खुद ही एक छोटा सा धर्म है; इसको मानने वाले केवल तीस लाख लोग हैं। जैन धर्म के दो मुख्य संप्रदाय हैं: दिगंबर और श्वेतांबर। दिगंबर मानते हैं कि महावीर नग्न जीए, और नग्न ही रहे–'दिगंबर' शब्द का अर्थ होता है: 'आकाश को ही जिसने अपना वस्त्र बना लिया'; प्रतीकात्मक रूप से इसका अर्थ है 'नग्न।' यह सबसे पुराना संप्रदाय है।

'श्वेतांबर' शब्द का अर्थ होता है: 'सफेद वस्त्र पहनने वाले,' और इस संप्रदाय के अनुयायियों का मानना है कि हालांकि महावीर नग्न थे पर देवताओं द्वारा उन्हें अदृश्य सफेद वस्त्रों से ढंक दिया था जो किसी को दिखाई नहीं पड़ते थे। हिंदुओं को संतुष्ट करने के लिए बस यह एक समझौता है।

तारण तरण के अनुयायी दिगंबर संप्रदाय के हैं, और वे जैनों में सबसे अधिक क्रांतिकारी लोग हैं। वे महावीर की मूर्तियों की पूजा तक भी नहीं करते हैं; उनके मंदिर खाली हैं, वे भीतरी शून्यता के प्रतीक हैं। संयोगवश अगर मेरा जन्म ऐसे परिवार में नहीं होता जो कि तारण तरण में श्रद्धा रखता है तो मेरे लिए तारण तरण को जानना करीब-करीब असंभव होता। लेकिन मैं परमात्मा को धन्यवाद देता हूं कि ऐसे परिवार में जन्म लेने पर जो परेशानी मुझे हुई वह मूल्यवान सिद्ध हुई। सिर्फ इस एक बात के लिए कि उन्होंने मुझे एक अदभुत रहस्यदर्शी से परिचित कराया, उन सभी परेशानियों को भुलाया जा सकता है।

उनकी पुस्तक 'शून्य स्वभाव' में वे किसी दीवाने की तरह एक ही बात को बार-बार कहते हैं। तुम मुझे जानते हो, समझ सकते हो कि पच्चीस वर्षों से मैं भी बार-बार वही बात कहता आ रहा हूं। मैंने बार-बार कहा है: जागो! उन्होंने भी 'शून्य स्वभाव' यही कहा है।

पांचवीं: तारण तरण की दूसरी पुस्तक, 'सिद्धि स्वभाव'–'दि नेचर ऑफ अल्टीमेट रियलाइजेशन,' बहुत सुंदर शीर्षक है। वे एक ही बात को बार-बार कहते हैं: शून्य हो जाओ! लेकिन वे बेचारे क्या कर सकते हैं? और कोई भी इसके अलावा कुछ नहीं कह सकता। ''जागो, होश में आओ...''

अंग्रेजी शब्द 'बीवेयर' दो शब्दों से बना है: बी वेयर–इसलिए 'बीवेयर' 'सावधान' शब्द से भयभीत मत होना, बस अवेयर हो जाओ, होशपूर्ण हो जाओ, और जिस क्षण तुम होशपूर्ण होते हो, तुम अपने घर आ गए।

तारण तरण की अनेक पुस्तकें हैं, लेकिन इन दोनों पुस्तकों में उनका सारा संदेश समाहित है। एक बताती है कि तुम कौन हो–शुद्ध शून्यता; दूसरी, कि तुम उस तक कैसे पहुंच सकते हो; जागरूक होकर। लेकिन वे बहुत छोटी पुस्तकें हैं, मात्र कुछ ही पन्नों की।

छठवीं...मैं हमेशा ही इस पुस्तक के बारे में बात करना चाहता था, लेकिन मुझे डर था कि कहीं समय के अभाव में यह छूट न जाए। मैं योजना नहीं बनाता, मैं सदा की भांति बिना योजना के ही काम करता हूं। मैंने सोचा था कि केवल पचास पुस्तकों के बारे में बात करूंगा, लेकिन फिर पोस्टस्क्रिप्ट आया और वह चलता रहा, चलता रहा। फिर पचास और पुस्तकें पूरी हो गईं, लेकिन अभी भी इतनी सुंदर पुस्तकें शेष थीं कि मुझे बोलना जारी रखना पड़ा और पोस्ट पोस्टस्क्रिप्ट शुरू करना पड़ा। इसलिए अब मैं इस पुस्तक पर चर्चा कर सकता हूं। यह है दोस्तोवस्की की 'नोट्स फ्रॉम दि अंडरग्राउंड।'

यह एक बहुत ही असाधारण पुस्तक है, वैसी ही असाधारण जैसा कि वह व्यक्ति था। सिर्फ नोट्स हैं–जैसे कि देवगीत के नोट्स हैं: टुकड़े-टुकड़े, सतह पर एक-दूसरे से अलग-अलग, लेकिन दरअसल एक जीवंत अंतर्धारा के साथ भीतर से जुड़े हुए। इस पर ध्यान किया जाना चाहिए। मैं इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकता। यह सबसे अधिक उपेक्षित श्रेष्ठ कलाकृतियों में से एक है। ऐसा लगता है कि इस पर कोई भी ध्यान नहीं देता, इसका सीधा सा कारण है कि यह कोई उपन्यास नहीं है, सिर्फ नोट्स हैं, और ऐसे नोट्स कि गैर-ध्यानियों को लगेगा कि इनका आपस में कोई संबंध नहीं है। लेकिन मेरे संन्यासियों के लिए यह पुस्तक बहुत महत्व की हो सकती है; वे इसमें छिपे हुए खजाने को खोज सकते हैं।

फुसफुसाते रहो... मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूं। सच पूछो तो मुझे यह भी नहीं कहना चाहिए था। यह भी एक तरह का हस्तक्षेप है। मुझे और अधिक जागरूक रहना चाहिए। लेकिन जितना जागरूक मैं हूं उससे और अधिक जागरूक होना बहुत मुश्किल है। इससे अधिक जागरूकता बिलकुल है ही नहीं, इसलिए मैं क्या कर सकता हूं? ज्यादा से ज्यादा मैं इसे अनदेखा कर सकता हूं। मैंने तुम्हारी हंसने की आवाज भी सुन ली है...लेकिन कृपया बहक कर आपे से बाहर मत हो जाना, बहकना भीतर की ओर।

सातवीं: एक पुस्तक कहीं से मेरे खयालों में उतर रही है। मैं इसके बारे में बिलकुल चर्चा नहीं करने वाला था, लेकिन यह वहां है। डरो मत, और बाद में बहक कर आपे से बाहर मत होना। यह पुस्तक लुडविग विटगिंस्टीन द्वारा लिखी गई है–दरअसल इसे पुस्तक की तरह नहीं लिखा गया है, बल्कि नोट्स की तरह लिखा गया है। 'फिलॉसफिकल इनवेस्टीगेशंस' के नाम से इसे उसके मरणोपरांत प्रकाशित किया गया था। वास्तव में, यह मनुष्य की सभी समस्याओं का एक गहरा मार्मिक अध्ययन है। निस्संदेह, स्त्री इसमें शामिल है; वरना आदमी को अपनी गहरी समस्याएं मिलेंगी कहां से? उसकी असली समस्या स्त्री है। कहा जाता है कि सुकरात ने कहा है: यदि तुम्हारा विवाह ऐसी स्त्री से हो जाए जो सुंदर भी हो और समझदार भी–जो कि दुर्लभ है–तो तुम सौभाग्यशाली हो।

लुडविग विटगिंस्टीन की पुस्तक 'फिलॉसफिकल इनवेस्टीगेशंस' मुझे प्रिय है–उसकी स्पष्टता, पारदर्शिता, उसकी निर्दोष बुद्धिमत्ता। यह मुझे पूरी तरह से प्रीतिकर रही है, और मैं चाहता हूं कि जो भी मार्ग पर हैं वे सब इसके अनुभव से गुजरें...लेकिन उस तरह से नहीं जिस तरह से थेरेपी ग्रुप में लोग 'गुजरते हैं'–पीड़ा में नहीं। क्योंकि कई संन्यासी सोचते हैं कि पीड़ा से गुजरना आवश्यक है; ऐसा नहीं है, यह तुम्हारा चुनाव है। तुम सुखपूर्वक भी गुजर सकते हो, आनंदपूर्वक भी...यह तुम पर निर्भर है।

तो ''इसके अनुभव से गुजरें'' से मेरा अर्थ वही नहीं है जो तथाकथित मानवतावादी थेरेपिस्टों का अर्थ है। जब मैं कहता हूं ''इसके अनुभव से गुजरो'' तो इसका अर्थ है नृत्य करते हुए गुजरो, प्रेमपूर्वक गुजरो। मैं शाब्दिक रूप से सही हो सकता हूं, लेकिन व्याकरण की दृष्टि से गलत भी हो सकता हूं। और निश्चित ही मैं गलत हूं,

क्योंकि मैं तुम्हारी हंसने की आवाज सुन सकता हूं। मुझे खेद है, देवगीत, क्योंकि मुझे अभी भी सुनाई पड़ रहा है ... लेकिन यह मेरी ओर से एक हस्तक्षेप है–और मैं नहीं चाहता कि कोई बहक कर आपे से बाहर हो जाए, विशेषकर वे लोग जो मेरे इतने करीब हैं, और वे लोग जो नहीं जानते कि आज मैं यहां हूं, कल मैं नहीं भी हो सकता हूं।

देवगीत, एक दिन यह कुर्सी खाली होगी और तुम रोओगे और आंसू बहाओगे कि तुम बहक जाते थे। और मैं किसी भी क्षण रुक सकता हूं; और फिर तुम पछताओगे। तुम्हें पहले से ही यह बात पता है, लेकिन तुम भूल गए हो। सात वर्ष से मैं लगातार बोलता रहा हूं, लेकिन एक दिन–तुम इस बात के साक्षी हो–मैं अचानक रुक सकता हूं। मैं किसी भी क्षण रुक सकता हूं, शायद कल या परसों। इसलिए परेशान बिलकुल मत होओ, और मैं जो भी करूं, अगर मैं तुम्हें उकसाऊं या परेशान भी करूं, तो वह तुम्हारे भले के लिए है, क्योंकि इससे मुझे कुछ हासिल नहीं होने वाला है। पूरी दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे मुझे हासिल करना हो। मैंने पहले ही वह पा लिया है जिसे पाने के लिए मनुष्य कामना करता है और जिसके लिए हजारों जीवन जीता है।

आठवीं: आठवीं पुस्तक है... मैं तुम्हारी सिसकियां सुन रहा हूं, देवगीत, कभी-कभार के लिए यह अच्छा है। और अपने सदगुरु के साथ रोना... मेरी आंखें आंसुओं से भरी हुई हैं, और तुम सुबक रहे हो। कुछ आंतरिक सत्संग घटित हो रहा है। इसलिए आठवीं पुस्तक के लिए मैंने असागोली की 'साइकोसिंथेसिस'–'मनोसंश्लेषण' को चुना है।

सिंग्मड फ्रायड ने साइकोएनालिसिस, मनोविश्लेषण को स्थापित करने में महान कार्य किया है, लेकिन यह मात्र आधा ही है। बाकी आधा असागोली द्वारा किया गया 'साइकोसिंथेसिस' है–लेकिन यह भी आधा है, दूसरा आधा भाग। मेरा कार्य संपूर्ण है: साइकोथीसिस, मन के पार।

साइकोएनालिसिस और साइकोसिंथेसिस, दोनों विज्ञान अध्ययन करने योग्य हैं। 'साइकोसिंथेसिस' बहुत कम ही पढ़ा जाता है, क्योंकि असागोली का व्यक्तित्व फ्रायड जैसा प्रभावशाली नहीं है; वह उन ऊंचाइयों तक नहीं पहुंच पाया। लेकिन मेरे सभी संन्यासियों को 'साइकोसिंथेसिस' पढ़ लेना चाहिए। ऐसा नहीं है कि असागोली सही है और फ्रायड गलत है; दोनों को अलग-अलग समझने में गलती हो जाएगी। वे सही तभी हैं जब वे दोनों एक साथ हैं। और मेरा कुल काम यही है: जिग्सा पजल, चित्र पहेली के सभी टुकड़ों को एक साथ जमा दूं।

नौवीं... मैंने हमेशा खलील जिब्रान की प्रशंसा की है; इससे पहले कि मैं उसकी आलोचना करूं, एक बार और मैं उसकी प्रशंसा करना चाहता हूं। घबड़ाओ नहीं, मैं बस यूं ही हलके ढंग से आलोचना नहीं कह रहा हूं, बल्कि सचमुच में कह रहा हूं। नौवीं है: खलील जिब्रान की पुस्तक 'प्रोज पोएम्स'–'गद्य कविताएं'–सुंदर है। आधुनिक दुनिया में रवींद्रनाथ टैगोर को छोड़ कर कोई भी इस तरह के गद्य गीत नहीं लिख सकता है।

यह आश्चर्य की बात है कि ये दोनों कवि अंग्रेजी भाषा के हिसाब से विदेशी हैं। शायद यही कारण है कि वे इतनी सुंदर काव्यात्मक भाषा लिख सकते हैं। दोनों अलग-अगल भाषाओं के व्यक्ति हैं: खलील जिब्रान अरबी भाषी हैं, जो अत्यधिक काव्यात्मक है, शुद्ध काव्य; और रवींद्रनाथ बंगाली भाषी हैं, जो अरबी से भी अधिक काव्यात्मक है। असल में, अगर तुम दो बंगालियों को लड़ते हुए देखोगे तो तुम हैरान हो जाओगे, क्योंकि तुम्हें लगेगा कि वे आपस में प्रेम की बातें कर रहे हैं। तुम सोच नहीं सकते कि वे लड़ रहे हैं। झगड़ा करते समय भी बंगाली भाषा काव्यात्मक होती है।

यह बात मैं अपने अनुभव से जानता हूं। मैं बंगाल में था और मैंने लोगों को लड़ते देखा है–शुद्ध काव्य! मैं आश्चर्यचकित था। जब मैं महाराष्ट्र आया तो देखा कि लोग सिर्फ बातचीत कर रहे हैं, गपशप कर रहे हैं, और मैं परेशान हो गया: वे लड़ रहे हैं? क्या पुलिस को सूचित किया जाना चाहिए? मराठी इस तरह की भाषा है कि इसमें तुम मीठा बोल ही नहीं सकते। यह कठोर है, कर्कश है। यह एक झगड़े वाली भाषा है।

यह आश्चर्यजनक बात है कि अंग्रेजों ने खलील जिब्रान और रवींद्रनाथ दोनों की प्रशंसा की है, लेकिन उनसे सीखा कुछ भी नहीं। उन्होंने उनकी सफलता का राज नहीं सीखा। उनकी सफलता का राज क्या है? उनकी सफलता का राज है: उनकी 'काव्यात्मकता।'

दसवीं: यह खलील जिब्रान की वह पुस्तक है जिसकी मैं कभी सार्वजनिक रूप से निंदा नहीं करना चाहता था, क्योंकि मैं इस आदमी को प्रेम करता हूं। लेकिन मुझे यह करना ही पड़ेगा, जिससे यह रिकॉर्ड में रहे कि यदि उसके शब्द सत्य नहीं प्रकट करते हैं, तो मैं जिसे प्रेम करता हूं उसकी भी निंदा कर सकता हूं।

पुस्तक है 'थाट्स एंड मेडिटेशंस'–'विचार और ध्यान।' अब, मैं इसके साथ सहमत नहीं हो सकता, और इसी से मुझे पता चला है कि

खलील जिब्रान कभी नहीं जान पाया कि ध्यान क्या है? इस पुस्तक में 'मेडिटेशंस' और कुछ नहीं बल्कि 'मनन' ही है; केवल तभी तो वे विचारों के साथ चल सकते हैं। आशु, तुम्हें विचारों के साथ नहीं जाना है, तुम्हें ध्यान में जाना है–मेरे साथ, खलील जिब्रान के साथ नहीं। इसलिए ऊपर उठो। यदि तुम ध्यान को उपलब्ध नहीं होते हो तो शीघ्र ही मुझे इस तरह बोलना बंद करना पड़ेगा। मैं अपनी पार से भी पार दशा को हर तरह से समर्थन देना चाहता हूं। किसी बुद्धपुरुष ने पहले ऐसा नहीं किया है। मैं एक नई शुरुआत होना चाहता हूं।

मैं इस दसवीं पुस्तक के विरोध में हूं, क्योंकि मैं विचार के विरोध में हूं। मैं इसलिए भी इसके विरोध में हूं, क्योंकि खलील जिब्रान ने 'ध्यान' शब्द का उपयोग पाश्चात्य अर्थों में किया है। पश्चिम में ध्यान का सीधा अर्थ है किसी भी बात पर एकाग्रतापूर्वक विचार करना। यह ध्यान नहीं है। पूरब में ध्यान का अर्थ है विचार का न होना। 'इस या उस विषय से' कुछ लेना-देना नहीं है, यह नॉन-ऑब्जेक्टिव है, यह विषयगत नहीं है। इसमें कोई विषय-वस्तु नहीं है, केवल प्योर सब्जेक्टिविटी है, शुद्ध स्व-सत्ता है।

सोरेन कीर्कगार्ड ने कहा है: मनुष्य का अंतर्तम सारतत्व शुद्ध स्व-सत्ता है। यही ध्यान है।

आज इतना ही

सत्र-15

ओ. के.। आज की इस पोस्टस्क्रिप्ट में जिस पहली पुस्तक के बारे में मैं चर्चा करने जा रहा हूं, उसके बारे में किसी ने सोचा भी नहीं होगाकि मैं उसकी चर्चा करूंगा। वह है महात्मा गांधी की आत्मकथा: 'माइ एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ'–सत्य के साथ मेरे प्रयोग।' सत्य के उनके प्रयोगों के बारे में चर्चा करना सच में अदभुत है। यह सही समय है।

आशु, तुम अपना काम जारी रखो; वरना मैं महात्मा गांधी की निंदा करना शुरू कर दूंगा। काम जारी रखो ताकि मैं इस बेचारे के प्रति नरम रह सकूं। अब तक तो मैं कभी भी नरम नहीं रहा। महात्मा गांधी के प्रति थोड़ा नरम रहने में शायद तुम मेरी मदद कर सको। हालांकि मुझे पता है कि यह लगभग असंभव है।

लेकिन मैं निश्चित रूप से कुछ सुंदर बातें कह सकता हूं। एक: किसी ने भी अपनी आत्मकथा इतनी प्रामाणिकता के साथ, इतनी ईमानदारी के साथ नहीं लिखी है। यह अब तक कि लिखी गई सबसे अधिक प्रामाणिक आत्मकथाओं में से एक है।

आत्मकथा एक बहुत ही अजीब मामला है: तुम खुद के ही बारे में लिख रहे हो। या तो तुम डींग हांकने लगते हो या बहुत ही विनम्रता दिखाते हो–जो डींग हांकने का ही दूसरा रूप है। इसकी चर्चा मैं अपनी दूसरी पुस्तक में करूंगा। लेकिन महात्मा गांधी इन दोनोंमें से नहीं हैं; वे सरल हैं, केवल तथ्यगत बोलते हैं, बिलकुल एक वैज्ञानिक की तरह... थोड़ा भी यह सोचे बिना कि यह अपनी ही आत्मकथा है। वे वह सब-कुछ कह देते हैं जिसे कोई भी दूसरों से छिपाना चाहेगा। लेकिन शीर्षक बिलकुल ही गलत है। सत्य के साथ प्रयोग नहीं किए जा सकते। सत्य या तो जाना जा सकता है या नहीं जाना जा सकता है, लेकिन सत्य के साथ प्रयोग नहीं किए जा सकते हैं।

यह शब्द 'प्रयोग' ऑब्जेक्टिव साइंस, वस्तुगत विज्ञान की दुनिया के अंतर्गत आता है। कोई भी सब्जेक्टिविटी, स्व-सत्ता के साथ प्रयोग नहीं कर सकता, और यही सच है। ध्यान रहे:

"सब्जेक्टिविटी, स्व-सत्ता को प्रयोग एवं निरीक्षण के लिए वस्तु के तल पर नीचे नहीं लाया जा सकता है।'

सब्जेक्टिविटी, स्व-सत्ता अस्तित्व में सबसे रहस्यमय घटना है, और इसका रहस्य यह है कि यह सदा पीछे हटता चला जाता है। जिसका भी तुम निरीक्षण कर सकते हो, वह 'वह' नहीं है...वह स्व-सत्ता नहीं है। स्व-सत्ता सदा द्रष्टा है और द्रश्य कभी नहीं। सत्य के साथ तुम प्रयोग नहीं कर सकते हो, क्योंकि प्रयोग केवल चीजों के, वस्तुओं के साथ संभव है–न कि चेतना के साथ।

महात्मा गांधी सच में ही एक अच्छे आदमी थे, लेकिन वे ध्यानी नहीं थे। और अगर कोई ध्यानी नहीं है, तो चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो, सब बेकार है। उन्होंने अपने जीवन भर प्रयोग किए और कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ। उतने ही अज्ञान में उनकी मृत्यु हुई जितने कि वे पहले थे। यह दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि इतना प्रामाणिक, सच्चा और ईमानदार आदमी, और जिसे सत्य को जानने की प्रबल इच्छा हो, मिलना बहुत मुश्किल है। लेकिन वही इच्छा बाधा बन जाती है।

सत्य मुझ जैसे लोगों के द्वारा जाना जाता है, जो उसकी फिकर ही नहीं करते, जो सत्य की ओर ध्यान ही नहीं देते। यहां तक कि अगर परमात्मा भी मेरे दरवाजे पर दस्तक दे, तो भी मैं दरवाजा खोलने वाला नहीं हूं। दरवाजा खोलने के लिए परमात्मा को अपना ही उपाय खोजना होगा। सत्य इस तरह के आलसी लोगों के पास

आता है; इसलिए मैं अपने आप को संबोधि के लिए आलसी लोगों का मार्गदर्शक कहता हूं। अब इसके साथ मैं एक चीज और जोड़ सकता हूं जिससे यह पूरा हो जाए: मैं संबोधि के लिए आलसी आदमी का मार्गदर्शक तो हूं ही, गैर-संबोधि वालों के लिए भी हूं! इसको कहते हैं संबोधि के पार।

इस आदमी पर मुझे दया आती है, हालांकि मैंने उनकी राजनैतिक सोच, सामाजिक विचारधारा, और समय के चक्र को पीछे की ओर मोड़ने के मूढ़तापूर्ण विचारों की हमेशा आलोचना की है–तुम इसे चरखा-युग कह सकते हो। वे चाहते थे कि आदमी फिर से आदिम युग में लौट जाए। वे सारी टेक्नालॉजी के विरोध में थे, यहां तक कि बेचारी रेलगाड़ी के भी विरोध में थे–टेलीग्राफ, डाक-व्यवस्था। विज्ञान के बिना तो आदमी बंदर हो जाएगा। माना कि बंदर बहुत ताकतवर हो सकता है...लेकिन बंदर तो बंदर है। आदमी को और आगे जाना है।

मुझे इस पुस्तक के शीर्षक पर भी आपत्ति है, क्योंकि यह केवल एक शीर्षक ही नहीं है, यह उनके पूरे जीवन का सार-संक्षेप है। वे ऐसा सोचते थे क्योंकि उनकी शिक्षा इंग्लैंड में हुई थी, वे एक आदर्श भारतीय अंग्रेज थे–पूरी तरह से विक्टोरियन। यही लोग नरक में जाते हैं, विक्टोरियन! वे पूरी तरह शिष्टाचार से भरे हुए थे, सदव्यवहार से भरे हुए थे, पूरी तरह से सब प्रकार की अंग्रेज मूढ़ताओं से भी भरे हुए थे। अब चेतना को चोट लगती होगी। चेतना, मुझे क्षमा करना। यह सिर्फ संयोग है कि तुम यहां हो, और तुम तो मुझे जानती ही हो–मुझे हमेशा किसी न किसी तरह लोगों पर चोट करने का रास्ता मिल ही जाता है।

लेकिन चेतना भाग्यशाली है: वह कोई अंग्रेज महिला नहीं है, वह ओशो दीवानी है! और वह एक गरीब अंग्रेज परिवार से आती है, यह बहुत अच्छा है। उसके पिता एक मछुआरे थे, सरल आदमी। चेतना अभिमानी नहीं है; वरना अंग्रेज महिलाएं, भद्रपुरुषों से भी अधिक, हमेशा अपनी नाक ऊंची रखती हैं, मानो वे हमेशा सितारे देख रही हों। उनसे वास्तव में बदबू आती है, अभिमान की बदबू!

महात्मा गांधी ने इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की थी; शायद इसी कारण वे इतने उलझ गए। अगर वे अशिक्षित रहते, तो शायद यह अच्छा होता, तब उन्होंने 'सत्य के साथ प्रयोग' न किए होते, उन्होंने सत्य का अनुभव किया होता।

सत्य के साथ प्रयोग? असंगत! हास्यास्पद! यदि किसी को सत्य जानना है, तो उसे उसका अनुभव करना पड़ता है।

दूसरी: संत अगस्तीन की 'कनफेशंस।' अगस्तीन पहला आदमी है जिसने अपनी आत्मकथा बिना किसी भय के लिखी है, लेकिन वह दूसरी अति पर चला गया है। इसीलिए मैंने गांधी की प्रशंसा की। अगस्तीन ने अपनी पुस्तक 'कनफेशंस' में अपने पापों को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर स्वीकार किया है–उन पापों को भी जो उसने किए ही नहीं!–सिर्फ स्वीकार के आनंद के लिए। गजब का आनंद! सिर्फ दुनिया को यह कहने के आनंद के लिए कि "ऐसा एक भी पाप नहीं है जो मैंने न किया हो। आदमी जो भी पाप कर सकता है वे सभी मैंने किए हैं।"

यह सच नहीं है। कोई भी आदमी सभी पाप नहीं कर सकता। कोई आदमी सभी पाप करने में समर्थ नहीं है, यहां तक कि स्वयं ईश्वर भी नहीं। ईश्वर का तो कहना ही क्या, शैतान भी सोचेगा कि अगस्तीन जिन पापों को स्वीकार कर रहा है उनका मजा कैसे लिया जाए! अगस्तीन ने अतिशयोक्ति की है!

अतिशयोक्ति संतों की आम बीमारियों में से एक है। वे हरेक बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहते हैं, यहां तक कि अपने पापों को भी; तब, स्वभावतः, वे अपने पुण्यों को भी बढ़ा-चढ़ा कर बता सकते हैं। यह कहानी का दूसरा पहलू है। जब तुम अपने पापों को बड़ा-चढ़ा कर कहते हो, तो निश्चित ही इस पृष्ठभूमि में तुम्हारे छोटे से पुण्य भी बहुत बड़े, बहुत चमकते हुए मालूम पड़ते हैं–काले बादलों में बिजली की चमक की तरह। वे काले बादल

बिजली दिखाने में बहुत मददगार होते हैं। पापों के बिना तुम एक संत नहीं हो सकते हो। जितने बड़े पाप, उतना ही बड़ा संत–सीधा गणित है!

लेकिन फिर भी मैं इस पुस्तक को शामिल कर रहा हूं, क्योंकि यह बहुत सुंदरतापूर्वक लिखी गई है। मैं एक ऐसा आदमी हूं, कृपया नोट करो, यह बात रिकॉर्ड में रहे: कि यदि तुम सुंदरतापूर्वक झूठ भी बोलोगे तो मैं उसके सौंदर्य के लिए उसकी प्रशंसा करूंगा। उसके झूठ के लिए नहीं–कौन फिकर करता है कि वह झूठ है या नहीं! उसकी सुंदरता उसे तारीफ के लायक बनाती है, प्रशंसा के लायक बनाती है।

'कनफेशंस' झूठ की एक श्रेष्ठतम कृति है। यह झूठ से भरी हुई है। लेकिन इस आदमी ने अपना काम लगभग अच्छी तरह से किया है। लगभग कह रहा हूं, क्योंकि यह संभावना हमेशा होती है कि कोई भी इस कार्य को और अच्छे ढंग से कर सकता है। लेकिन उसने यह काम लगभग निन्यानबे प्रतिशत अच्छी तरह से किया है; किसी और के लिए ज्यादा गुंजाइश नहीं छोड़ी है। हां, उसके बाद कई लोगों ने कोशिश की, यहां तक कि लियो टालस्टाय जैसे महान आदमी ने भी। मैं टालस्टाय की पुस्तक 'रिसरेक्शन' और 'वॉर एंड पीस' पर चर्चा कर चुका हूं। टालस्टाय अपने पूरे जीवन भर अपने ही कनफेशंस, अपने ही पापों को लिखने की कोशिश करता रहा; लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुआ। टालस्टाय जैसा आदमी भी अगस्तीन को पराजित नहीं कर पाता है। लेकिन, टाल्सटाय, बहको मत; मैं तुम्हें अपनी प्रिय पुस्तकों की सूची में शामिल करने जा रहा हूं।

तीसरी: लियो टाल्सटाय की 'अन्ना कैरेनिना,' एक छोटा परंतु बहुत ही सुंदर उपन्यास। तुम्हें आश्चर्य होगा कि अपनी मनपसंद पुस्तकों की सूची में मैं किसी उपन्यास को क्यों शामिल कर रहा हूं। बस इसलिए कि मैं एक दीवानगी से भरा हुआ आदमी हूं। मुझे हर तरह की चीजें पसंद हैं। 'अन्ना कैरेनिना' मेरी सबसे प्रिय पुस्तकों में एक है। मुझे याद नहीं है कि कितनी बार मैंने इसे पढ़ा होगा। मेरा मतलब है कितनी बार–मुझे यह पुस्तक पूरी तरह याद है, मैं इसे पूरी सुना सकता हूं।

यह देखो! आशु ने एक लंबी श्वास ली है। वह चिंतित हो गई कि अब यह पागल आदमी पूरी 'अन्ना कैरेनिना' सुनाने जा रहा है! नहीं आशु, चिंता मत करो, मैं सुनाने नहीं जा रहा। मुझे और भी कई काम हैं। शायद फिर कभी सुना दूं, पर अभी नहीं।

अगर मैं समुद्र में डूब रहा होऊं और संसार के लाखों उपन्यासों में से एक उपन्यास चुनना पड़े, तो मैं 'अन्ना कैरेनिना' को चुन लूंगा। इस सुंदर उपन्यास के साथ रहना बहुत आनंददायक होगा। इसको बार-बार पढ़ना चाहिए, केवल तभी इसका अहसास होगा, इसकी सुगंध मिलेगी, इसका स्वाद मिलेगा। यह कोई सामान्य पुस्तक नहीं है।

लियो टाल्सटाय एक संत के रूप में असफल रहा, जिस प्रकार महात्मा गांधी एक संत के रूप में असफल रहे। लेकिन लियो टाल्सटाय एक महान उपन्यासकार था। महात्मा गांधी ईमानदारी के एक शिखर के रूप में सफल रहे–और सदा रहेंगे! इस सदी में मैं किसी और आदमी को नहीं जानता जो इतना ईमानदार रहा हो। जब वे लोगों को पत्र लिखते थे: 'सिंसयरली योर्स'–'आपका अपना,' तब वे सच में ईमानदार थे। जब तुम 'सिंसयरली योर्स' लिखते हो, तब तुम जानते हो, और हर कोई जानता है, और जिस व्यक्ति को तुम लिख रहे हो वह भी जानता है कि यह सब बकवास है। यह बहुत मुश्किल है, लगभग असंभव है: सचमुच में 'आपका अपना' होना। यही वह चीज है जो व्यक्ति को धार्मिक बनाती है–ईमानदारी।

लियो टाल्सटाय धार्मिक होना चाहता था, लेकिन हो नहीं सका। उसने पूरी तरह से कोशिश की। मुझे उसके प्रयासों से बड़ी सहानुभूति है, लेकिन वह धार्मिक व्यक्ति नहीं था। उसे कम से कम कुछ और जन्मों तक

प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। एक तरह से यह अच्छा है कि वह मुक्तानंद जैसा धार्मिक आदमी नहीं था; नहीं तो हम 'रिसरेक्शन', 'वॉर एंड पीस', 'अन्ना कैरेनिना,' और दर्जनों बहुत सी सुंदर, अत्यंत सुंदर पुस्तकों से वंचित रह जाते। फिर वह एक और दूसरा स्वामी मूर्खानंद होता, और कुछ नहीं।

चौथी: अजित सरस्व...अजित मुखर्जी। उसने तंत्र के लिए महान कार्य किया है। मैं उसकी दो पुस्तकों को शामिल करने जा रहा हूं।

चौथी है: अजित मुखर्जी की 'दि आर्ट ऑफ तंत्रा,' और पांचवीं है: उसकी दूसरी पुस्तक 'दि पेंटिंग्स ऑफ तंत्रा–या शायद 'दि तंत्रा पेंटिंग्स।' यह आदमी अभी जीवित है, और इन दो पुस्तकों के कारण मैंने उसे हमेशा प्रेम किया है, क्योंकि ये दोनों मास्टरपीस हैं, अति उत्तम रचनाएं हैं–वह पेंटिंग्स, वह कला, और उन पेंटिंग्स पर की गई उसकी व्याख्याएं। उनका जो इंट्रोडक्शन, उनका जो परिचय उसने लिखा है वह बहुत ही मूल्यवान है।

लेकिन यह आदमी बेचारा खुद एक बंगाली मालूम होता है। अभी कुछ दिन पहले ही वह दिल्ली में लक्ष्मी से मिला था। वह उससे मिलने आया था और उसने स्वीकार किया कि वह मुझको अपना पूरा तंत्र-संग्रह दे देना चाहता था। उसके पास तंत्रा पेंटिंग्स और तंत्र कला का सबसे मूल्यवान और सबसे कीमती संग्रहों में से एक रहा होगा। उसने लक्ष्मी से कहा: "मैं इसे ओशो को देना चाहता था, क्योंकि वे ही एक व्यक्ति हैं जो इसे समझने में समर्थ हैं और इसका अर्थ समझते हैं। लेकिन मैं बहुत भयभीत था।" उसने कहा: "ओशो से किसी भी तरह का संपर्क मेरे लिए मुसीबत खड़ा कर सकता था, इसलिए अंततः मैंने अपने जीवन भर का पूरा संग्रह भारत सरकार को भेंट कर दिया।"

मुझे ये दोनों पुस्तकें प्रिय रही हैं–लेकिन इस आदमी के बारे में क्या कहा जाए–अजित मुखर्जी या अजित माउस (चूहा)? इतना भय!–और इतने भय के साथ क्या तंत्र को समझना संभव है? असंभव! उसने जो लिखा है वह सिर्फ बौद्धिक है। वह हृदय का नहीं है, और हो नहीं सकता है, हृदय का हो नहीं सकता है। उसके पास कोई हृदय नहीं है। जहां तक शरीर विज्ञान का संबंध है मैं जानता हूं कि चूहे के पास भी हृदय होता है–लेकिन यह हृदय नहीं है, यह केवल फुफ्फुस है। अकेला आदमी ही ऐसा है जिसके पास फुफ्फुस से अधिक कुछ है...एक हृदय; और हृदय केवल साहस, प्रेम और दुस्साहस के माहौल में ही विकसित होता है। कितना बेचारा है यह आदमी! फिर भी मैं उसकी पुस्तकों की प्रशंसा करता हूं। चूहे ने एक जबरदस्त काम किया है। ये दोनों पुस्तकें हमेशा तंत्र के लिए और सत्य के खोजियों के लिए अत्यंत महत्व की बनी रहेंगी। लेकिन अजित माउस को भूल जाओ और माफ कर दो–मेरा मतलब है अजित मुखर्जी को।

कृपया याद रखना कि मैं तुम्हारे खिलाफ नहीं हूं, अजित मुखर्जी, और न ही किसी और के। इस दुनिया में मैं किसी का भी शत्रु नहीं हूं, हालांकि लाखों लोग हैं जो मुझे अपने शत्रु की तरह देखते हैं। यह उनका अपना मामला है; मुझे उससे कुछ भी लेना-देना नहीं है। अजित मुखर्जी, मैं तुम्हें प्रेम करता हूं, क्योंकि तुमने तंत्र का कार्य अच्छी तरह से किया है। तंत्र को अनेक विद्वानों, दार्शनिकों, चित्रकारों, लेखकों, कवियों की जरूरत है, ताकि प्राचीन ज्ञान दुबारा से जीवित हो सके, और इसमें तुमने एक छोटी सी मदद की है।

छठवीं–यह वह पुस्तक है जिसके बारे में मैं हमेशा से चर्चा करना चाहता था; इसे मेरे सुबह के अंग्रेजी प्रवचन के लिए चुना भी गया था। मैं पहले ही इस पर हिंदी में बोल चुका हूं और इसका भी अनुवाद किया जा सकता है। पुस्तक शंकराचार्य द्वारा लिखी गई है–इस समय वाला मूढ़ नहीं, बल्कि आदि शंकराचार्य, जो असली हैं।

पुस्तक एक हजार साल पुरानी है, इसमें सिवाय एक छोटे से गीत के और कुछ भी नही है: "भजगोविन्दम् मूढ़मते–हे मूढ़..." अब, देवगीत, ध्यान से सुनो: मैं तुमको नहीं कह रहा हूं, यह पुस्तक का शीर्षक है। "भजगोविन्दम्"–गोविंद को भजो–"मूढ़मते," हे मूढ़। हे मूढ़, गोविंद को भजो।

लेकिन मूढ़ नहीं सुनते हैं। वे कभी किसी की नहीं सुनते हैं, वे बहरे हैं। और अगर वे सुन भी लें, तो उनकी समझ में नहीं आता। वे जड़बुद्धि हैं। और अगर वे समझ भी लें, तो वे अनुसरण नहीं करते; और जब तक तुम अनुसरण नहीं करते, तब तक समझ अर्थहीन है। समझना केवल तभी समझना कहा जाएगा जब तक कि वह तुम्हारे अनुसरण से सिद्ध न हो जाए।

शंकराचार्य ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, लेकिन उनमें से कोई भी इस गीत जितनी सुंदर नहीं हैं: "भजगोविन्दम् मूढ़मते।" इन तीन या चार शब्दों पर मैं बहुत बोल चुका हूं, लगभग तीन सौ पेज। किंतु तुम्हें पता है कि मुझे गीत गाना कितना पसंद है; अगर मुझे मौका मिले तो मैं निरंतर गाता ही रहूं। लेकिन मैं यहां किसी भी तरह इस पुस्तक का उल्लेख करना चाहता था।

सातवीं: लुडविग विटगिंस्टीन की एक और पुस्तक। यह भी मेरे प्रिय लेखकों में से एक है। पुस्तक का नाम है: फिलॉसफिकल पेपर्स। यह कोई पुस्तक नहीं है, लेकिन बल्कि अलग-अलग समय पर प्रकाशित लेखों का एक संग्रह है। प्रत्येक लेख सुंदर है। विटगिंस्टीन इसके सिवा कुछ और कर भी नहीं सकता था। उसमें वह क्षमता थी कि अतार्किक हुए बिना सुंदरता उत्पन्न कर सके, और गद्य के रूप में काव्य भी लिख सके। मुझे नहीं लगता कि उसने कभी खुद को एक कवि के रूप में सोचा भी होगा, लेकिन मैं उसे प्रथम श्रेणी का कवि घोषित करता हूं। वह उसी श्रेणी में है जिसमें कालिदास, शेक्सपियर, मिल्टन या गेटे हैं।

सातवीं: पॉल रेप्स की 'झेन फ्लेश, झेन बोन्स।' यह एक महान कृति है–हालांकि मौलिक नहीं, क्योंकि उसने इसका सृजन नहीं किया, लेकिन मौलिक न होते हुए भी यह अनुवाद से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह अपने आप में ही एक श्रेणी है। एक ओर से यह मौलिक है, दूसरे ओर से अनुवाद। यह पुरानी झेन-कथाओं और मूल लेखों का अनुवाद है। क्योंकि मैंने झेन के बारे में या झेन पर करीब-करीब सभी पुस्तकें देखी हैं–इसलिए मैं जानता हूं कि पॉल रेप्स की पुस्तक का जवाब नहीं। उसने एक झलक पा ली है। उसके पास वही सुगंध है जो बाशो या रिंझाई के पास है।

कैलिफोर्निया में कहीं पॉल रेप्स अभी भी जीवित है। उसने अपनी छोटी सी पुस्तक में न केवल झेन-कथाओं का संग्रह किया है, बल्कि विज्ञान-भैरव-तंत्र को भी सम्मिलित किया है–शिव के वे एक सौ बारह सूत्र, जिसमें शिव ने अपनी प्रियतमा पार्वती से सभी संभव कुंजियों की चर्चा की है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि ध्यान में विज्ञान-भैरव-तंत्र से अधिक कुछ जोड़ा जा सकता है। एक सौ बारह कुंजियां पर्याप्त हैं। वे पर्याप्त लगती हैं... एक सौ तेरह सही संख्या नहीं लगेगी, एक सौ बारह सचमुच गुह्य, सुंदर लगती है।

यह एक बहुत छोटी सी पुस्तक है, तुम इसे अपनी जेब में रख सकते हो; यह एक पॉकेटबुक है। लेकिन जेब में तुम कोहिनूर भी रख सकते हो... हालांकि कोहिनूर ब्रिटिश ताज में जड़ा है, और तुम उसे जेब में रख नहीं सकते। लेकिन पॉल रेप्स की सबसे सुंदर बात यह है कि उसने इसमें अपना एक शब्द भी नहीं जोड़ा है, जो आश्चर्यजनक है। उसने बस अनुवाद किया है, मात्र अनुवाद किया है–और न केवल अनुवाद किया है, बल्कि वह झेन के पुष्प को अंग्रेजी भाषा में ले आया है। झेन पर लिखने वाले किसी और अंग्रेज लेखक की रचनाओं में यह पुष्प नहीं मिलता है। यहां तक कि सुजुकी भी यह नहीं कर पाया, क्योंकि वह जापानी था। हालांकि वह संबुद्ध

था, लेकिन अपनी संबोधि का स्वाद वह अपनी अंग्रेजी पुस्तकों में नहीं ला सका। सुजुकी की अंग्रेजी सुंदर है, लेकिन बुद्धत्व को नहीं दर्शाती, शायद ऊर्जामय लेकिन बिलकुल संबोधिरहित।

अमरीकन होते हुए भी पॉल रेप्स ने करीब-करीब एक असंभव काम किया है, और फिर भी, मैं फिर से दोहराता हूं, फिर भी उसने झेन का पूरा स्वाद पाया है। और केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि 'झेन फ्लेश, झेन बोन्स' में उसने पूरी दुनिया को झेन का स्वाद चखा दिया है। दुनिया को हमेशा के लिए उसके प्रति आभारी रहना चाहिए, हालांकि वह एक संबुद्ध व्यक्ति नहीं है। इसीलिए मैं कहता हूं कि उसने लगभग एक असंभव काम किया है।

नौवीं...मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं कि तुम थोड़ा ऊपर उठो, क्योंकि मैं परम शिखरों की कुछ ऊंचाइयों के बारे में बात करने जा रहा हूं। ठीक है...लेकिन रुको मत। ठीक है का मतलब यह नहीं है कि रुक जाओ, इसका केवल इतना ही अर्थ होता है कि चलते रहो, चलते रहो...चरैवेति, चरैवेति!

वैसे, जिस नौवीं पुस्तक का मैं उल्लेख करने जा रहा हूं वह है क्रिसमस हम्फ्रीस की 'झेन बुद्धिज्म।' प्रारंभ में वह चाहता था कि इसे 'गो ऑन, गो ऑन' कहा जाए–जो 'चरैवेति, चरैवेति' का अनुवाद है–या 'चलते चलो, चलते चलो।' फिर भी आखिरकार अंग्रेज तो अंग्रेज है; अंततः उसने यह विचार छोड़ दिया और पुस्तक का नाम रखा: 'झेन बुद्धिज्म।'

पुस्तक सुंदर है, लेकिन शीर्षक कुरूप है, क्योंकि झेन का किसी 'वाद' से कोई लेना-देना नहीं है चाहे बुद्धिज्म हो या कोई और। 'झेन बुद्धिज्म' एक शीर्षक के रूप में सही नहीं है। बस 'झेन' पर्याप्त होता। हम्फ्रीस ने अपनी डायरी में लिखा है कि उसने 'चरैवेति, चरैवेति' शीर्षक अपनी पहली पसंद के रूप में चुना था, लेकिन फिर उसने सोचा कि यह बहुत लंबा है। 'चलते चलो, चलते चलो...चलते रहो, चलते रहो।' उसने शीर्षक बदल दिया और उसे थोड़ा कुरूप बना दिया: 'झेन बुद्धिज्म।' लेकिन पुस्तक सुंदर है। इसने पश्चिमी देशों के लाखों लोगों को झेन की दुनिया से परिचित करा दिया है। इसने महान कार्य किया है।

यह आदमी हम्फ्रीस, डी. टी. सुजुकी का एक शिष्य था, और विशेष रूप से पश्चिम में सदगुरु की जैसी सेवा उसने की है वैसी किसी और ने नहीं की है। वह अपने पूरे जीवन भर सुजुकी के प्रति समर्पित बना रहा।

गुड़िया कल मुझे बता रही थी कि उसने देवगीत से कहा था कि "अगर तुम मेरी तरह ओशो के साथ केवल एक महीना भी रह सको, तब तुम्हें पता चलेगा कि वह रहना क्या है–मुश्किल है।" मैं जानता हूं कि निश्चित ही यह मुश्किल है। एक संबुद्ध व्यक्ति के साथ रहना मुश्किल है–और उसके साथ रहना जो बुद्धत्व के पार चला गया हो और भी मुश्किल है।

लेकिन हम्फ्रीस वास्तव में एक शिष्य साबित हुआ; वह सुजुकी के जीवन की आखिरी श्वास तक सुजुकी के प्रति सच्चा और निष्ठावान और आज्ञाकारी बना रहा, और अपने खुद के लिए भी। एक क्षण के लिए भी वह डगमगाया नहीं। तुम उसकी पुस्तक में यह अटूट श्रद्धा पा सकते हो।

दसवीं...इस सत्र के लिए अंतिम। यह एक बहुत छोटी सी पुस्तक है, और संसार में बहुत थोड़े से लोगों को ही इसके बारे में पता है, लेकिन इसे पूरे जोर-शोर से बता देने की जरूरत है ताकि एक-एक आदमी तक बात पहुंच जाए। 'दि सांग्स ऑफ चंडीदास'–'चंडीदास के गीत'–एक बंगाली दीवाना, एक बाउल।

'बाउल' शब्द का अर्थ होता है: बावला, पागल। चंडीदास नाचते-गाते हुए एक गांव से दूसरे गांव घूमते रहते थे, और कोई नहीं जानता कि उनके गीतों का संग्रह किसने किया। वह कोई बहुत महान और उदार भावना वाला आदमी रहा होगा, इतना उदार कि उसने अपने नाम तक का भी उल्लेख नहीं किया है।

'दि सांग्स ऑफ चंडीदास'...मैं बहुत विस्मयविमुग्ध हूं। चंडीदास का नाम लेते ही मेरा हृदय एक अलग ही लय में धड़कने लगता है। क्या गजब के आदमी थे, और कितने अदभुत कवि! हजारों कवि हो चुके हैं, लेकिन चंडीदास सोलोमन की श्रेणी के हैं, उससे कम नहीं। यदि सोलोमन की किसी से तुलना की जा सकती है, तो वह चंडीदास से।

चंडीदास के गीतों में अनूठी बातें हैं–परमात्मा के संबंध में, जो है ही नहीं। चंडीदास को भी यह पता है कि परमात्मा का अस्तित्व नहीं है, लेकिन वे परमात्मा के गीत गाते हैं इसलिए कि परमात्मा ही अस्तित्व का प्रतीक है। परमात्मा का अस्तित्व नहीं है; वह स्वयं अस्तित्व है।

चंडीदास ध्यान के भी गीत गाते हैं, हालांकि ध्यान के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता–लेकिन फिर भी वे कुछ कहते हैं, कुछ ऐसा जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। वे कहते हैं: 'ध्यान अ-मन के बराबर है।' कितना अदभुत सूत्र! अलबर्ट आइंस्टीन को भी चंडीदास से ईर्ष्या हो सकती है। अफसोस, आइंस्टीन को चंडीदास के बारे में कुछ भी पता नहीं था और न ही ध्यान का। इस युग के महानतम व्यक्तियों में एक, जो ध्यान के बारे में पूरी तरह से अनजान था। स्वयं को छोड़ कर वह सब-कुछ जानता था।

चंडीदास प्रेम के गीत गाते हैं–होश के, सौंदर्य के, प्रकृति के। और उनमें से कुछ गीत तो ऐसे हैं जिनका किसी से भी कोई संबंध नहीं है; मात्र आनंद, गीत गाने का आनंद–अर्थ का कोई महत्व ही नहीं है।

आज की यह मेरी दसवीं और अंतिम पुस्तक है।

सत्र-16

ओ. के.। पोस्ट-पोस्टस्क्रिप्ट में मैं कितनी पुस्तकों के बारे में चर्चा कर चुका हूं? हूंऽऽऽ...?

"चालीस, ओशो।"

चालीस?

"हां, ओशो।"

तुम्हें पता है कि मैं एक जिद्दी आदमी हूं। चाहे कुछ भी हो जाए मैं इसे पचास तक पूरा करके रहूंगा; वरना दूसरा पोस्ट-पोस्ट-पोस्टस्क्रिप्ट प्रारंभ कर दूंगा। सच में मेरी जिद ने ही मुझे लाभ पहुंचाया है: दुनिया में जो हर प्रकार की बकवास भरी पड़ी है, उससे मुकाबला करने में मुझे इससे मदद मिली है। दुनिया में हर जगह हर किसी के चारों ओर यह जो अति सामान्य योग्यता वाला आदमी है, उसके विरुद्ध अपनी बुद्धिमत्ता को बचाए रखने में इसने मेरी काफी मदद की है। इसलिए मैं इस बात से बिलकुल भी दुखी नहीं हूं कि मैं जिद्दी हूं; असल में, मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूं कि उसने मुझे इस तरह से बनाया है: पूरी तरह से जिद्दी।

पहली पुस्तक है बेनेट द्वारा लिखित, जो एक अंग्रेज है, एक पक्का अंग्रेज। पुस्तक एक बिलकुल ही अज्ञात भारतीय रहस्यदर्शी के बारे में है–शिवपुरी बाबा। दुनिया को उनके बारे में बेनेट की पुस्तक के द्वारा ही पता चला।

शिवपुरी बाबा निश्चित ही दुर्लभतम पुष्पों में एक थे, खासकर भारत में जहां इतने सारे मूर्ख महात्मा होने का ढोंग कर रहे हैं। भारत में शिवपुरी बाबा जैसे व्यक्ति का मिलना वास्तव में या तो सौभाग्य की बात है या किसी गहरी खोज का परिणाम। भारत में पांच लाख महात्मा हैं; और यह वास्तविक संख्या है। इस भीड़ में एक असली आदमी को खोज पाना करीब-करीब असंभव है।

लेकिन बेनेट कई अर्थों में भाग्यशाली था। वही पहला व्यक्ति भी था जिसने गुरजिएफ को खोजा। यह काम न तो ऑस्पेंस्की कर सका और न ही निकोल, और न ही कोई अन्य सिवाय बेनेट के। बेनेट ने गुरजिएफ को कुस्तुनतुनिया के एक शरणार्थी शिविर में पाया। वे रूसी क्रांति के दिन थे। गुरजिएफ को रूस छोड़ना पड़ा था; रास्ते में इससे पहले कि वह वहां से भाग निकले, उस पर दो बार गोली चलाई गई। हमारी शैलियां अलग-अलग हैं, लेकिन नियति एक अजीब ढंग से फिर वही खेल खेल सकती है...

गुरजिएफ, और एक शरणार्थी शिविर में!–जरा इसके बारे में सोचो तो, मुझे विश्वास ही नहीं होता कि मानवता इतने नीचे भी गिर सकती है। किसी बुद्ध को, या गुरजिएफ को, जीसस या बोधिधर्म को एक शरणार्थी शिविर में रखना... जब बेनेट ने उसे देखा, गुरजिएफ भोजन के लिए एक लाइन में खड़ा था। भोजन दिन में केवल एक बार ही मिलता था, और लाइन लंबी थी। हजारों शरणार्थी थे जिन्होंने रूस छोड़ दिया था, क्योंकि कम्युनिस्ट बिना किसी सोच-विचार के लोगों की हत्या कर रहे थे कि वे किसकी हत्या कर रहे हैं, और किसलिए कर रहे हैं। तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि उन्होंने लगभग एक करोड़ रूसियों की हत्या की थी।

बेनेट ने गुरजिएफ को कैसे खोज लिया? अपने शिष्यों के बीच बैठे हुए गुरजिएफ को पहचानना मुश्किल नहीं है, लेकिन बेनेट ने उसे गंदे फटे-पुराने, कई दिनों से अनधुले कपड़ों में पहचान लिया। उसने कैसे उसे उस लाइन में पहचाना? वे आंखें–उन्हें तुम छिपा नहीं सकते। वे आंखें–चाहे वह आदमी स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हुआ है, या शरणार्थी शिविर में खड़ा हुआ है, वे एक जैसी हैं। पश्चिम में गुरजिएफ को बेनेट लेकर आया।

बेचारे बेनेट को इसके लिए कोई धन्यवाद भी नहीं देता, और उसका एक कारण है। कारण यह है कि वह एक अस्थिर स्वभाव का व्यक्ति था। गुरजिएफ जब तक जीवित रहा तब तक बेनेट ने उसे नहीं छोड़ा। उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। वे आंखें बहुत प्रभावशाली थीं; उसने दो बार उन आंखों का अदभुत प्रभाव देखा था। गुरजिएफ पर लिखी अपनी पुस्तक में वह कहता है–जो कि कोई बहुत बढ़िया पुस्तक नहीं है, इसीलिए मैं उसकी गिनती नहीं कर रहा हूं, लेकिन मैं सिर्फ उसका उल्लेख कर रहा हूं–बेनेट कहता है: 'मैं एक लंबी यात्रा के बाद थका-हारा गुरजिएफ के पास आया। मैं बीमार था, बहुत बीमार, मरने के करीब। मैं उन्हें देखने के लिए आया था सिर्फ इसलिए कि इसके पहले कि मैं मर जाऊं मैं उन दोनों आंखों को फिर से देख सकूं...मेरा आखिरी अनुभव।'

वह गुरजिएफ के कमरे में आया। गुरजिएफ ने उसे देखा, उठ कर खड़ा हुआ, करीब आया और उसे गले लगा लिया। बेनेट तो इस पर विश्वास न कर सका–यह गुरजिएफ का ढंग नहीं था। अगर वह उसे थप्पड़ मार देता इसकी तो ज्यादा उम्मीद थी, लेकिन गुरजिएफ ने उसे गले लगा लिया! लेकिन वहां इस गले लगाने से भी ज्यादा कुछ और था। जिस क्षण गुरजिएफ ने उसे स्पर्श किया, बेनेट ने ऊर्जा की एक तीव्र लहर महसूस की। उसी समय उसने देखा गुरजिएफ पीला पड़ चुका था। गुरजिएफ बैठ गया; उसके बाद बड़ी मुश्किल से उठ कर खड़ा हुआ और बाथरूम में चला गया, जाते हुए बेनेट से कहा: "फिकर मत करो, बस दस मिनट इंतजार करो और मैं वापस आता हूं, जैसा था वैसा ही।"

बेनेट कहता है: "मैंने कभी इतना अच्छा महसूस नहीं किया था–इतना स्वस्थ, इतना शक्तिशाली। ऐसा लग रहा था कि मैं कुछ भी कर सकता हूं।"

जो लोग ड्रग्स लेते हैं वे ऐसा महूसस करते हैं–एल.एस.डी. या मारीजुआना और अन्य नशीले पदार्थ–उनके प्रभाव में वे अनुभव करते हैं कि वे कुछ भी कर सकते हैं। एक महिला को लगा कि वह उड़ सकती है, तो वह न्यूयार्क की एक इमारत की तीसवीं मंजिल की खिड़की से बाहर उड़ गई। अब तुम अनुमान लगा सकते हो कि क्या हुआ होगा। महिला के टुकड़े भी नहीं मिले।

बेनेट कहता है: "मुझे लगा कि मैं सब-कुछ कर सकता हूं। उस समय मुझे नेपोलियन का प्रसिद्ध वचन समझ में आया: कुछ भी असंभव नहीं है। न केवल मुझे यह समझ में आया बल्कि महसूस हुआ कि मैं जो कुछ भी चाहता था वह कर सकता हूं। लेकिन मुझे पता था कि यह गुरजिएफ की करुणा थी। मैं मर रहा था, और उन्होंने मुझे बचा लिया।"

ऐसा दो बार हुआ...कुछ वर्षों बाद फिर से। पूरब में इसे 'शक्तिपात' कहते हैं; जलते हुए एक दीये की लौ से ऊर्जा दूसरे बुझते हुए दीये की ओर छलांग लगा सकती है। हालांकि उसे इस तरह के गहन अनुभव हुए, फिर भी बेनेट एक अस्थिर चित्त का आदमी था। ऑस्पेंस्की की भांति न तो वह डगमगाया और न ही साथ छोड़ा, लेकिन जब गुरजिएफ की मृत्यु हुई, तब वह साथ छोड़ गया। उसने दूसरे सदगुरु की खोज शुरू कर दी। कितना दुर्भाग्य है!–मेरा मतलब है कि बेनेट का दुर्भाग्य है। यह दूसरे लोगों के लिए तो अच्छा रहा, क्योंकि इस तरह वह खोजते हुए शिवपुरी बाबा के पास आया। लेकिन शिवपुरी बाबा, कितने ही महान क्यों न हों, गुरजिएफ से उनकी तुलना नहीं की जा सकती है। मुझे बेनेट की इस बात पर विश्वास नहीं होता। और वह एक वैज्ञानिक था, एक गणितज्ञ...इसी से ही मुझे इशारा मिलता है। वैज्ञानिक ने अपने विशेष क्षेत्र के बाहर लगभग हमेशा मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया है।

मैं विज्ञान की परिभाषा सदा इस प्रकार करता हूं: 'कम से कम के संबंध में ज्यादा से ज्यादा जानना', और धर्म की इस प्रकार: 'ज्यादा से ज्यादा के संबंध में कम से कम जानना।' विज्ञान की पराकाष्ठा होगी कुछ-नहीं के

बारे में सब-कुछ जान लेना, धर्म की पराकाष्ठा होगी सब-कुछ जान लेने में–सब-कुछ के 'बारे में' नहीं जान लेना, बल्कि केवल जानना; किसी के बारे में नहीं, मात्र जानना। विज्ञान का अंत होगा अज्ञान में; धर्म का अंत होगा आत्मज्ञान में।

सभी वैज्ञानिक, यहां तक कि महान वैज्ञानिक, अपने विशेष क्षेत्र के बाहर कई बार मूर्ख सिद्ध हो चुके हैं। वे बच्चों जैसा व्यवहार करते हैं। बेनेट एक जाना-माना वैज्ञानिक और गणितज्ञ था, लेकिन वह डगमगाया, और चूक गया। फिर उसने दूसरे सदगुरु की खोज शुरू कर दी। और ऐसा भी नहीं कि वह शिवपुरी के साथ रहा हो... शिवपुरी बाबा बहुत वृद्ध हो चुके थे जब बेनेट उनसे मिला। वे लगभग एक सौ दस वर्ष की आयु के थे। वे सचमुच लौह पुरुष थे। वे लगभग डेढ़ शताब्दी तक जीवित रहे। वे सात फीट लंबे और एक सौ पचास वर्ष की आयु के थे और फिर भी वहां मृत्यु का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था। उन्होंने शरीर छोड़ने का निर्णय लिया–यह उनका अपना निर्णय था।

शिवपुरी मौन रहने वाले आदमी थे, उन्होंने कभी कोई शिक्षा नहीं दी। विशेष रूप से वह आदमी जो गुरजिएफ को जानता हो और उसकी अदभुत शिक्षाओं को, उसे शिवपुरी बाबा बहुत साधारण प्रतीत होंगे। बेनेट ने शिवपुरी बाबा पर एक पुस्तक लिखी और फिर से वह एक दूसरे सदगुरु की खोज में निकल पड़ा। शिवपुरी बाबा ने उस समय तक शरीर नहीं छोड़ा था।

तब, इंडोनेशिया में, बेनेट को मिले मोहम्मद सुबुद, सुबुद आंदोलन के संस्थापक। सुबुद संक्षिप्त नाम है 'सुशील-बुद्ध-धर्म' का; यह बस इन तीनों शब्दों के पहले अक्षर से बना है। कैसी मूढ़ता! बेनेटे ने मोहम्मद सुबुद को परिचित कराना शुरू कर दिया। मोहम्मद सुबुद एक भले आदमी थे, लेकिन सदगुरु नहीं...शिवपुरी बाबा से उनकी कोई तुलना ही नहीं की जा सकती; और गुरजिएफ से तुलना का तो सवाल ही नहीं उठता। बेनेट मोहम्मद सुबुद को पश्चिम ले आया, और उन्हें गुरजिएफ के उत्तराधिकारी के रूप में परिचित कराना शुरू कर दिया। अब यह तो निरी मूर्खता है!

लेकिन बेनेट लिखता है सुंदर ढंग से, गणित के अनुसार, व्यवस्थित। 'शिवपुरी बाबा' उसकी सबसे अच्छी पुस्तक है। हालांकि बेनेट मूर्ख था। अब यदि तुम एक बंदर को भी टाइपराइटर पर बिठा दो तो संभव है कि वह भी कभी-कभी कुछ सुंदर वचन लिख सकता है–शायद एक ऐसा वचन जो केवल एक बुद्धपुरुष ही दे सकता है–बस यहां-वहां टाइपराइटर के बटनों को दबा कर। लेकिन बंदर को समझ में नहीं आएगा कि उसने क्या लिखा है।

बेनेट इसी तरह से चलता रहा। जल्दी ही मोहम्मद सुबुद से उसका मोहभंग हो गया और फिर उसने दूसरे सदगुरु की खोज शुरू कर दी। बेचारा, बेकार ही वह अपने पूरे जीवन भर खोजता रहा, खोजता रहा। गुरजिएफ सही आदमी था जो उसे पहले से ही मिल चुका था। गुरजिएफ के बारे में उसने लिखा है, और वह जो कहता है सुंदर है, प्रभावशाली है, लेकिन उसके हृदय में अंधकार है, वहां उसके हृदय में कोई प्रकाश नहीं है। फिर भी, मैं उसकी पुस्तक को सबसे अच्छी पुस्तकों में से एक गिनता हूं। तुम देख सकते हो कि मैं निष्पक्ष हूं।

दूसरी: यह एक अजीब पुस्तक है, कोई इसे पढ़ता भी नहीं। हालांकि यह अमरीका में लिखी गई थी, फिर भी शायद तुमने इसका नाम भी नहीं सुना होगा। विलहेम रेक की 'लिसन लिटिल मैन।' यह एक बहुत ही छोटी सी पुस्तक है। लेकिन यह 'सरमन ऑन दि माउंट, ताओ तेहकिंग, दस स्पेक जरथुस्त्रा, दि प्रॉफेट' की याद दिलाती है। सच बात तो यह है कि रेक की ऐसी सामर्थ्य नहीं थी कि वह इस तरह की कोई पुस्तक लिख सके, लेकिन लगता है कोई अज्ञात शक्ति उस पर सवार थी।

'लिसन लिटिल मैन' लिखने की वजह से रेक को बहुत विरोध का सामना करना पड़ा, खासकर व्यावसायिक मनोविज्ञानिकों और अपने सहयोगियों के बीच, क्योंकि वह हर किसी को 'लिटिल मैन' 'छोटा आदमी' कह कर बुला रहा था–और वह सोच रहा था कि वह बहुत महान है। मैं तुम्हें बताना चाहता हूं: वह था! एक बुद्ध की तरह नहीं, लेकिन सिग्मंड फ्रायड, कार्ल गुस्ताव जुंग, असागोली की तरह। वह इसी कोटि का था। निस्संदेह वह एक महान आदमी था, फिर भी आदमी ही था, महामानव, सुपरमैन नहीं, लेकिन महान। और ऐसा नहीं था कि उसके अहंकार से इस पुस्तक का जन्म हुआ; वह इसे रोक नहीं सकता था, उसे यह लिखनी पड़ी। यह बिलकुल वैसा ही है जैसे एक महिला गर्भवती हो, तो उसे बच्चे को जन्म देना ही होता है। वह वर्षों अपने भीतर इस छोटी सी पुस्तक को सम्हाले रहा, इसे लिखने के खयाल को दबाता रहा, क्योंकि वह बिलकुल अच्छी तरह से जानता था कि यह उसके लिए नरक बन जाने वाला है। और ऐसा ही हुआ। इस पुस्तक के बाद हर तरफ से उसकी निंदा हुई।

इस संसार में किसी भी महान चीज की रचना करना एक अपराध है। आदमी बिलकुल भी नहीं बदला है। सुकरात को वह मार डालता है, रेक को वह मार डालता है। कोई परिवर्तन नहीं। उन्होंने रेक को पागल करार दे दिया और उसे कारागृह में डाल दिया। वह कारागृह में मरा, निंदित, एक पागल कमजोर आदमी की तरह। बादलों के पार उठने की उसकी क्षमता थी, लेकिन उसे नहीं उठने दिया गया। अमरीका को अभी भी सुकरात, जीसस, बुद्ध जैसे लोगों के साथ जीना सीखना है।

मेरे सभी संन्यासियों को इस पुस्तक पर ध्यान करना चाहिए। मैं बिलकुल ही बिना किसी शर्त के इस पुस्तक का समर्थन करता हूं।

तीसरी पुस्तक है जिसे बर्ट्रेंड रसल और व्हाइटहेड दोनों ने मिल कर लिखा है। कोई इसे पढ़ता भी नहीं। पुस्तक का नाम है: 'प्रिंसिपिया मैथेमेटिका।' लोगों को डराने के लिए बस इसका नाम ही काफी है, और इस पुस्तक को अस्तित्व में सबसे जटिल होना चाहिए। इसलिए, इस पुस्तक पर जितना संभव हो सकता था मैंने उतना श्रम किया। हर कठिन चीज मुझे हमेशा आकर्षित करती है। पुस्तक मनमोहक और चुनौतीपूर्ण है, लेकिन मैं अपने संन्यासियों को इसे पढ़ने की सलाह नहीं दूंगा। इससे बचना! मैंने इसके हजारों पन्नों को पढ़ा और सिवाय गणित के कुछ भी नहीं पाया। यदि तुम्हारी गणित में रुचि है, खासकर उच्चतर गणित में...तो वह दूसरी बात है। मैं इसे शामिल करना चाहता था क्योंकि यह अति उत्तम कृति है–गणित की।

चौथा... यही नंबर है न?

''हां, ओशो।''

तुम्हें आश्चर्य होगा कि मेरा चौथा चुनाव है अरिस्टोटल की 'पोएटिक्स।' मैं अरिस्टोटल का जन्मजात शत्रु हूं। मैं इस आदमी को 'अरिस्टोलाइटिस' कहता हूं...एक प्रकार की बीमारी, लाइलाज। देवराज, इसके लिए कोई दवाई नहीं है। आशीष, तुम्हारा माइग्रेन तो कुछ भी नहीं है! ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करो है कि तुम 'अरिस्टोलाइटिस' से पीड़ित नहीं हो; वह एक असली कैंसर है।

अरिस्टोटल को पश्चिमी दर्शनशास्त्र और तर्कशास्त्र का जन्मदाता माना जाता है। निश्चित ही वह है, लेकिन केवल दर्शनशास्त्र और तर्कशास्त्र का, असली बात का नहीं। असली बात तो सुकरात, पाइथागोरस, प्लोटिनस, डायोजनीज और डायोनिसियस से आती है, लेकिन अरिस्टोटल से नहीं। लेकिन यह आश्चर्य है: उसने एक सुंदर पुस्तक लिखी–और यह उन पुस्तकों में से एक है जिसका अध्ययन अरिस्टोटल के विद्वानों द्वारा नहीं

किया जाता है–'पोएटिक्स।' मुझे उसकी कई पुस्तकों में से इसे खोजना पड़ा। मैं सिर्फ जानना चाहता था कि क्या इस आदमी में मुझे कुछ भी सुंदर मिल सकता है या नहीं, और जब मुझे 'पोएटिक्स' मिली, बस कुछ ही पन्नों की एक किताब, मैं रोमांचित हो उठा था। इस आदमी के पास हृदय भी था। बाकी सब पुस्तकें तो उसने बुद्धि से लिखी हैं, लेकिन यह पुस्तक हृदय से लिखी गई है। निश्चित रूप से यह काव्यात्मकता के सार-सूत्र के संबंध में है–पोएटिक्स–और काव्यात्मकता का सार-सूत्र, प्रेम के सार-सूत्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता है। यह बुद्धि की नहीं बल्कि अंतःप्रज्ञा की सुवास है। मैं इस पुस्तक को पढ़ने की सलाह देता हूं।

पांचवीं: इधर बहुत सारी पुस्तकें मेरे सामने हैं और उनमें चुनाव करना बहुत मुश्किल है, लेकिन मैं रॉस की 'थ्री पिलर्स ऑफ झेन' को चुनता हूं। अनेक लोगों ने झेन के बारे में लिखा है–जिसमें सुजुकी भी शामिल है, जिसे कि झेन की सबसे ज्यादा समझ थी–लेकिन झेन के बारे में लिखी गई 'थ्री पिलर्स ऑफ झेन' सबसे सुंदर पुस्तक है। याद रहे, मेरा जोर है 'के बारे में'–क्योंकि रॉस को झेन का कोई अनुभव नहीं था। वस्तुतः इसलिए यह और भी अधिक आश्चर्यजनक हो जाता है: कि बिना किसी अनुभव के, सिर्फ पुस्तकों का अध्ययन और जापानी मठों की यात्रा से, उसने एक अति उत्तम कृति लिखी है।

रॉस से मैं केवल एक ही बात कहना चाहता हूं: झेन में तीन स्तंभ नहीं हैं, बल्कि एक भी स्तंभ नहीं है। झेन में कोई स्तंभ नहीं होते। वह कोई मंदिर नहीं है, वह प्योर नो-थिंग-नेस है, वह शुद्ध शून्यता है। झेन को खंभों की कोई जरूरत नहीं है। अगर वह इस पुस्तक को फिर से प्रकाशित करती है, तो उसे इसका नाम बदल देना चाहिए। 'थ्री पिलर्स ऑफ झेन' नाम अच्छा तो लगता है, लेकिन यह झेन की आत्मा के लिए सही नहीं है। लेकिन इस पुस्तक को एक बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से लिखा गया है। जो लोग झेन को बौद्धिक रूप से समझना चाहते हैं उन्हें इससे बेहतर पुस्तक नहीं मिल सकती है।

छठवीं: छठवें नंबर के लिए मेरी पसंद एक अदभुत आदमी की पुस्तक है। वे अपने आप को 'एम' नाम से पुकारते थे। मुझे उनका असली नाम मालूम है, लेकिन उन्होंने कभी भी किसी को अपना असली नाम मालूम नहीं होने दिया। उनका नाम है: महेंद्रनाथ। वे एक बंगाली थे, रामकृष्ण के शिष्य थे।

महेंद्रनाथ अनेक वर्षों तक रामकृष्ण के चरणों में बैठे, और अपने सदगुरु के आस-पास जो कुछ भी घटित हो रहा था, उसे लिखते रहे। पुस्तक का नाम है: 'दि गॉस्पेल ऑफ रामकृष्ण'–जिसे 'एम' ने लिखा है। वे कभी भी अपने नाम का खुलासा करना नहीं चाहते थे, वे अनाम बने रहना चाहते थे। यही एक सच्चे शिष्य का ढंग है। उन्होंने अपने आप को पूरी तरह से मिटा डाला था।

तुम्हें जान कर हैरानी होगी कि जिस दिन रामकृष्ण की मृत्यु हुई, उसी दिन 'एम' की भी मृत्यु हो गई। अब उनके लिए और अधिक जीने का कोई अर्थ नहीं रह गया था। मैं समझ सकता हूं... रामकृष्ण की मृत्यु के बाद 'एम' के लिए मरने की तुलना में जीना कहीं अधिक मुश्किल था। अपने सदगुरु के बिना जीने के बजाय मृत्यु कहीं अधिक आनंददायी थी।

सदगुरु तो अनेक हो चुके हैं, लेकिन 'एम' जैसा शिष्य कभी नहीं हुआ जिसने अपने सदगुरु के बारे में इतना सही-सही लिखा हो। वे कहीं भी बीच में नहीं आते हैं। उन्होंने ज्यूं का त्यूं लिखा है–अपने और रामकृष्ण के संबंध में नहीं, बल्कि केवल रामकृष्ण के संबंध में। सदगुरु के सान्निध्य में उनका अस्तित्व ही नहीं रहता। मैं इस व्यक्ति से और उनकी पुस्तक से, और खुद को मिटा देने के उनके अथक प्रयास से प्रेम करता हूं। 'एम' जैसा शिष्य मिलना दुर्लभ है। रामकृष्ण इस मामले में जीसस से कहीं अधिक भाग्यशाली थे। मुझे उनका असली नाम मालूम

है, क्योंकि मैंने बंगाल में यात्रा की है। रामकृष्ण पिछली सदी के अंत तक जीवित थे, इसलिए मैं जान सका कि उनका नाम 'महेंद्रनाथ' है।

सातवीं: अभी इसी सदी की शुरुआत में एक भारतीय रहस्यदर्शी थे। मुझे नहीं लगता कि वे संबुद्ध थे, क्योंकि उन्होंने तीन गलतियां कीं; वरना उनका साहित्य सुंदर है, शुद्ध काव्य है... लेकिन वे तीन गलतियां खयाल में रखनी चाहिए। रामतीर्थ जैसे व्यक्ति भी इतनी ओछी गलतियां कर सकते हैं।

रामतीर्थ अमरीका में थे। वे एक प्रतिभावान व्यक्ति थे और वहां उन्हें बहुत सम्मान मिला। जब वे भारत वापस आए तो उन्होंने सोचा कि सबसे पहले वाराणसी जाना चाहिए, जो हिंदू धर्म का गढ़ है, हिंदुओं का जेरुसलम–उनका मक्का है। उन्होंने सोचा कि अगर अमरीका के लोगों ने उनका इतना सम्मान किया है, तो वाराणसी के ब्राह्मण तो उनकी पूजा देवता की तरह करेंगे। वे गलत थे। जब वे वाराणसी में बोले तो एक ब्राह्मण बीच में उठ खड़ा हुआ और उसने कहा: "इससे पहले कि आप आगे बोलें, कृपया मेरे प्रश्न का उत्तर दें। आपको संस्कृत आती है?"

रामतीर्थ ब्रह्मज्ञान के संबंध में बोल रहे थे, और यह ब्राह्मण उनसे पूछता है कि "आपको संस्कृत आती है? अगर नहीं आती है तो आपको ब्रह्मज्ञान के संबंध में बोलने का कोई अधिकार नहीं है। जाओ और पहले संस्कृत पढ़ो।"

इसमें ब्राह्मण की कोई गलती नहीं है; सारी दुनिया में ब्राह्मण ऐसे ही होते हैं। मुझे आश्चर्य तो इस बात से होता है कि रामतीर्थ ने संस्कृत पढ़ना प्रारंभ कर दिया। इससे मुझे चोट लगी। उन्हें ब्राह्मण से कह देना चाहिए था, "चले जाओ, और अपने सारे वेदों और अपनी संस्कृत को भी साथ में ले जाओ! मुझे इनकी कोई परवाह नहीं है। मुझे सत्य का पता है, संस्कृत जानने के लिए मैं क्यों परेशान होऊं?"

यह सच है कि रामतीर्थ संस्कृत नहीं जानते थे, और इसकी कोई जरूरत भी नहीं है–लेकिन उन्हें जरूरत महसूस हुई। तो यह तो पहली बात है जिसे खयाल में रखा जाए। उनकी पुस्तकें बहुत काव्यात्मक, उत्साहवर्धक और आनंदपूर्ण हैं, लेकिन कहीं न कहीं इस व्यक्ति से चूक हो रही है।

दूसरी बात: जब उनकी पत्नी सुदूर पंजाब से उनसे मिलने आई, तो उन्होंने मिलने से इनकार कर दिया। उन्होंने कभी किसी स्त्री को इनकार नहीं किया था, तो उन्होंने अपनी ही पत्नी से मिलने से क्यों इनकार कर दिया? क्योंकि वे भयभीत थे। वे अभी भी आसक्त थे। मुझे उनके लिए खेद है: पत्नी को छोड़ कर चले गए थे, फिर भी भयभीत थे।

तीसरी बात: उन्होंने आत्महत्या कर ली–हालांकि हिंदू ऐसा नहीं कहते, वे इसे "गंगा में स्वयं को विलीन कर देना" कहते हैं। कुरूप बातों को भी तुम सुंदर नाम दे सकते हो।

इन तीन बातों को छोड़ दिया जाए तो रामतीर्थ की पुस्तकें मूल्यवान हैं, लेकिन अगर तुम इन तीन बातों को भूल जाओ तो तुम समझोगे जैसे कि वे एक संबुद्ध व्यक्ति थे। वे इस तरह बोलते थे जैसे कि वे एक संबुद्ध हों, लेकिन यह बस 'जैसे कि' ही है।

आठवीं: जी. ई. मूर की 'प्रिंसिपिया ईथिका।' यह पुस्तक मुझे प्रिय है। तर्कशास्त्र का यह एक बहुत अच्छा अभ्यास है। उसने दो सौ से भी अधिक पेज केवल एक ही प्रश्न पर खर्च कर दिए कि 'शुभ क्या है?'–और फिर वह इस निष्कर्ष पर आता है कि 'शुभ' अपरिभाष्य है। अदभुत! लेकिन उसने अपना काम पूरा किया, और वह किसी

निष्कर्ष पर ऐसे ही नहीं पहुंच गया है जैसे कि संत अक्सर पहुंच जाते हैं। वह एक दर्शनशास्त्री था। वह धीरे-धीरे, एक-एक कदम आगे बढ़ता गया, लेकिन उसी निष्कर्ष पर पहुंचा जहां संत पहुंचते हैं।

'शुभ' अपरिभाष्य है, वैसे ही जैसे सौंदर्य, जैसे परमात्मा अपरिभाष्य है। असल में, जो कुछ भी मूल्यवान है वह अपरिभाष्य है। इसे ध्यान में रखें: यदि किसी भी चीज की परिभाषा की जा सकती हो तो वह मूल्यहीन है। जब तक कि तुम अपरिभाष्य पर नहीं पहुंच जाते, तब तक तुम किसी भी सार्थक चीज पर नहीं पहुंचते हो।

नौवीं... मैंने 'रहीम के दोहे' अपनी सूची से बाहर रखे थे, लेकिन अब नहीं रख सकता। वे मुसलमान थे, लेकिन उन्होंने दोहे हिंदी में लिखे हैं, इसलिए मुसलमान उन्हें पसंद नहीं करते, वे उनकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देते। हिंदू उन्हें पसंद नहीं करते, क्योंकि वे मुसलमान थे। शायद मैं ही वह अकेला आदमी हूं जो उनका सम्मान करता है। उनका पूरा नाम है, रहीम खानखाना। उनके दोहों में वही ऊंचाई और वही गहराई है जो कि कबीर, मीरा, सहजो या चैतन्य में है। फिर उन्होंने हिंदी में क्यों लिखा? वे मुसलमान थे तो वे उर्दू में लिख सकते थे, और उर्दू हिंदी से कहीं ज्यादा सुंदर भाषा है। लेकिन उन्होंने जान कर उसे चुना; क्योंकि वे मुस्लिम कट्टरता से संघर्ष करना चाहते थे।

दसवीं: मिर्जा गालिब, उर्दू के महानतम कवि–और न केवल महानतम उर्दू कवि, बल्कि दुनिया की किसी भी भाषा में शायद ही उनके जैसा कोई कवि होगा जिससे उनकी तुलना की जा सकती हो। उनकी पुस्तक का नाम है: 'दीवान।' 'दीवान' का सीधा सा अर्थ है कविताओं का संग्रह। उन्हें पढ़ना कठिन है, लेकिन अगर तुम थोड़ा प्रयास कर सको तो बहुत कुछ पाओगे। ऐसा लगता है जैसे कि हर पंक्ति में पूरी पुस्तक समाई हुई है। और यही उर्दू की सुंदरता है। मैं कहता हूं कि दूसरी कोई भी भाषा इतने कम शब्दों में इतना अधिक अभिव्यक्त नहीं कर सकती है। केवल दो वाक्य ही पूरी पुस्तक को अपने भीतर समेट लेने के लिए पर्याप्त हैं। यह जादूई है। मिर्जा गालिब उस भाषा के जादूगर हैं।

ग्याहरवीं और अंतिम: एलन वाट्स की 'दि बुक।' मैंने इसे बचा कर रखा था। एलन वाट्स कोई संबुद्ध नहीं था, लेकिन वह एक दिन संबुद्ध हो सकता है। वह काफी करीब पहुंच गया है। 'दि बुक' अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह उसकी बाइबिल है; यह उसे झेन सदगुरुओं, झेन ग्रंथों से मिले अनुभव का सार-तत्व है। और वह एक अत्यंत बुद्धिमान आदमी है; वह एक शराबी भी था। उसकी बुद्धिमत्ता और शराब दोनों ने साथ मिल कर वास्तव में एक रस से भरी हुई पुस्तक की रचना की। मैंने 'दि बुक' को प्रेम किया है और इसे अंत के लिए रख छोड़ा था।

जीसस का वचन तुम्हें याद है: 'धन्य हैं वे जो अंतिम होने को राजी हैं?' हां, यह पुस्तक धन्य है। मैं इसे आशीष देता हूं, और सत्रों की इस श्रृंखला को मैं एलन वाट्स की स्मृति में समर्पित करता हूं।